

1. बरसते बादल

कवि - सुमित्रानंदन पंत

उन्मुखीकरण प्रश्नोत्तर ।

1. मीठे गीत कौन गाती है ?

उ. मीठे गीत कोयल गाती है ।

2. प्यासी धरती पानी किससे माँगती है ?

उ. प्यासी धरती मेघों से (बादलों) से पानी माँगती है ।

3. बादल प्रकृति की शोभा बढ़ाते हैं । कैसे ?

उ. बादलों से वर्षा होती है । वर्षा के जल से प्रकृति के पेड़ - पौधे हरे - भरे रहते हैं।

धरती पर जीवन दिखाई देता है । इस प्रकार बादल प्रकृति की शोभा बढ़ाते हैं ।

कवि परिचय ।

सुमित्रानंदन पंत प्रकृति के बेज़ोड़ कवि माने जाते हैं। उनका जन्म सन् 1900 में

अल्मोड़ा में हुआ। वीणा, पल्लव, गुंजन, युगांत, चिदम्बरा आदि प्रमुख रचनाएँ हैं।

आपको साहित्य अकादमी, सोवियत रूस और ज्ञानपीठ पुरस्कार दिया गया। सन्

1977 में आपका निधन हुआ। कविता का उद्देश्य। प्राकृतिक सौन्दर्य बोध कराना,

प्रकृति संरक्षण की प्रेरणा इस कविता का मुख्य उद्देश्य है।

पर्यायवाची शब्द ।

- | | | | | | | | | |
|----|------|---|---------|----------|--------|---------|---------|-------|
| 1. | तरु | - | पेड़, | वृक्ष, | पादप, | वट | | |
| 2. | मेघ | - | बादल, | घन, | जलद | | | |
| 3. | उर | - | हृदय, | अंतःकरण, | दिल, | मन | | |
| 4. | तम | - | अंधकार, | तमस, | अंधेरा | | | |
| 5. | गगन | - | आकाश, | नभ, | आसमान | | | |
| 6. | धरती | - | भू | भूमि, | धरा, | क्षिति, | पृथ्वी, | वसुधा |
| 7. | वारि | - | वर्षा, | बरसात, | पावस, | बारिश | | |

शब्दार्थ ।

- | | | | |
|----|----------------------------|-----|---|
| 1. | दादुर - मेंढ़क | 9. | रजकण - मिट्टी, धूल |
| 2. | झिल्ली - झींगुर | 10. | इन्द्रधनुष - इन्द्रचाप |
| 3. | सोनबालक - जलपक्षी | 11. | मन भावन - मन को लुभाने वाला । |
| 4. | आर्द - भीगा हुआ । | 12. | झरना - गिरना / प्रपात |
| 5. | क्रङ्दन - रोना | 13. | घुमड़कर - घिर कर (घेर कर) |
| 6. | धारा - प्रवाह निरन्तर बहना | 14. | मोर - मयूर |
| 7. | तृण - तिनका | 15. | पुलकावलि - प्रेम, हर्षजन्य रोमांच, हर्ष विहवल |

8. चातक - एक पक्षी जो स्वाति नक्षत्र के जल को छोड़कर अन्य कोई जल ग्रहण नहीं करता ।

प्रश्नोत्तर ।

1. मेघ, बिजली और बूँदों का वर्णन यहाँ कैसे किया गया है ?

उ. मेघ, धिर कर, घुमड़कर गर्जन करते हैं । बादलों के हृदय के बीच से बिजली चमकती है और वर्षा की बूँदें धरती एवं जन मानस के हृदय को भिगो देती है ।

2. प्रकृति की कौन - सी चीजें मन को छू लेती है ?

उ. वर्षा की झरती बूँदों के रिमझिम स्वर मन को छू लेते हैं, रोम - रोम सिहर उठता है, वर्षा की धाराएँ धरती के कण - कण को पुलकित कर देती है ।

3. तृण - तृण की प्रसन्नता का क्या भाव है ?

उ. वर्षा की बूँदों से धरती का कण - कण भीग जाता है । तृण, लता पेड़ - पौधे वर्षा के जल से नया जीवन पाकर प्रसन्न हो उठते हैं । वर्षा ऋतु में जल की बूँदें धरती पर गिरती है तो हर प्राणी, (मानव, पशु - पक्षी) सभी में प्रसन्नता का संचार होता है ।

(अर्थग्राहिता - प्रतिक्रिया)

प्रश्नों के उत्तर दीजिए ।

1. धरती की शोभा का प्रमुख कार्य वर्षा है । इस पर अपने विचार बताइए ।
- उ. वर्षा ऋतु सबकी प्रिय ऋतु है । वर्षा के समय प्रकृति की सुन्दरता देखने लायक होती है । धरती का कण - कण वर्षा की बूँदों से भीगा होता है । चारों तरफ हरियाली होती है । पेड़ - पौधे, पशु - पक्षी, मनुष्य सभी का रोम - रोम खुशी से झूम उठता है । प्रकृति में नया जीवन, उत्साह, खुशी दिखाई देती है ।
2. घने बादलों का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए ।
- उ. वर्षा काल में आकाश में काले - काले घने बादल छा जाते हैं । घमड़ - घुमड़ कर गर्जन करते हुए बरसते बादल प्रकृति के कण - कण को पुलकित करते हैं । नए जीवन का संचार होता है । घने बादल वर्षा कर प्रकृति को हरा - भरा करते हैं । नया जीवन देते हैं ।

आ) उचित क्रम में लिखिए ।

- उ. 1. झम - झम - झम - झम मेघ बरसते हैं सावन के ।
2. घुमड़ - घुमड़ गिर मेघ गगन में भरते गर्जन ।
3. धाराओं पर धाराएँ झरती धरती पर ।

इ) नीचे दिए गए भाव की पंक्तियाँ लिखिए ।

1. बादलों के घोर अंधकार के बीच बिजली चमक रही है और मन दिन में ही सपने देखने लगा ।
- उ. चम चम बिजलो चमक रहीं रे उर में घन के,
थम थम दिन के तम में सपने जगते मन के ।
2. मिट्टी के कण - कण से कोमल अंकूर फूट रहे हैं ।
- उ. रज के कण - कण से तृण - तृण को पुलकावलि थर ।
3. कवि चाहता है कि जीवन में सावन बार - बार आयें और सब मिलकर झूलों में झूलें ।
- उ. इन्द्रधनुष के झूलें में झूलें मिल सब जन,
फिर - फिर आये जीवन में सावन मन भावन ।

ई) पद्यांश पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए ।

अभिव्यक्ति सृजनात्मक ।

अ) 1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर तीन - चार पंक्तियों में लिखिए ।

1. वर्षा सभी प्राणियों के लिए जीवन का आधार है । कैसे ?
 - उ. वर्षा (जल) प्रकृति का जीवन है । वर्षा के जल से धरती पर पेड़ - पौधे, प्राणी जीवित रहते हैं । जल के बिना धरती पर जीवन नहीं होगा । वर्षा के कारण धरती

हरी - भरी, फल - फूलों से भरपूर रहती हैं। हर प्राणी को भोजन मिलता है। नदी, तालाब, जल से भर जाते हैं। इस प्रकार वर्षा सभी प्राणियों के लिए जीवन का आधार है।

2. वर्षा ऋतु पर प्राकृतिक सौन्दर्य पर अपने विचार लिखिए।

उ. वर्षा ऋतु में प्रकृति हरी - भरी होती है। पेड़ - पौधे, फल - फूलों से लदे रहते हैं।

आकाश में गरजते बादल एवं वर्षा की बूँदें धरती के प्राणी में नई आशा और खुशी का संचार करती है।

3. 'बरसते बादल' कविता में प्रकृति का सुन्दर चित्रण है। उसे अपने शब्दों में लिखिए।

उ. 'बरसते बादल' कविता के कवि सुमित्रानंदन पंत जी हैं। आप प्रकृति के बेज़ोड़

कवि माने जाते हैं। प्रस्तुत कविता में कवि ने वर्षा ऋतु की प्राकृतिक सुन्दरता का मनोहर वर्णन किया है। वर्षा ऋतु सबकी प्रिय ऋतु है। पेड़ - पौधे, पशु - पक्षी,

मनुष्य और यहाँ तक की धरती भी खुशी से झूम उठती है। वर्षा ऋतु में आकाश में

घुमड़-घुमड़ कर गरजते एवं बरसते बादल अंधकार के बीच आशा का प्रकाश उत्पन्न करते हैं। धरती का कण - कण वर्षा के जल से भीग जाता है। वर्षा की फुहार में

प्रकृति एवं प्राणी का रोम - रोम सिहर उठता है। वर्षा ऋतु में पुलकित मन इन्द्र

धनुषी रंग से प्रेरित होकर गीत गाते हैं कि जीवन में बार - बार सावन का मन

भावन महीना आए।

प्रकृति सौन्दर्य पर एक छोटी - सी कविता लिखिए ।

परियोजना

ई) फिर - फिर आए जीवन में सावन मन भावन ऐसा क्यों कहा गया होगा ? स्पष्ट कीजिए ।

उ. वर्षा ऋतु के चौमासो में सावन का महीना प्रमुख होता है। इस महीने में वर्षा की निरन्तर फुहारे, बौछारे झरती रहती है। वर्षा की बूँदे, गरजते घुमड़ते बादल, बादल के बीच चमकती बिजली धरती के कण - कण में नया जीवन भर देते हैं। धरती के प्राणी - प्राणी में प्रसन्नता की, आशा के भाव जागृत होते हैं। इसलिए कवि कहते हैं कि जीवन में बार - बार सावन मनभावन का आगमन हो जिससे प्रकृति, प्राणी में नई आशा का संचार हो।

भाषा की बात ।

आ) कोष्ठक में दी गयी सूचना पढ़िए और उसके अनुसार कीजिए ।

पर्याय शब्द लिखिए वाक्य प्रयोग कीजिए ।

क) अ. तरु - पेड़, वृक्ष, विटप, पादप

वा. तरु - हवा में झूमती तरु की डालियाँ नृत्य करती - सी दिखाइ देती हैं ।

आ) गगन - आकाश, नभ, व्योम, अंतरिक्ष

वा. गगन - चन्द्रमा की किरणों से चमक रहा था ।

ई) घन - बादल, मेघ, जलद

वा. वर्षा ऋतु में गगन में धन घुमड़ - घुमड़ कर गर्जन कर रहे थे ।

तत्सम रूप लिखिए ।

ख) 1. सावन - श्रावण 2. सप्तना - रव्वज्ञ 3. सूरज - सूर्य

ग) तदभव रूप लिखिए ।

1. गण - गन - जन 2. वारि - बारिश 3. चन्द्र - चाँद

घ) पुनरुक्ति शब्द समझिए ।

1. चम - चम, तुण - तृण, फिर- फिर

आ) इन्हें समझिए और सूचना के अनुसार कीजिए ।

1. धाराओं पर धाराएँ झरती धरती पर (अन्तर स्पष्ट कीजिए ।)

उ. निरन्तर वर्षा का गिरना एवं वर्षा का जल धरती पर बहना ।

2. इन्द्र धनुष के झूले में झूले मिल सब जन । (अन्तर स्पष्ट कीजिए ।)

उ. झूले - पालना और झूले - क्रिया रूप, ऊँचाई की ओर बढ़े ।

3. बादल बरसते हैं । (रेखांकित शब्द का पद परिचय दीजिए ।)

उ. बादल - संज्ञा (जातिवाचक / द्रव्यवाचक), बहुवचन, वर्तमान काल, पुलिंग

4. मन को भाने वाला । (एक शब्द में लिखिए ।)

उ. मन भावन

5. पेड़ - पौधे, पशु - पक्षी (समास पहचानो ।)

उ.1. पेड़ और पौधे

2. पशु और पक्षी (द्वंद्व समास)

व्याकरण

अलंकार

परिभाषा : अलंकार शब्द का अर्थ है गहना, आभूषण। मानव जैसे सजते

संवरने के लिए गहने, आभूषणों का प्रयोग करता है उसी प्रकार कवि गण भी
कविता को सजाने संवारने के लिए अलंकारों का प्रयोग करते हैं।

अलंकार के दो भेद किए जा सकते हैं।

1. शब्दालंकार - अर्थात् शब्दों में चमत्कार या सौन्दर्य लाकर।

(शब्दों के प्रयोग के कारण चमत्कार)

2. अर्थालंकार - अर्थात् शब्दों के अर्थ में चमत्कार या सौन्दर्य लाकर।

(कथन विशेष में सौन्दर्य, अर्थ की विशिष्टता के कारण।)

उदाः:

शब्दालंकार - शब्दों का चमत्कार पूर्ण प्रयोग करके अभिव्यक्ति को शब्द के स्तर पर सुन्दर बनाया जाता है। उदाः “प्रतिभट कटक कटीले केते काटि - काटि

कालिका - सी किलकि कलेऊ देती काल को।”

इस पंक्ति में ‘क’ वर्ण के शब्दों का बार - बार प्रयोग से शब्द के सौन्दर्य में चमत्कार उत्पन्न हुआ है।

अर्थालंकार - जब काव्य पंक्ति में शब्दों का इस प्रकार प्रयोग किया गया हो जिससे अर्थ के स्तर पर सौन्दर्य एवं चमत्कार उत्पन्न करके अभिव्यक्ति को प्रभाव शाली बनाया गया है ।

जैसे : - काली घटा का घमंड घटा वाक्य में शब्द दो बार घटा शब्द प्रयुक्त हुआ है ।
पर दोनों के अर्थ में भिन्नता है । काली घटा का अर्थ है काली बदली । दूसरी बार घमंड घटा में घटा का अर्थ है घटना या कम होना । इस प्रकार एक शब्द का दो भिन्नअर्थों में प्रयोग से उक्ति में सौन्दर्य आ गया है ।

शब्दालंकार के भेद :-

1. अनुप्रास अलंकार - जहाँ एक ही वर्ण की बार - बार आवृत्ति हो वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है ।

जैसे : - 1. कोमल कलाप कोकिल कमनीय कूकती थी । (क वर्ण की आवृत्ति)
2. तरनि तनुजा तट तरुवर बहु छाए । (त वर्ण की आवृत्ति हुई है ।)

2. यमक अलंकार - जब एक ही शब्द एक से अधिक बार प्रयुक्त हो तथा समान शब्दों के अर्थ भिन्न हों तो वहाँ यमक अलंकार होता है ।

जैसे : - कर का मनका डारि दे मन का मन का मन फेर
एक मनका का अर्थ - माला की दाना (मोती)

दूसरा अर्थ - मन का / हृदय का

2. तीन बेर खाती थी वे तीन बेर खाती थी ।

एक का अर्थ तीन बार है । (दूसरे तीन बेर का अर्थ है तीन बेर (फल)

कनक - कनक तै सोगुनी - कनक का अर्थ सोना और धतुरा है ।

3. श्लेष अलंकार - इस का शाब्दिक अर्थ है । चिपका हुआ अर्थात् जहाँ एक बार प्रयोग होने पर भी किसी शब्द से दो यो दो से अधिक अर्थ निकलें । उसे श्लेष अलंकार कहते हैं ।

उदाः “नव जीवन दो घन श्याम हमें ”

यहाँ जीवन तथा घन श्याम शब्द है ।

जीवन का अर्थ - पानी और जीवन के लिए आया है । घनश्याम का अर्थ बादल, श्रीकृष्ण के लिए आया है ।

अर्थालंकार के भेद :

1. उपमा अलंकार - उपमा का अर्थ है दो वस्तुओं या व्यक्तियों की समानता दिखाना । किसी वस्तु की तुलना किसी प्रसिद्ध व्यक्ति या वस्तु से की जाती है उसे उपमालंकार कहते हैं ।

मखमल से झूल पड़े, हाथी सा टीला ।

1. हाथी सा टीला (टीले को हाथी के समान बताया गया है।)

2. फूल सी कोमल बच्ची हुई राख की ढेरी।

बच्ची को फूल के समान (नाजूक) कोमल बताया गया है।

2. रूपक अलंकार - किन्हीं दो वस्तुओं या व्यक्तियों की किसी अन्य वस्तु या

व्यक्ति से तुलना की जाती है परन्तु दोनों एकाकार हो जाती है अर्थात् एक

वस्तु या व्यक्ति को दूसरी वस्तु या व्यक्ति बना दिया जाता है।

चरण कमल - अर्थात् चरण ही कमल हैं।

मुख चन्द्र मुख ही चन्द्र है।

3. अतिश्योक्ति अलंकार - अतिश्योक्ति / अतिशय उक्ति अर्थात्

विषय का बहुत बढ़ा चढ़ा कर वर्णन किया जाता है।

उदाहरण: देख लो साकेत नगरी यहीं, स्वर्ग से मिलने गगन में जा रही। यहाँ साकेत नगरी का अत्यन्त

बढ़ा - चढ़ा कर वर्णन किया गया है। साकेत नगरी की ऊँचाई के लिए स्वर्ग से मिलने जा रही है।

यह बढ़ा - चढ़ा कर कही गई।

2. गढ़ महोबे में हैं एक चमचा,

जिसमें नौ मन दाल समाय।

यहाँ चमचे का अत्यन्त बढ़ा - चढ़ा कर वर्णन किया गया।

2. ईदगाह (कहानी)

लेखक - प्रेमचन्द

प्रस्तावनात्मक प्रश्नोत्तर ।

1. पथिकों को जलती दुपहर में सुख व आराम किससे मिलता है ?
उ. पथिकों को जलती दुपहर में सुख व आराम पेड़ों से मिलता है

2. खुशबू भरे फूल हमें क्या देते हैं ?
उ. खुशबू भरे फूल हमें नव फूलों की माला देते हैं ।

3. 'हम भी तो कुछ देना सीखे' - कवि ने ऐसा क्यों कहा होगा ?
उ. प्रकृति में स्थित पेड़ - पौधे, नदी - ताल, पर्वत आदि किसी न किसी प्रकार निस्वार्थ भावना से प्राणी मात्र को कुछ न कुछ देते रहते हैं । इसलिए मनुष्य को भी निस्वार्थ भावना से सभी की मदद करते हुए कुछ देना चाहिए । इसलिए कवि ने ऐसा कहा होगा कि 'हम भी तो कुछ देना सीखे' ।

प्रश्नोत्तर ।

1. ईद के दिन का चित्रण अपने शब्दों में कीजिए ?
उ. रमजान के पूरे तीस रोजा के बाद ईद आयी । ईद का दिन बहुत ही मनोहर और सुबह सुहावनी थी । वृक्षों पर कुछ अजीब हरियाली थी । आसमान पर लालिमा थी । ईद के दिन का सूर्य बहुत ही प्यारा और शीतल था । ऐसा लग रहा था मानों संपूर्ण प्रकृति ही संसार को ईद की बधाई दे रही हो ।

2. हामिद गरीब है फिर भी वह ईद के दिन अन्य लड़कों से अधिक प्रसन्न है क्यों ?

- उ. त्यौहारों से खुशियाँ बढ़ती हैं। त्यौहार जीवन में नयी उमंग भर देती हैं। इसलिए अमीर - गरीब सभी त्यौहारों के आने का बड़ा बेसबरी से इंतजार करते हैं। त्यौहारों में बड़ों से कहाँ अधिक बच्चे उत्साह और आनंद दिखाते हैं। सभी बच्चे ईद वाले दिन अपने भाई, पिता के साथ ईदगाह जा रहे थे। वहाँ हामिद के पिता न होते हुए भी मित्रों के साथ ईदगाह जाने के लिए हामिद अन्य लड़कों से अधिक प्रसन्न लग रहा था। पिता की मृत्यु के बाद अकेले ईदगाह जाने की उतावली में वह अधिक प्रसन्न लग रहा था।

3. हामिद के अंदर प्रकाश है, बाहर आशा की 'किरण' ऐसा लेखक ने क्यों कहा होगा ?

- उ. हामिद एक गरीब बालक था। उसके माता - पिता नहीं थे। वह अपनी दादी के साथ रहता था। ईद के दिन उसके घर में एक दाना तक नहीं है। उसकी बूढ़ी दादी उसे अकेले ईदगाह नहीं भेजना चाहती थी। अभागा होने पर भी वह अपनी दादी से कहता है कि तुम डरना नहीं अस्मा, मैं सबसे पहले आऊँगा। इस प्रकार अपनी दादी में आशा जगाता है। इसलिए लेखक ने ऐसा कहा कि हामिद के अंदर प्रकाश है, बाहर आशा की 'किरण' क्योंकि गरीब होते हुए भी ईद का आनंद उठाना चाहता है।

4. हामिद चिमटा क्यों खरीदना चाहता था ?

- उ. हामिद ने ईदगाह के मेले में लोहे की चीजों की दुकान में चिमटा देखा। हामिद की दादी के पास चिमटा नहीं था। जब दादी तवे से राटियाँ उतारती तो उसके हाथ जल जाते थे और यह हामिद से देखा नहीं जाता था। अगर चिमटा ले जाकर दादी को देगा। तो वह प्रसन्न हो जाएगी और उनकी ऊँगलियाँ कभी नहीं जलेंगी। इस

प्रकार अपनी दादी अम्मा की ऊँगलियाँ जलने से बचाने के लिए हामिद चिमटा खरीदना चाहता था ।

5. हामिद के हृदयस्पर्शी विचारों के प्रति दादी अम्मा की भावनाएँ कैसी थी ?

- उ. हामिद के हृदयस्पर्शी विचारों के प्रति दादी अम्मा की भावनाएँ उदार थी । पहले तो वह गुस्से में आती है और थोड़ी देर बाद उसका सारा गुस्सा स्नेह में बदल जाता है। वह सोचने लगती है कि बच्चे में कितना त्याग, कितना सद्भाव और कितना विवेक है। दूसरों को खिलौने लेते और मिठाई खाते देखकर उसका मन कितना ललचाया होगा । वहाँ भी बूढ़ी दादी की याद बनी रही । उसका मन गदगद हो गया और वह ऑचल फैलाकर हामिद को दुआएँ देती रही ।

(अर्थग्राह्यता - प्रतिक्रिया)

प्रश्नों के उत्तर दीजिए ।

1. 'ईदगाह' कहानी के कहानीकार कौन है ? उनकी रचनाओं की विशेषता क्या है ?

उ.

'ईदगाह' कहानी के कहानीकार 'प्रेमचंद' जी है। इनकी रचनाओं की मुख्य विशेषता यह है कि इनकी रचनाओं में आम भारतीय जनमानस की तस्वीर उभर कर सामने आती है। समाज में व्याप्त शोषण और भ्रष्टाचार को उजागर करने का प्रयत्न इनकी रचनाओं मिलता है। इनकी रचनाएँ सामाजिक कुरीतियों एवं रुढ़ियों पर आधात करती हैं। समाज के मजदूर और किसान वर्ग की पोड़ित अवस्था का हृदयस्पर्शी वर्णन मिलता है। इन्होंने अपनी रचनाओं में ग्रामीण परिवेश के साथ मानव मन की कमज़ोरी और कर्तव्य पालन के आदर्श को प्रस्तुत किया है। इनके चरित्र सजीव लगते हैं।

2. बालक प्रायः अलग - अलग स्वभाव के होते हैं। कहानी के आधार पर बताइए कि हामिद का स्वभाव कैसा है ?

उ. बालक प्रायः अलग - अलग स्वभाव के होते हैं। कहानी के आधार पर बताया जाए तो हामिद का स्वभाव दूसरे बालकों से भिन्न है। वह एक कोमल स्वभाव का बालक है। गरीब है किंतु निराशावादी नहीं है। वह निड़र है। वह दूसरों के दुःख दर्द को समझता है। निस्वार्थी स्वभाव का है। वह एक त्यागी, विवेकशील और सद्भावना से युक्त बालक है। उसके मन में बड़ों के प्रति आदर और सम्मान है।

भाष की बात

(अ) कोष्ठक में दी गयी सूचना पढ़िए और उसके अनुसार कीजिए।

1. ईद, प्रभात, वृक्ष (वाक्य प्रयोग कीजिए। पर्याय शब्द लिखिए।)

ईद - मुसलमानों का पवित्र त्यौहार ईद है (पर्याय - त्यौहार, पर्व)

प्रभात - प्रभात होते ही पक्षी चहकने लगते हैं। (पर्याय - प्रातःकाल, सबेरा)

वृक्ष - वृक्ष की डाल पर कोयल है। (पर्याय - पेड़, तरु)

2. अपराधी, प्रसन्न, मजबूत (विलोम शब्द लिखिए। वाक्य प्रयोग कीजिए)

अपराधी ϵ निरपराधी

वाक्य : - पुलिस आजकल अपराधी को छोड़कर निरपराधी को पकड़ रही है।

प्रसन्न ϵ अप्रसन्न / खिन्न

बच्चे पास रहने पर माँ प्रसन्न रहती है और दूर हो जाने पर खिन्न हो जाती है।

मजबूत ϵ कमजोर

पुरानी इमारते मजबूत थे लेकिन नयी कमजोर हैं।

3. मिठाई, चिमटा, सड़के (वचन बदलिए। वाक्य प्रयोग कीजिए)

मिठाई - मिठाइयाँ

बच्चों को मिठाइयाँ पसंद होती है।

चिमटा - चिमटे

वाक्य : - लुहार लोहें से चिमटे बनाते हैं।

सड़क - सड़के

वाक्य : - शहर में सड़कें लम्बी होती हैं।

(आ) सूचना पढ़िए और उसके अनुसार कीजिए।

1. बेसमझ, सद्भाव, निडर (उपसर्ग पहचानिए)

बेसमझ - बे, सद्भाव - सद्, निडर - नि

2. दुकानदार, भड़कीला, गरीबी (प्रत्यय पहचानिए)

दुकानदार - दार भड़कीला - ईला गरीबी - ई

3. मीठा, प्रसन्न, बूढ़ा (भाववाचक संज्ञा में बदलिए)

मीठा - मिठास, प्रसन्न - प्रसन्नता बूढ़ा - बुढ़ापा

(इ) इन्हें समझिए

1. हामिद के बाजार से आते हो अमीना ने उसे छाती से लगा लिया।

2. हामिद ने कहा कि घर की देखरेख दादी ने की।

(इ) पाठ में आए मुहावरे पहचानिए और अर्थ समझिए

1. परलोक सिधार जाना - मृत्यु हो जाना
2. दिल गचोटना - दुःखी होना
3. दिल बैठ जाना - डर जाना
4. कलेजा मजबूत करना - साहस करना
5. धावा बोल देना - आक्रमण करना

1. रमजान के पूरे तीस रोजों के बाद ईद आयी ।

रमजान के पूरे तीस रोजों के बाद ईद आयी है।

रमजान के पूरे तीस रोजों के बाद ईद आयो थी ।

रमजान के पूरे तीस रोजों के बाद ईद आयी होगी ।

रमजान के पूरे तीस रोजों के बाद ईद आ रही थी ।

रमजान के पूरे तीस रोजे होते तो ईद आती ।

हाँ या नहीं में उत्तर दीजिए ।

1. हामिद के पास पचास पैसे थे ? (नहीं)
2. अमीना हामिद की मौसी थी । (नहीं)
3. मोहसिन भिश्ती खरीदता है । (नहीं)
4. हामिद खिलौने खरीदता है । (नहीं)

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए ।

1. अमीना का क्रोध तुरंत स्नेह में बदल गया ।
2. कीमत सुनकर हामिद का दिल बैठ गया ।

3. हामिद चिमटा लाया ।
4. महमूद के पास बारह पैसे थे ।
अनुच्छेद पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए ।
(अनुच्छेद पृष्ठ संख्या 8 से)

1. माता - पिता की सेवा में कौन तत्पर था ?
उ. माता - पिता की सेवा में श्रवण कुमार तत्पर था ।
2. श्रवण कुमार के बारे में आप क्या जानते हैं ?
उ. श्रवण कुमार एक अंधे माता - पिता का पुत्र था । वह हमेशा माता - पिता की सेवा में लगा रहता था ।
3. रेखांकित शब्द का संधि विच्छेद कीजिए ।
१. सदैव = सदा + एव - वृद्धि संधि
4. अनुच्छेद के लिए उचित शीर्षक दीजिए ।
उ. “श्रवण की मातृ - पितृ भक्ति ”

ईदगाह (सारांश)

लेखक परिचय : ‘ईदगाह’ कहानी के कहानीकार ‘प्रेमचन्द’ जी है । ये हिन्दी के प्रसिद्ध कहानीकार और उपन्यासकार थे । उनका असली नाम धनपतराय था । इनकी प्रसिद्ध रचनाएँ हैं - गोदान, निर्मला, कर्मभूमि मंगलसूत्र आदि हैं ।

बाल - मनोविज्ञान पर आधारित ईदगाह प्रेमचंद की उत्कृष्ट रचना है । इसमें मानवीय संवेदना और जीवनगत मूल्यों के तथाओं को जोड़ा गया है । इस कहानी में दादी और पोते का मार्मिक प्रेम दर्शाया गया है ।

सारांश - ईदगाह कहानी मुसलमानों के पवित्र त्यौहार ईद पर आधारित है। पवित्र माह रमजान के पूरे तीस रोजों के बाद ईद आई / ईद पर मुसलमान परिवारों में विशेषकर बच्चों में त्यौहार का उत्साह बहुत अधिक दिखाई देता है। सभी बहुत प्रसन्न हैं। हामिद सबसे ज्यादा प्रसन्न है। वह चार - पाँच साल का गरीब सूरत, दुबला - पतला लड़का है। जिसके माता - पिता नहीं हैं। हामिद अब अपनी बूढ़ी दादी अमीना के साथ रहता है। ईद के दिन दादी दुःखी है कि उसके घर में खाने को एक दाना तक नहीं है और हामिद मित्रों के साथ ईदगाह जाने वाला भी कोई नहीं है। वह अकेला मित्रों के साथ जाना चाहता है इसलिए दादी डरती है लेकिन वह अपनी दादी को धैर्य देता है कि वह जल्द ही लौटेगा।

बड़े - बूढ़ों के साथ - साथ बालकों का दल भी ईदगाह की ओर बढ़ रहा है। ईदगाह के मेले में खूब खरीददारी कर रहे हैं। हामिद के मित्रों के खर्च करने के लिए काफी पैसे हैं। लेकिन हामिद के पास केवल तीन पैसे हैं। मेले में बच्चों को आकर्षित करने वाली अनेक चीजें हैं। सभी मिठाई खा रहे हैं। खिलौने खरीद रहे हैं। आनंद उठा रहे हैं परन्तु हामिद कुछ चीजों के दाम पूछकर गुण - दोष विचार कर वहाँ से आगे बढ़ता रहता है। (लेखकहस प्रकार हामिद की पारिवारिक दशा का बोध करा रहे हैं।) हामिद बहुत जागरुक व्यक्तित्व वाला लड़का है, वह जानता है कि उसकी दादी को चिमटे की बहुत जरूरत है इसलिए वह मेले में फिजूल खर्च ना करके चिमटा लेना उचित समझता है। हामिद जब चिमटा लेकर आता है तो उसकी दादी बहुत गुस्सा होती है। तब वह कहता है कि तुम्हारी उँगलिया तवे से जल जाती थी इसलिए मैं इसे लाया हूँ। यह सुनकर दादी अमीना रोने लगती है और दामन फैलाकर हामिद को दुआएँ देने लगती है।

इस प्रकार लेखक ने हामिद के चरित्र द्वारा बच्चों के भोलेपन को दर्शाते हुए जिम्मेदारी, कर्तव्य आदि भावनाओं को उजागर किया है। उन वर्गों का वर्णन है जो अपनी वास्तविक स्थिति को जानते हुए अपने सीमित साधनों से सही मार्ग चुनकर अपने समाज का निर्माण करते हैं।

छंद

परिभाषा : - गेय, लय और तालबद्ध कविता का नाम छंद है।

इसरी रचना वर्ण अथवा मात्राओं की गणना के आधार पर की जाती है।

छंद के अंग : छंद के आठ अंग हैं।

- | | | | |
|----------------|-----------|---------|------------------------|
| 1. चरण अथवा पद | 2. मात्रा | 3. वर्ण | 4. वृत्त (लघु और गुरु) |
| 5. यण और क्रम | 6. यति | 7. तुक | |

1. चरण : छंद में चार चरण होते हैं। इन्हें पद या पाद भी कहते हैं। छंद में चरण या पंक्तियों की संख्या अलग - अलग होती है। दोहा - सौरठा दो - दो पंक्तियाँ, सवैया और कवित्व में चार - चार और छप्य तथा कुँडलियों में छः पंक्तियाँ होती हैं।

1. चरण दो प्रकार के होते हैं। 1. सम चरण (प्रथम एवं तृतीय चरण)

2. विषम चरण (द्वितीय चरण और चतुर्थ चरण)

2. मात्रा - वर्ण में लगने वाले समय का नाम मात्रा है। (ह्रस्व स्वर में एक मात्रा (।) दीर्घ स्वर में दो मात्राएँ होती हैं। (S) इस चिह्न से व्यक्त करते हैं।

3. वर्ण : छंद शास्त्र की वह क्रिया है जिससे पता चलता है कि छंद में हस्त एवं दीर्घ (लघु और गुरु) कितने हैं। इन्हें वर्णों की गिनती द्वारा व्यवस्थित किया जाता है।

4. वृत्त : लघु और गुरु, हस्त और दीर्घ (I, S) वर्णों के क्रम का नियम ही वृत्त कहलाता है।

5. गण और क्रम : गण का अर्थ समूह है। छंद शास्त्र में तीन वर्णों के समूह को गण कहते हैं। लघु और दीर्घ हस्त एवं गुरु के आधार पर यह आठ हैं।

यमाता राजभानसलगा।

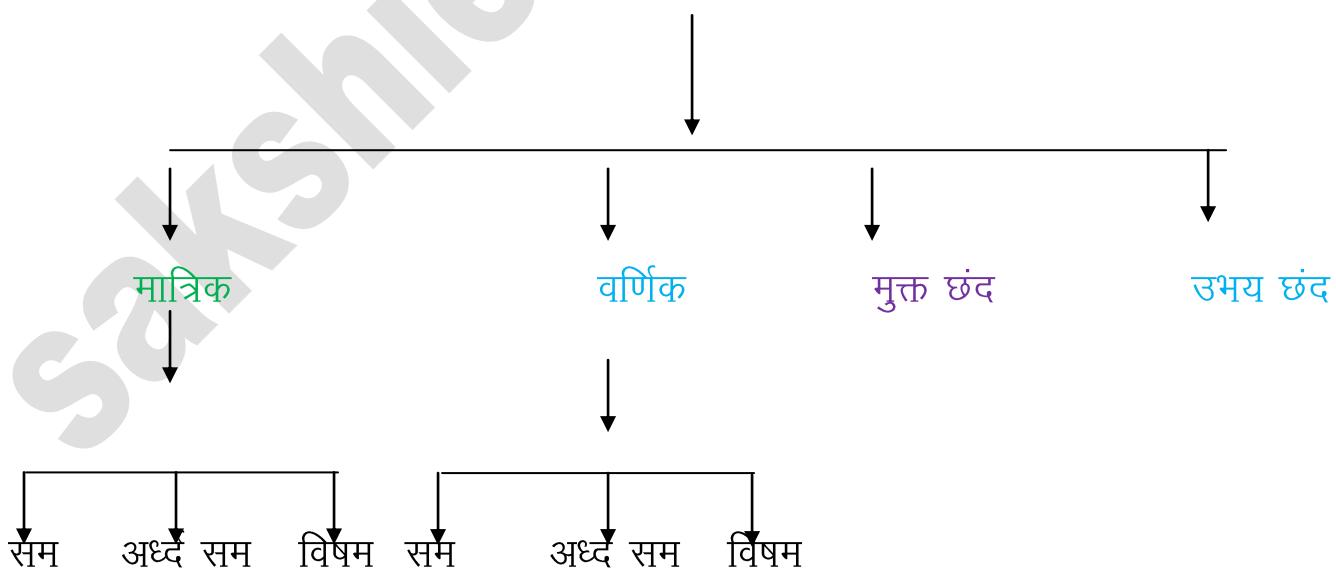
1. यमाता (I S S) मातारा (S S S) ताराज (S S I) राजभा (S I S) जभान (I S I)
भानस (S I I) नसल (I I I) सलगा (I I S)

6. यति : छंद को पढ़ते समय विश्राम अथवा विराम आदि के ज्ञान को यति कहते हैं।

7. गति : छंद को पढ़ते समय अनुभव होने वाले पद प्रवाह का नाम गति है।

8. तुक : चरणों के अंत में होने वाली वर्णों की आवृत्ति को तुक कहते हैं। तुक से छंद लयबध्द तालबध्द होता है। हिन्दी छंद शास्त्र में तुक छंद की आत्मा है।

छंद के भेद



मात्रिक छंद

जिन छंदों की रचना मात्राओं की गणना के अनुसार की जाती है उन्हें मात्रिक छंद कहते हैं ।

1. चौपाई 2. दोहा 3. सोरठा 4. रोला 5. कुँडली 6. हरगीतिका 7. छप्य आदि मात्रिक छंद हैं ।

1. चौपाई के पहले चरण में 16 मात्राएँ होती हैं, अंतिम वर्ण गुरु या दीर्घ होता है ।

जैसे : जल संकोच विकल भय मीना - 16

॥ ८८ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ८८

वर्णिक छंद

वर्ण गणना के आधार पर रचे गए छंदों को वर्णिक छंद कहते हैं । इनके प्रत्येक चरणों में वर्णों की संख्या तथा गुरु व लघु मात्राओं के स्थान या क्रम समान होते हैं ।

वर्णिक छंद दो प्रकार के होते हैं ।

1. साधारण 2. दंडक

1. साधारण वर्णिक छंद के पदों में वर्णों की संख्या 26 तक होती है ।

1. सवैया : साधारण वर्णिक छंद है । इसमें 22 से 26 वर्णों तक के छदों को सवैया कहते हैं । इसमें प्रायः 23 वर्ण होते हैं ।

जैसे : मो मन मैं निहचै सजनी यह तातहु ते प्रन मेरो महा है ।

। ॥ । ॥

2. घनाक्षरी : घनाक्षरी छंद में 31 वर्ण होते हैं । 16 वें वर्ण पर और उसके बाद 15 वें पर यति (विश्राम) होती है यह दंडक वर्णिक छंद है । $16+15=31$

जैसे : हाथिन सों हाथि मारे, घोरे सों संघारे घोरे - 16

रथनि सा रथ विदरिन बलवान की 1 - 15

3. कवित्व मनहर - यह दंडक वर्णिक छंद है इसके प्रत्येक चरण में 31 वर्ण होते हैं । 16 वर्णों के बाद यति (विश्राम) होता है । इसका अंतिम वर्ण गुरु होता है ।

जैसे : मंजुल मृदुल मुरली के स्वर के समान - 16

उनका सरस गान गुंजता है कान में - 15

मुक्त छंद

मुक्तक छंद अनियमित, असमान, स्वच्छंद और भावानुकूल यति विधान की रचना है ।

उभय छद

उभय छंद में वर्णों तथा मात्राओं, दोनों की ही संख्या निश्चित एवं नियमित होती है ।

1. जैसे : ऊपर को जल सूख सूखकर उड़ जाता है । मात्राएँ - 24 वर्ण - 17

S || S || S | S || | || S S S

2. दोहा - इस छंद में प्रथम और तीसरे चरण में 13-13 और दूसरे तथा चौथे चरण में 11 -11 मात्राएँ होती है । इस प्रकार दोहे में 24 मात्राएँ होती है ।

दोहा : रहिमन पानी राखिये, बिन पानी सब सून ($13 + 11 = 24$)

3. सोरठा : यह दोहे के विपरीत होता है अर्थात् इसके प्रथम व तृतीय चरण में 11 - 11

मात्राएँ एवं द्वितीय - चतुर्थ चरण में 13 - 13 मात्राएँ होती है ।

जैसे : विहरहि वन चहुँ ओर, प्रतिदिन प्रमुदित लोग सब ($11 + 13 = 24$)

||||| || || S | || || | ||| S | ||

4. रोला : यह 24 मात्राओं का छंद है जिसमें 11 मात्राओं के बाद विश्राम (यति) होता है ।

चरण के अंत में दो लघु होते हैं ।

जैसे : उत्तर दिसि नगराज अटल छवि सहित विराजत - $(11 + 13 = 24)$

| S | | | | | S | | | | | | | | | S | |

5. कुंडली : यह विषम (द्वितीय - चतुर्थ चरण) मात्रिक छंद है। यह दोहा तथा रोला छंदों के याग से बनता है। एक कुंडली में 6 चरण होते हैं। आरंभ में दोहा और अंत के चार चरणों में रोला होता है। प्रत्येक चरण में 24 मात्राएँ होती हैं।

जैसे : बिना विचारे जो करे सो पाछे पछताय) $(13 + 11 = 24)$

| S | S S S | S S S S | | S |

6. हर गीतिका : यह 28 मात्राओं का छंद है। अंतिम शब्द में लघु तथा गुरु होते हैं। चरण

में प्रायः 16 मात्राओं का छंद है अंतिम शब्द में लघु तथा गुरु होता है।

जैसे : मुख से न होकर चित्त से देशानु रागी हो सदा $(16 + 12 = 28)$

हैं सब स्वदेशी बंधु उनके, दुःख भागी हो सदा $(16 + 12 = 28)$

7. छप्य : छप्य में 6 पद अथवा चरण होते हैं। षट पद भी कहते हैं। प्रथम चार चरण में रोला और अंतिम दो पद उल्लाला के होते हैं। $(11 + 13 = 24)$ मात्राएँ होती हैं।

3. हम भारत वासी

लेखक - आर. पी. निशंक

उन्मुखी करण प्रश्न ।

1. नदियाँ किसमें विलीन होती हैं ?

उ. नदियाँ समुद्र में जाकर विलीन हो जाती हैं ।

2. इसमें किस-किस को एक बताया गया है ?

उ. इस मध्यम, मानव एवं ईश्वर को एक बताया गया है ।

3. 'मानव जाति एक है ।' इस पर अपने विचार बताइए ।

उ. धर्म - जाति, ऊँच-नीच का भेदभाव मनुष्य के द्वारा बनाया गया है। वास्तव में सभी मानव एक हैं। मनुष्य - मनुष्य में कोई अंतर नहीं है। सभी प्राणी ईश्वर की संतान हैं।

कविता का उद्देश्य :-

कविता शैली गीत आदि की रचना के लिए विद्यार्थियों को प्रेरित कर उनमें देशभक्ति, त्याग, बन्धुत्व, विश्वशान्ति, अहिंसा समर्पण आदि सद्गुणों के विकास की प्रेरणा देना, वसुदैव कुटुम्बकंम की भावना को जगाना, विश्व शान्ति के प्रयत्न को साकार करना कविता का मुख्य उद्देश्य है।

कवि परिचय :

आर.पी निशंक आधुनिक साहित्यकारों में अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं। इनकी रचनाओं का मुख्य उद्देश्य देश भक्ति है। समर्पण, नवंकुर, जीवन पथ, 'मातृभूमि के लिए' आपकी प्रसिद्ध रचनाएँ हैं।

कविता की विशेषता : -

प्रस्तुत कविता देशभक्ति की भावना से प्रेरित है। तुकांत एवं प्रेरणार्थक क्रिया का प्रयोग है। बच्चों में सत्य, अहिंसा, त्याग, समर्पण की भावना का विकास करके विश्वबन्धुत्व एवं विश्वशान्ति की ओर बढ़ने की प्रेरणा दी गई है।

शब्दार्थ :

पावनधाम	- पवित्र स्थान	अद्भुत	- अनोखा
दृश्य	- चित्र	नफरत	- व्देष, घृणा
कुहासा	- कोहरा, कुहरा	सरसाना	- रसपूर्ण (हरा भरा) करना
निराशा	- आशाहीन	उलझन	- समस्या से फंसे
तथ्यदीप	- सच्चाई (यथार्थ) का दीपक (प्रकाश)		
जीवन पथ	- जीवन के रास्ते	जीवन ज्योत	- जीने की आशा
महकाना	- सुगंधित करना	बगिया	- उपवन, बगीचा
क्लेश	- दुःख	समर्पण	- समर्पित होने की भावना
मूल	- मौलिक	श्रद्धा	-
अस्था, सम्मान आदर की मावना			
विश्वबन्धुत्व	- विश्व मैत्री / दुनिया से मित्रता का भाव		

प्रश्न :

1. हमें अपने जीवन में कैसा पथ अपनाना चाहिए ?
- उ. हमें सत्य, अहिंसा, त्याग और समर्पण की भावना से प्रेरित होकर ऐसे जीवन पथ को अपनाना है जो विश्वबन्धुत्व विश्वशान्ति के मार्ग पर ले जाए ।
2. हम भटकने वालों को राह कैसे दिखा सकते हैं ?
- उ. जीवन का यथार्थ (सच्चाई) बता कर राह से भटकने वालों को सही राह दिखा सकते हैं।

3. सत्य, अहिंसा त्याग और समर्पण की बगिया महकाने के लिए हम क्या-क्या कर सकते हैं ?

उ.

मन में श्रद्धा, प्रेम और विश्वास के साथ हम दुनिया को विश्वबन्धुत्व एवं विश्वशान्ति का पाठ पढ़ाकर संसार से सारे दुःखों, कलेश को मिटा कर धरती को स्वर्ग एवं उपवन बना येंगे ।

4. विश्वबन्धुत्व की भावना सारी दुनिया में आचरण में लाने के लिए आप क्या-क्या करना चाहेंगे ?

उ. ऊँच नीच का भेद मिटायेंगे, नफरत का कोहरा हटाकर, निराशा को दूर करेंगे । उनमें प्यार, आशा एवं विश्वास का दीप जलायेंगे । दुनिया के दुःखों को दूर करेंगे और इस धरती को स्वर्ग बनाकर विश्वशान्ति एवं विश्वबन्धुत्व की भावना जगायेंगे ।

अर्थ ग्राह्यता प्रतिक्रिया प्रश्न :-

1. यह गीत आपको कैसा लगा ? अपनी पसंद और नापसंद का कारण बताइए ।
उ. यह गीत हमें बहुत अच्छा लगा है । इस गीत में आशा, प्रेम, विश्वास, सत्य, अहिंसा, त्याग एवं समर्पण की भावना जगाई गई है । जीवन की सच्चाई से प्रेरित होकर विश्व में शान्ति एवं बंधुत्व की भावना (समझाकर) का प्रसार करेंगे । इस में धरती को स्वर्ग वनाने की बात कही गई है । इन्हीं सब कारणों से गीत अच्छा लगा है ।

2. दुनिया को “पावन धाम” बनाने के लिए हम क्या क्या कर सकते हैं ?

उ. दुनिया को पावन धाम बनाने के लिए हम ऊँच नीच का भेदभाव त्याग देंगे।
व्देष, नफरत हिंसा को मन से निकाल कर सभी मानव को समान मान कर प्रेम, त्याग, सत्य, अहिंसा, समर्पण एवं उदार मानवीय भावना से प्रेरित होकर कार्य करेंगे। सारे विश्व में शान्ति एवं बंधुत्वभाव का प्रचार करेंगे। इस प्रयत्न द्वारा दुनिया को पवित्र धाम बनाया जा सकेगा।

(आ)

इ निम्नलिखित भाव से संबन्धित कविता की पंक्तियाँ पहचान कर लिखिए

1. संसार में व्याप्त सारे विवादों को मिटाकर, हम, धरती को स्वर्ग बनायेंगे।

कविता : मन में श्रद्धा और प्रेम का अद्भुत दृश्य दिखायेंगे।

सत्य, अहिंसा, त्याग, समर्पण की बगिया महकायेंगे।

जग के सारे क्लेश मिटाकर, धरती को स्वर्ग बनायेंगे।

विश्वबंधुत्व का मूल मंत्र हम, दुनिया में सरसायेंगे।

2. जीवन पथ से भटके लोगों को रास्ता दिखायेंगे।

कविता : उलझन में उलझे लोगों को, तथ्य दीप समझायेंगे।

भटक रहे जो जीवन पथ से, उलको राह दिखायेंगे॥

हम खुशियों के दीप जला, जीवनज्योत जलायेंगे।

हम भारतवासी दुनिया को पावन धाम बनायेंगे॥

3. हम भेदभाव दूर करेंगे। हम सब मिल जुलकर रहेंगे।

कविता : ऊँच नोच का भेद मिटाकर, दिल में प्यार बसायेंगे।

नफरत का हम तोड कुहासा, अमृत रस सरसायेंगे॥

हम निराशा दूर भगाकर, फिर विश्वास जगायेंगे।

अभिव्यक्ति - सृजनात्मकता :-

(अ) तीन चार पंक्तियों में उत्तर लिखिए ।

1. उलझनों से बचे रहने के लिए हमें कैसी सावधानियाँ लेनी चाहिए ?

उ. उलझनों से बचे रहने के लिए हमें जीवन के यथार्थ (सच्चाई) को समझना होगा । आशा एवं खुशियों के दीपक जलाना होगा । निराशा, दुःख, अशान्ति को दूर करके जीवन की सच्चाई को समझते हुए आशा से आगे बढ़ना होगा ।

2. निराशावादी और आशा वादी के स्वभाव में क्या अंतर होता है ?

उ. आशावादी व्यक्ति हर समस्या का साहस पूर्वक सामना करके उन पर सफलता पाता है। वह जिस के सम्पर्क में आये गा उसे भी आशावादी बना देता है। लोग उस से प्रेरणा लेते हैं वह हर हाल (दशा) में सुखी रहता है। इसके विपरीत निराशावादी व्यक्ति अपना जीवन नष्ट कर देता है। वह दूसरों में भी निराशा उत्पन्न करता है। वह स्वयं समस्या को दावत देता है। जीवन में कभी सुखी नहीं रहता।

(आ)

1. गीत में धरती को स्वर्ग बनाने की बात कही गयी है । हम इसमें क्या सहयोग दे सकते हैं ?

उ. धरती को स्वर्ग बनाने में हम यह सहयोग दे सकते हैं कि धरती के पर्यावरण की रक्षा करें। उसे प्रदूषण से बचाए। धरती पर शान्ति सम्भाव का प्रचार करें। भेदभाव दूर करें। नैतिक मूल्यों का विकास करें। सत्य, अंहिसा, त्याग एवं समर्पण की भावना को जगा कर धरती को स्वर्ग बना सकते हैं।

(इ). विश्वशान्ति की राह में समर्पित किस महान व्यक्ति का साक्षात्कार आप लेना चाहेंगे ? साक्षात्कार में उनसे पूछे जाने वाले प्रश्नों की एक सूची तैयार कीजिए ?

उ. (विद्यार्थी द्वारा करवाया जाएगा।)

(ई) सत्य, अहिंसा त्याग आदि भावनाओं का हमारे जीवन में क्या महत्व है ?

उ. सत्य, अंहिंसा, त्याग समर्पण आदि का हमारे जीवन में बड़ा महत्व है। भावनाएँ नैतिकता का अंग हैं। ये भावनाएँ व्यक्ति को सच्चारित्र बनाते हैं। आत्मविश्वास, संतोष बढ़ाते हैं। इन भावनाओं के होने पर व्यक्ति सभी प्राणी मात्र से जुड़ता है। इन भावनाओंकी प्रेरणा से ही विश्वशान्ति एवं विश्वबंधुत्व स्थापित होता है। इन भावनाओं का विकास कर धरती को स्वर्ग बनाया जा सकता है और तब मानव भू ईश्वर बन जायेगा

भाषा की बात :-

(अ) कोष्ठक में दी गयी सूचना पढ़िए और उसके अनुसार कीजिए।

1. दुनिया अमृत, पावन (वाक्य प्रयोग कीजिए / पर्याय शब्द लिखिए।

1. दुनिया, जग, जगत, संसार, सृष्टि

वा. यह दुनिया गोल है।

2. अमृत - सुधा, पीयूष, अमि

वा. वर्षा की बूँद अमृत है।

3. पावन - पवित्र, पाक, पुनीत

वा. भारत की पावन भूमि पर कई संतों का जन्म हुआ है।

2. निराशा, त्याग, प्यार (विलोम शब्द लिखिए / वाक्य प्रयोग कीजिए)

1. निराशा × आशा वा. निराशा मनुष्य को असहाय बना देती है।
2. त्याग × ग्रहण वा. देशभक्तों ने आजादी के लिए प्राण त्याग दिए।
3. प्यार × व्देष वा. माँ सभी बच्चों को प्यार से पालती है।

3. खुशी, बगीचा भावना (वचन बदलिए /वाक्य प्रयोग कीजिए)

1. खुशी - खुशियाँ वा. खुशियाँ बाँटने से संतोष मिलता है।
2. बगीचा - बगीचे वा. बगीचे में रंग बिरंगे फूल खिले हैं।
3. भावना - भावनाएँ वा. हमें प्राणी मात्र के प्रति अच्छी भावना रखनी चाहिए।

(आ) सूचना पढ़िए और उसके अनुसार कीजिए।

1. पवन, पावक, निराशा (सन्धिविच्छेद कोजिए)

1. पावक - पौ + अक = पावक (स्वर सन्धि / अयादि संधि)
2. पवन - पो + अन = पवन (स्वर सन्धि / अयादि संधि)
3. निराशा - नि: + आशा = निराशा (विसर्ग सन्धि)

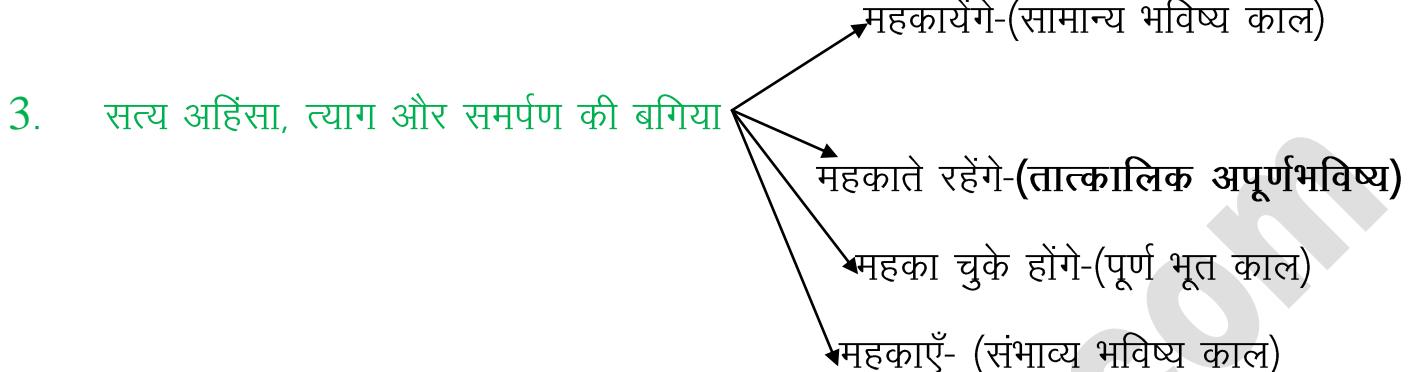
2. भारतवासी, जीवनज्योत (समास पहचानिए)

1. भारत के वासी - तत्पुरुष समास)
2. जीवन रूपी ज्योत (कर्म धारय समास)
3. जीवन की ज्योत (तत्पुरुष समास)

(इ) इन्हें समझिए :

1. खुशी, खुशियाँ, खुशियों (एक वचन, बहुवचन एवं वाक्य प्रयोग में खुशी शब्द का बहुवचन खुशियों के रूप में लिया गया है।
 2. भारतवासी भारतवासी भारतवासियों
- 2. बनना, बनाना - बनवाना**
- बनना क्रिया (मूलधात् शब्द) है। बनाना सकर्मक क्रिया बनाने के लिए प्रयुक्त हुआ तो बनवाना प्रेरणार्थक क्रिया है जिसमें कार्य कर्ता द्वारा न करके दूसरे को कार्य करने की प्रेरणा देरहा है।
- देखना (क्रिया है) दिखाना (सकर्मक क्रिया है) और दिखवाना (प्रेरणार्थक क्रिया रूप है)
- ई. नीचे दिया गया उदाहरण समझिए (उसके अनुसार दिये गए वाक्य बदलिए।**

- 1. भटक रहे जो जीवन पथ से उनको राह**
-
- दिखायेंगे (सामान्य भविष्य काल)
दिखाते रहेंगे (तात्कालिक अपूर्वभविष्य)
दिखा चुकेंगे (पूर्ण भूत काल)
दिखाएँ (संभाव्य भविष्य काल)
- 2. उलझन में उलझे लोगों को तथ्य दीप**
-
- समझायेंगे-(सामान्य भविष्य काल)
समझाते रहेंगे-(तात्कालिक अपूर्वभविष्य)
समझा चुकेंगे-(पूर्ण भूत काल)
समझाएँ- (संभाव्य भविष्य काल)



पाठ में आये हुए मुहावरों का अर्थ एवं उनका वाक्य प्रयोग

1. भेद मिटाना = अन्तर समाप्त करना :

वा. उनकी मित्रता ने अमीर - गरीब का भद्र मिटा-दिया ।

2. प्यार बरसाना = प्यार / स्नेह को दर्शना

वा. मौसी ने अपनी बहन के बच्चों पर इतना प्यार बरसाया कि सब चकित रह गए ।

3. दूर भगाना = दूर कर देना

वा. हमें अपने हृदय के डर को दूर भगा देना चाहिए ।

4. विश्वास जगाना = भरोसा बढ़ाना

वा. नौकर ने मालिक के मनमें इतना विश्वास जगाया कि मालिक ने अपनी दुकान उसे सौंप दी ।

5. राह दिखाना = रास्ता दिखाना -

वा. माता पिता हमें सच्चाई की राह दिखाते हैं ।

6. क्लेशमिटाना - दुःख हटाना

वा. संतोष परिवार का क्लेश मिटाता है ।

उपवाचक - 1. शांति की राह में

प्रश्नोत्तर : -

1. शांति की परिभाषा क्या हो सकती है? अपने शब्दों में बताइए?

उ. मन को नियंत्रित कर उसे बुराई के रास्ते पर चलने से रोकना ही वास्तविक 'शांति' है। मानसिक सुख की प्राप्ति ही शांति है। यदि हमारे पास दुनिया का सारा वैभव और सुख साधन उपलब्ध है परंतु शांति नहीं है तो वैसे सुख साधन व्यर्थ है। यदि शान्ति एवं संतोष है तो हमारे दुःख पीड़ा, लालच एवं स्वार्थ का अपने आप ही अंत हो जाता है।

2. नेल्सन मंडेला के जीवन से हमें क्या संदेश मिलता है?

उ. न्याय समानता और सम्मान के लिए किए जाने वाले संघर्ष के प्रतीक नेल्सन मंडेला का व्यक्तित्व हमारे लिए प्रेरणास्पद है उनका बलिदान इतना जबरदस्त था कि वे जगह-जगह मानवीय प्रगति के लिए लोगों को जो भी वे कर सके करने की प्रेरणा देते थे। हमारी दुनिया को अक्सर जो असहायता और निराशा घेर लेती उसके बिल्कुल विपरित उनके जीवन की कहानी है। इस प्रकार उनके जीवन से अन्याय, रंगभेद के विरुद्ध आवाज उठाने, संघर्ष से लड़ने, अहिंसा, शांति, सेवाभाव भाईचारे का संदेश मिलता है।

3. मदर तेरेसा ने अपने जीवन में क्या सिद्ध कर दिखाया ?

उ.

मदर तेरेसा एक ऐसा नाम है, जो शांति, करुणा, प्रेम और वात्सल्य का पर्याय कहलाता है। मदर तेरेसा का सपना था कि अनाथों, गरीबों, और रोगियों की सेवा करना। उसके लिए उन्होंने

मिशनरीज आँफ चारिटि और 'निर्मल हृदय' नामक संस्थाओं की स्थपना की। उन्होंने अपना सारा जीवन गरीब, अनाथ और बीमार लोगोंकी सेवा करते हुए बिताया। उन्हेंने सिद्ध कर दिखाया कि दुखियों की सहायता से बड़ाकोई धर्म नहीं है। मानव सेवा करने के कोई अपना- पराया देश नहीं है। अनथो, गरीबो, रोगियों की सेवा ही सही अर्थ में जीवन की सार्थकता है।

प्र.4. प्रार्थना करने वाले होठों से कही अच्छे सहायता करने वाले हाथ है।

उ.मानव सेवा ही माधव सेवा है। दीन-दुःखियों की सेवा ही भगवान की सेवा और आराधना होती है। ईश्वर ने हमें दूसरों की सहायता करने के लिए जन्म दिया है। हमें ईश्वर ने बनाया है। अतः उनकी संतान (मानव) की सेवा करना हम सबका कर्तव्य है। इसलिए भगवान का यश गानेवाले, मंत्र पढ़नेवाले होठों से गरीब, दीन-दुखियों की सेवा करने वाले हाथ ही अच्छे हैं। पवित्र है। धार्मिक स्थानों में प्रार्थना करने से बेहतर है कि हम समाज से बाहर निकलकर दुखियों की सेवा करें।

4. कण-कण का अधिकारी

I उन्मुखीकरण प्रश्नोत्तर :

प्र.1. गाँधीजी क्या करते थे?

उ. गाँधी जी अपना काम खुद करते थे। ये रोज सूत कातते, कपड़ा बुनते, और अनाज से कंकर चुनते थे। ये रोज चक्को भी चलाते थे।

प्र.2. गाँधी जी के अनुसार पूजनीय क्या है?

उ. गाँधीजी के अनुसार श्रम पूजनीय है।

प्र.3. हमारे जीवन में श्रम का क्या महत्व है?

उ. हमारे जीवन में श्रम का बहुत महत्व है। किसान मजदूर सभी रात-दिन काम करते हैं। श्रम से ही हमारी जाविका चलती है। श्रम करने से हम समाज में सम्मान के भाव सेदेखा जाता है। श्रम एक अमूल्य धन है। श्रम से हम जीवन में सब कुछ प्राप्त कर सकते हैं।

उद्देश्य :

सामाजिक काव्य-सृजन की प्रेरणा के साथ-साथ छात्रा में समाज-कल्याण व उदारता कीभावना का पिकास करना और उन्हें श्रम का महत्व बताकर उसक पथ पर आगे बढ़ने की प्रेरण देना इस पाठ का उद्देश्य है।

कवि परिचय :

डॉ. रामधारी सिंह दिनकर हिन्दी के प्रसिद्ध कवि माने जाते हैं। इनका जन्म सन् 1908 में मुगेर में हुआ और मृत्यु सन् 1974 में हुआ। 'उर्वशी' काव्य पर इन्हें ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला। रेणुका, कुरुक्षेत्र, रश्मिरथी, परशुराम की प्रतीक्षा आदि इनको प्रमुख रचनाएँ हैं।

II. शब्दार्थ :

मनुज = मनुष्य, मानव

संचित करना = इकट्ठा करना, एकत्र करना

अर्थ = धन दौलत

भोगता = उपयोग में लाना

भाग्यवाद = भाग्य को मानना

छल = धोखा

पाप = कसूर, अपराध

नर-समाज = मानव का समाज

भाग्य = नसीब, किस्मत

भुजबल = भुजा की ताकत

सम्मुख = सामने

पृथ्वी = धरती

झुकना = विनम्र होना, विनीत होना

विनीत = विनम्रता पूर्वक

नभ-तल = आकाश के नीचे

श्रम-जल	= स्वेद, पसीना
पीछे	= बाद
विजीत	= जीती हुई प्रकृति, संसार, चराचर
मत	= नहीं
प्रकृति	= संसार, चराचर
न्यस्त	= रखा हुआ
धन	= संपत्ति
धर्मराज	= युधिष्ठिर
अधिकारी	= भाग पाने वाला, हक पाने वाला
जन	= लोग

III. प्रश्नोत्तर :

प्र.1. भाग्यवाद का छल क्या है?

उ. एक आदमी पाप करके धन संचित करता है तो दूसरा आदमी धोखे से छीन लेता है उस भाग्यवाद का छल कहते हैं।

प्र.2. नर समाज का भाग्य क्या है?

उ. नर समाज का भाग्य उसकी मेहनत और भुजाओं की शक्ति ही है।

प्र.3. श्रमिक के समुख क्या-क्या झुके हैं।

उ. श्रमिक के समुख पृथ्वी और आकाश झुके हैं।

प्र.4. श्रम जल किसने दिया?

उ. मेहनत करने वाले हाथा ने श्रम जल दिया है।

प्र.5. मनुष्य का धन क्या है?

उ. प्रकृति में जो न्यस्त (रखा हुआ) है वह मनुष्य का धन है।

प्र.6. कण-कण का अधिकारी कौन है?

उ. कण-कण का अधिकारी जन-जन है।

IV. अर्थ ग्राह्यता - प्रतिक्रिया :

अ.1. भाग्यऔर कर्म में आप किसे श्रेष्ठ मानते हैं? क्यों?

उ. भाग्य और कर्म में कर्म ही श्रेष्ठ है। कर्म मनुष्य के भाग्य को बदल देता है। यदि व्यक्तिकर्मठ हो तो वह अपना भाग्य स्वयं बना सकता है। सिर्फ भाग्य के भरोसे बैठने से कोई भी कार्य नहीं हो सकता। इसलिए हमें कर्म पर विश्वास करके सफलता की ओर आगे बढ़ना चाहिए। बिना श्रम किए सफलता नहीं मिलती। भाग्य को तो वहीं कोसते हैंजो कर्महीन होते हैं।

प्र.2. श्रम के बल पर हम क्या क्या हासिल कर सकते हैं?

उ. श्रम के बल पर हम भाग्य को बदल सकते हैं। श्रम से मनुष्य अपने जीवन की सभी सुख सुविधाओं तथा अपनी इच्छाओं का पूरा कर सकता है। श्रम के द्वारा हम दूसरों से सम्मान पा सकते हैं। श्रम-बल से हम आकाश और धरती को भी झुकासकते हैं।

आ. पाठ पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

प्र.1. इस कविता के कवि कौन हैं?

उ. इस कविता के कवि रामधारी सिंह दिनकर हैं।

प्र.2. कविता का यह अंश किस काव्य से लिया गया है?

उ. कविता का यह अंश 'कुरुक्षेत्र' काव्य से लिया गया है।

प्र.3. सबसे पहले सुख पाने का अधिकार किसे है?

उ. श्रम करने वाले को सुख पाने का पहला अधिकार है।

प्र.4. कण-कण का अधिकारी किन्हे कहा गया है?

उ. भारत के जन-जन को कण-कण का अधिकारी कहा गया है।

इ. निम्नलिखित भाव से संबंधित पंक्तियाँ चुनिए।

1. धरती और आकाश इसके सामने नत मस्तक होते हैं।

2. प्रकृति से पहले परिश्रम करने वाले को सुख मिलना चाहिए।

3. जिसके सम्मुख झुकी हुई, पृथ्वी विनीत नभतल है।

उ. विजीत प्रकृति से पहले उसको सुख पाने दो।

ई. नीचे दिए गए पद्यांश पढ़िए। प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

कदम कदम बढ़ाए जा, सफलता तू पाये जा,

ये भाग्य है तुम्हारा, तू कर्म से बनाये जा,

निगाहे रखो लक्ष्य पर, कठिन नहीं ये सफर,

ये जन्म है तुम्हारा, तू सार्थक बनाए जा।

प्र.1. कवि के अनुसार सफलता किस प्रकार प्राप्त हो सकती है?

- उ. कवि के अनुसार कदम कदम बढ़ाने से ही सफलता प्राप्त हो सकती है।

प्र.2. हमारा सफर कब सरल बन जाता है?

- उ. लक्ष्य पर निगाह रखने पर हमारा सफर सरल बन जाता है।

प्र.3. इस कविता के लिए उचित शीर्षक दीजिए।

- उ. 'कदम-कदम बढ़ाए जा' इस कविता के लिए उचित शीर्षक है।

V. अभिव्यक्ति सृजनात्मक :

- अ. इन प्रश्नों के उत्तर तीन चार पंक्तियों में लिखिए।

प्र.1. कवि मेहनत करने वालों को सदा आगे रखने की बात क्यों कर रहे हैं?

- उ. जो अपना पसीना बहाकर मेहनत करता है सबसे पहले उसे सुख मिलना चाहिए। उसे ही सुख पाने का पहला अधिकार है। इसलिए हमें परिश्रम करने वालों के बारे में सबसे पहले सोचना चाहिए। उसे पीछे रखकर हम किसी भी राष्ट्र का विकास नहीं कर सकते।

प्र.2. अनुचित तरीके से धन राष्ट्र अर्जित करनेवाला व्यक्ति सही है या श्रम करने वाला?

- अ. अपने विचार बताइए।
उ. अनुचित तरीके से धन कमाने वाला व्यक्ति सारी सुख सुविधाएँ हासिल कर सकता है। ऐसा व्यक्ति मन में हमेशा भय भीत रहता है। एक डर उसके मन में बना रहता है।

इसके विपरीत श्रम करने वाला व्यक्ति सीमित सुविधाएँ ही जुटाकर मन में प्रसन्न रहता है। उसके मन में कोई भय नहीं रहता है। इस आधार पर हम कह सकते हैं कि श्रम से अर्जित किया गया धन ही सही है।

आ. कवि ने मजदूरों के अधिकारों का वर्णन कैसे किया है? अपने विचार बताइए।
उ. कवि 'रामधारी सिंह दिनकर' राष्ट्रीय कवि है। उन्होंने इस कविता के माध्यम से मजदूरों के अधिकारों पर प्रकाश डाला गया है। कवि कहते हैं कि एक व्यक्ति अनुचित तरीके से धन अर्जित करता है तो दूसरा भाग्यवाद के छल से उस धन का सुख भोगता है। अर्थात् पाप की कमाई सच्ची कमाई नहीं होती। कवि परिश्रम को ही समाजका सच्चा धन मानते हैं क्योंकि इस धन को कोई हमसे छीन नहीं सकता, चुरा नहीं सकता। इसलिए परिश्रमी बनकर जीवन में सफलता प्राप्त करनी चाहिए। परिश्रम के बल से हम आकाश को भी झुका सकते और धरती भी विनम्र बन जाती है।
परिश्रमी व्यक्ति के लिए कुछ भी असंभव नहीं है। मानव समाज में परिश्रम करने वालों को ही सुख पाने का पहला अधिकार है। प्रकृति में पाई जाने वाली सभी वस्तुओं पर सभी मनुश्य का समान अधिकार है। किसी को प्रकृति की चीजों पर एकाधिकार का हक नहीं है। प्रकृति की सभी चीजों पर सभी को समान अधिकार मिलनाचाहिए तभी हम राष्ट्र की उन्नति कर सकते हैं।

VI. विशेष :

आज मजदूर दिन-रात काम करने के बाद भी खुशहाल नहीं है क्योंकि कुछ स्वार्थी लोग उनके अधिकार को छीनकर दिनकर अपने विलासिता का साधन इकट्ठा कररहे हैं। उसे रोकना चाहिए।

- इ. नीचे दिए गए प्रश्नों के आधार पर सृजनात्मक कार्य कीजिए (अध्यापक छात्रों से करवाएँ) (परियोजना के रूप में)
- ई. 'नर समाज का भाग्य एक है, वह श्रम, वह भुजबल है। जीवन की सफलता का मार्ग श्रम है अपने विचार व्यक्त कीजिए।
- उ. मानव समाज का एक ही भाग्य है वह है उसका श्रम और भुजाओं की शक्ति। परिश्रमी व्यक्ति का जीवन बहुत सरल होता है। उसकी इच्छाएँ सीमित रहती हैं, थोड़ी-सी वस्तु में भी वह प्रसन्न रहता है। जीवन की सपलता का रास्ता परिश्रम ही है इसलिए कहा गया है कि परिश्रम ही सफलता की कुंजी है। निरंतर श्रम करने वाला अपने जीवन में जरूर सफल होता है। मनुष्य परिश्रम से अपने भाग्य की रेखा को बदल सकता है। जीवन के सारे सुख सारी उच्छाएँ परिश्रम से प्राप्त हो सकती हैं। परिश्रम के सामने प्रकृति को भी झुकना पड़ता है। परिश्रमी व्यक्ति सच्चे अर्थों में आदर का पात्र है।

VII. भाषा की बात :

- अ. कोष्ठक में दी गई सूचना पढ़िए और उसके अनुसार कीजिए।
1-जन, पृथ्वी धन (एक-एक शब्द का वाक्य प्रयोग कीजिए और उसके पर्याय शब्द लिखिए।)

VIII. व्याकरणांश :

वाक्य प्रयोग :

जन - हमारे राष्ट्र में सभी जन एक समान है।

पृथ्वी - पृथ्वी को रत्नगर्भा कहा जाता है।

धन - धन कमाने के लिए अनुचित कार्य नहीं करना चाहिए।

पर्याय शब्द :

- जन - लोक, जनता, लोग
पृथ्वी - भूमि, धरा, वसुधा
धन - संपत्ति, संपदा, दौलत

2 पाप, सुख, भाग्य (एक-एक शब्द का विलोम शब्द लिखिए)

विलोम शब्द :

- पाप × पुण्य
भाग्य × दुर्भाग्य
सुख × दुःख

वाक्य प्रयोग :

- पाप - हमें पाप कार्य से दूर रहते हुए पुण्य कार्य करना चाहिए।
सुख - हम सुख में भगवान को भूल जाते हैं और दुख में याद करते हैं।
भाग्य - हमें अपने भाग्य पर अभिमान नहीं करना चाहिए तथा दूसरों के दुर्भाग्य पर हँसना भी नहीं चाहिए।

3. जन-जन, कण-कण (पुनरुक्ति शब्दों से वाक्य प्रयोग कीजिए)

वाक्य प्रयोग :

- जन-जन - वर्षा के कारण जन-जन का मन पुलकित हो उठा।
कण-कण - ईश्वर कण-कण में निवास करते हैं।

4. मजदूर मेहनत करता है। (एक-एक शब्द का वचन बदलिए और वाक्य प्रयोग कीजिए।)

मजदूर - मजदूरों - मजदूरों ने काम करने से इनकार कर दिया।

मेहनत - किसान मेहनत करके जीवन बिताते हैं।

करता है - मजदूर मिल में काम करते हैं।

5. मनुष्य, मजदूर (भाववाचक संज्ञा में बदलकर लिखिए)

मनुष्य - मनुष्यता / मजदूर - मजदूरी

A. सूचना पढ़िए - उसके अनुसार कीजिए

अधिकार - अधिकारी, भाग्य - भाग्यवान् (अंतर बताए)

1. सभी नागरिक को समान अधिकार मिले हैं।

2. वह दंड का अधिकारी है।

3. भाग्य - सुख गरीब के भाग्य में नहीं है।

4. भाग्यवान् - अच्छी संतान भाग्यवान् लोगों को मिलती है।

2. यद्यपि, पर्यावरण संधि विच्छेद कीजिए।

यदि + अपि - यह स्वर संधि

परि + आवरण - यह स्वर संधि

3. श्रमजल , नभतल, भुज-बल (समास पहचानिए)

श्रमजल - श्रम रूपी जल - कर्मधारय समास

नभतल - नभ का तल - तत्पुरुष समास

भुजबल - भुजाओं का बल - तत्पुरुष समास

4. एक मनुज संचित करता है, अर्थ पाप के बल से और भोगता उसे दूसरा, भाग्यवाद के छल से।

एक-विशेषण, संख्यावाचक, एकवचन, पुलिलंग और - 'और' समुच्चय बोधक अव्यय।

5. जिसने श्रम-जल दिया-उसे पीछे मत रह जाने दो कारक पहचानिए।

इ-इन्हें समझिए सूचना के अनुसार कीजिए जाने दो, पाने दो, बढ़ने दो

- उ. उसे रोको मत जाने दो।

उसे गेंद पाने दो

उसे आगे बढ़ने दो

जाने दो, पाने दो, बढ़ने दो

इन सभी में दो क्रियाएँ हैं इस लिए इन्हें संयुक्त क्रिया कहते हैं)

2. एक - पहला, प्रथम, दो-दूसरा, द्वितीय (अंतर समझिए)

- उ. मैंने एक आम पाया।

मुझे दसवीं कक्षा में प्रथम श्रेणी मिला।

मुझे दो पैसे दीजिए।

एक आदमी पकड़ा गया और दूसरा भाग गया।

वह द्वितीय श्रेणी में उत्तीर्ण हुआ।

एक, पहला (संख्यावाचक विशेषण है)

प्रथम द्वितीय (संस्कृत के विशेषण शब्द है।)

3. अभाग्य, दुर्भाग्य, सुभाग्य (उपसर्ग पहचानिए)

उ. अभाग्य - 'अ' दुर्भाग्य - 'दुर्' सुभाग्य - 'सु'

4. प्राकृतिक, भाग्यवान, अधिकारी, प्रत्यय पहचानिए।

उ. प्राकृतिक - इक, भाग्यवान - वान अधिकारी - ई

5. पुरुष श्रमिक के रू में काम करते हैं (लिंगबदलकर वाक्य लिखिए)

उ. स्त्री श्रमिक के रूप में काम करती है।

ई. नीचे दिया गया उदाहरण समझिए। उसके अनुसार दिए गए वाक्य बदलिए।

जैसे: किसने श्रम-जल दिया उसे पीछे मत रह जाने दो। श्रम जल देने वाले को पीछे मत रह जाने दो।

1. जो कुछ न्यस्त प्रकृति में है, वह मनुजमात्र का धन है।

उ. प्रकृति में न्यस्त धन मनुज मात्र का है।

2. जो मेहनत करता है वही कण-कण का अधिकारी है।

उ. मेहनत करने वाला ही कण-कण का अधिकारी है।

3. जो परोपकार करता है वही परोपकारी कहलाता है

परोपकार करने वाला ही परोपकारी कहलाता है।

पाठ संबंधी अतिरिक्त व्याकरण :

सूचना के अनुसार बदलिए।

1. एक मनुज संचित करता है (रेखांकित शब्द का वचन बदलकर लिखिए)
उ. अनेक मनुज संचित करते हैं।

2. नर समाज का भाग्य एक है (रेखांकित शब्द का लिंग बदल कर वाक्य लिखिए)
उ. नारी समाज का भाग्य एक है।

3. उसको सुख पाने दो । (रेखांकित शब्द का वचन बदल कर वाक्य लिखिए)
उ. उन्हें सुख पाने दो।

4. कवि कविता लिखता है (रेखांकित शब्द का लिंग बदलकर वाक्य लिखिए)
उ. कवयित्री कविता लिखती है।

5. वे श्रम जल देते हैं। (रेखांकित शब्द का वचन बदलकर वाक्य लिखिए)
उ. वह श्रम जल देता है।

6. वह श्रम कर रहा है।
उ. वे श्रम कर रहे हैं।

7. मुझे सुख पाने दो (रेखांकित शब्द का वचन बदल कर वाक्य लिखिए)
उ. हमें सुख पाने दो

काल बदलना

नीचे दिए गए वाक्यों के काल सूचना के अनुसार बदलिए।

1. वह मनुजमात्र का धन है। (भूतकाल में बदलकर (लिखिए)
उ. वह मनुज मात्र का धर्म था।
2. कण-कण का अधिकारी जन-जन है। (भविष्यतकाल में बदलिए)
उ. कण-कण का अधिकारी जन-जन होगा।
3. एक मनुज संचित करता था। (वर्तमान काल में बदलिए)
उ. एक मनुज संचित करता है।
4. नर समाज का भाग्य एक है। (भूतकाल में बदलिए)
उ. नर समाज का भाग्य एक था।
5. उसे दूसरा आदमी भोगेगा। (वर्तमान काल में बदलिए)
उ. उसे दूसरा आदमी भोगता है।

5. लोकगीत

I. शब्दार्थ :

कमर	= कटि	गूँज उठना	= प्रतिध्वनित होना
भला	= अच्छा	अटूट	= नाटूटने वाला, दृढ़
मनोरंजन	= मन बहलाने वाला	लोच	= कोमल, लचक ताजगी
ताजगी	= नया सा	स्त्रियाँ	= औरतें
विधि	= पध्दति	त्योहार	= उत्सव, पर्व
मदद	= सहायता	हेय	= तुच्छ, नीच
उपेक्षा करना	= इनकार करना, तिरस्कार	नजर	= दृष्टि
क्षेत्र	= विभाग, सीमा	परिवर्तन	= बदलाव
प्रकाशित होना	= छपाई होना	जकड़	= पकड़ करकर बाँधना
दल	= समूह	जवाब	= उत्तर
दिशा	= ओर, तरफ	देहात	= गांव, ग्राम
चाव	= पसंद से	करीव	= लगभग, आसपास
जंगल	= वन	सीमा	= हद
हास	= हँसी	आरंभ	= शुरुआत
सदा	= हमेशा, सदैव	नट	= अभिनेता
संसार	= दुनिया	राह	= रास्ता
अवसर	= मौका	हवाला	= अधीन
प्रकार	= किस्म	साधारण	= सामान्य
नाच	= नृत्य	जरूरत	= आवश्यकता

बखान करना = वर्णन करना /	संग्रह करना = एकत्र करना/
तारीप करना	इकट्ठा
ओजस्वी = जोश, पैदा करने वाला/	आदि वासियों = जनजाति जंगल
जोशीली	में रहनेवाले

II. उन्मुखीकरण :

1. मेहंदी है रचने वाली,
हाथों में गहरी लाली।
कहें सखियाँ, अब कलियाँ
हाथों में खिलने वाली हैं।
तेरे मन को, जीवन को;
नई खुशियाँ मिलने वाली हैं।

III. प्रश्नोत्तर :

प्र.1. हाथों में क्या रचने वाली है?

उ. हाथों में मेहंदी रचने वाली है।

प्र.2. इस तरह के गीतों को क्या कहा जाता है?

उ. इस तरह के गीत, लोक गीत कहलाते हैं।

प्र.3. किन संदर्भों में लोकगीत गाए जाते हैं?

उ. ऋतु परिवर्तन, त्योहारो, शादी, पर्वों के अवसरों पर लोकगीत गाए जाते हैं।

IV. उद्देश्य :

- छात्रों को निबंध लिखने की प्रेरणा देते हुए निबंध शैली से अवगत कराना भाषा के मनोरंजक रूप से छात्रों की अभि रुचियों, दक्षताओं के साथ-साथ उसका सर्वांगीण विकास करना और लोकगीतों के सृजन के लिए प्रेरित करना इस पाठ का उद्देश्य है।

V. लेखक परिचय :

- भगवत शरण उपाध्याय हिन्दी साहित्य के सुपरिचित रचनाकार है। इनका जन्म सन 1910 में हुआ। इन्होने कविता, कहानी आदि विधाओं में लेखनी चलाई। हिन्दी साहित्य की रूपरेखा, कालिदास का भारत, ठूँठा आम, गंगा गोदावरी आदि इनकी प्रसिद्ध रचनाएँ हैं।

VI. विधा विशेष :

लोकगीत निबंध पाठ है। 'निबंध' का अर्थ है ''बाँधना''। सुंदर और उचित शब्दों के द्वारा भावों की प्रस्तुति निबंध है। रामचंद्र शुक्ल के अनुसार निबंध ''गद्य की कसौटी है।''

VII. प्रश्न उत्तर :

प्र.1. लोकगीत के बारे में आप क्या जानते हैं?

उ. लोकगीत विशेषकर ग्रामीण जनता के गीत हैं। इसे गाँव के घरों में विभिन्न अवसरों पर गाया जाता है। इसके रचनाकार भी गाँव के लोग ही होते हैं। लोकगीत अपनी लोच, ताजगी और लोकप्रियता में शास्त्रीय संगीत से भिन्न हैं। ये गीत बाजों के मदद के बिना ही साधारण ढोल, करताल और बाँसुरी आदि की मदद से गाए जाते हैं।

प्र.2. लोकगीत और संगीत का क्या संबंध है?

उ.लोकगीत हमारे जीवन के संगीत है। लोकगीत और हमारी संस्कृति का अटूट संबंध है। लोकगीत भावना प्रधान होते है। इसमें सूर-ताल का ध्यान नहीं रखा जाता है।ये शास्त्रीय संगीत से बिलकुल भिन्न है। गीत संगीत के बिना हमारा मन नीरस होजाता है।

प्र.3. 'पहाड़ी' किसे कहते है?

उ. पहाड़ियों के अपने-अपने गीत है। गढ़वाल, किन्नार काँगड़ा आदि के अपने-अपने गीत है। उन्हे गाने की उनकी अपनी-अपनी विधियाँ है। उनका नाम ही 'पहाड़ी' पड़ गया।

प्र.4. वास्तविक लोकगीत कैसे होते हैं?

उ. वास्तविक लोकगीत देश के गाँवों और देहातों में हैं। ये सभी लोकगीत गाँवों और इलाकों की बोलियों में गाए जाते हैं। लोकगीत में बहुत जान होती है। ताजगी इनकी विशेषता है।

प्र.5. बारहमासा लोकगीतों के बारे में आप क्या जानते है?

उ. बारहमासा गीत में बारह मासों (बारह महीनों) का वर्णन किया जाता है। इस में प्रकृति के विविध रूपों का वर्णन किया जाता है। इन गीतों की प्राकृतिक विरोष्टता मुख्य होती है।

प्र.6. विदेशिया लोकगीत के बारे में आप क्या जानते हैं?

उ.

भोजपुरी में करीब तीस चालीस बरसों बिदेशिया का प्रचार हुआ। गाने वालों के अनेक समूह इन्हे गाते हुए देहात में फिरते हैं। उधर के जिलों में विशेषकर विहार में विदेशिया से बढ़कर दूसरे गाने लोकप्रिय नहीं है। इन गीतों में अधिकतर रसिकप्रियों और प्रियाओं की बात रहती है, परदेशी प्रेमी की और प्रेमिका की बात रहती है, इन गीतों से करुणा और विरह का रस बरसता है।

प्र.7. स्त्रियों के लोकगीत कैसे होते हैं?

उ. अनंत संख्या अपने देश में स्त्रियों के गीतों की है। वैसे तो ये नदी गीत लोकगीत ही है पर अधिकतर औरते ही इसे सिरजती है। त्योहारों पर, में नहाने जाते समय, विवाह के नटकोड़, ज्योनार के समय संबंधियों के लिए प्रेमयुक्त गाली, जन्म के समय सौहर आदि सभी अवसरों के अलग-अलग गीत हैं जो स्त्रियाँ गाती हैं।

प्र.8. लोकगीत किसके प्रतीक हैं?

उ. लोकगीत हमारी सभ्यता और संस्कृति के प्रतीक हैं। गाँव के गीतों में वास्तव में अनंत प्रकार है। जीवन जहाँ इठला-इठलाकर लहराता है, वहाँ भला आनंद के सोत की कमी हो सकती है? उदादाम जीवन के ही वहाँ के असंख्यक गानों के प्रतीक हैं।

VIII. अर्थग्राह्यता - प्रति क्रिया

आ. प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

प्र.1. लोकगीत ग्रामीण जनता का मनोरंजक साधन है। कैसे?

उ. गाँव के लोगों का जीवन लोकगीतों में ही बसता है। उनका सुख दुख विरह, आनंद सभी भाव लोकगीतों में देखे जा सकते हैं। गाँव में दिन भर काम करने के बाद चौपाल में शाम के समय बैठते हैं। वहाँ उनके विविध बोल फूट पड़ते हैं। लोकगीत के बिना ग्रामीण जनता के जीवन की कल्पना ही नहीं की जासकती। लोकगीत उनके हृदय में रचे बसे हैं।

प्र.2. हिंदी या अपनी मातृ भाषा का कोई लोक गीत सुनाइए। (छात्र स्वयं करें)

आ. वाक्य उचित क्रम में लिखिए।

1. लोकगीत है संगीत सीधे जनता के।

उ. लोकगीत सीधे जनता के गीत है।

2. वास्तव में प्रकार अनंत के गीतों के गाँव

उ. वास्तव में गाँव में अनंत गीतों के प्रकार है।

3. मदद ढोलक की से स्त्रियाँ हैं गीती।

उ. स्त्रियाँ ढोलक की मदद से गाती हैं।

इ. दिया गया गद्यांश पढ़िए और इसके मुख्य शब्द पहचानकर लिखिए।

गाँव के गीतों के वास्तव में अनंत प्रकार है। जीवन जहाँ इठला-इठलाकर लहराता है, वहाँ भला आनंद के सोतों की कमी हो सकती है? उद्दाम जीवन के ही वहाँ के असंख्यक गानों के प्रतीक है।

उ. मुख्य शब्द : गीत, वास्तव, अनंत, इठला-इठलाकर आनंद, सोतो, उद्दाम जीवन, असंख्यक गानों के प्रतीक।

ई. नीचे दिया गया लोकगीत पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

उ. (छात्रों से कक्षा में करवाएँ)

IX. अभिव्यक्ति - सृजनात्मक :

अ. इन प्रश्नों के उत्तर तीन-चार पंक्तियों में लिखिए।

1. -निबंध में लोकगीतों के किन पक्षों की चर्चा की गई है? इसके मुख्यांश बिंदुओं के रूप में लिखिए।
उ. निबंध में लोकगीतों के निम्न पक्षों की चर्चा की गई है।
 - * लोकगीत अपनी लोच ताजगी और लोकप्रियता में शास्त्रीय संगीत से भिन्न है।
 - * लोकगीत सीधे जनता के संगीत है।
 - * इसके लिए साधना की जरूरत नहीं होती है।
 - * इन गीतों में बड़ी जान होती है।
 - * जन जातियों के सामूहिक दल के रूप में भी गीत होते हैं जो अधिकतर बिरह आदि में गाये जाते हैं।
 - * विदेशिया में रसिकप्रियों और प्रियाओं की बात रहती है।
 - * लोकगीत के कई प्रकार हैं।
 - * लोकगीत देश के आदिवासियों के संगीत है।
और वे स्वयं इन गीतों की रचनाकार होते हैं।

- * लोकगीत में सुरताल, लय का बंधन नहीं होता।
2. **जैसे-जैसे शहर फैल रहे हैं और गाँव सिकुड़ रहे हैं, लोकगीतों पर उनका क्या प्रभाव पड़ रहा है?**
- उ. जैसे-जैसे शहर फैल रहे हैं गाँव सिकुड़ता जा रहा है। लोकगीत में गीतों का रूप बदलता जा रहा है। धीरे-धीरे गाँवों से गीत समाप्ति की ओर बढ़ रहे हैं। गाँव के लोककलाकार रोजी-रोटी की तलाश में शहर की ओर आ रहे हैं, लोकगीतों पर शहरोका प्रभाव पड़ने लगा है। ये सभी बाते लोक गीतों के विकास में रोड़ा हैं।
- A. 'लोकगीत' पाठ का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।**
- उ. हमारी संस्कृति में लोकगीत और संगीत का अटूट संबंध है। मनोरंजन की दुनिया में आज भी लोकगीतों का महत्वपूर्ण स्थान है। गीत-संगीत के बिना हमारा मन नीरस हो जाता है। लोकगीत अपनी लोच, ताजगी और लोकप्रियता में शास्त्रीय संगीत से भिन्न हैं। लोकगीत सीधे जनता का संगीत है। ये घर, गाँव और नगर की जनता के गीत हैं इनके लिए साधना की जरूरत नहीं होती। त्यौहारों और विशेष अवसरों पर ये गाये जाते हैं। स्त्री और पुरुष दोनों ही इनकी रचना के भागीदार हैं। ये गीत बाजों, ढोलक, करताल, झाँझ और बाँसुरी आदि की मदद से गाये जाते हैं।
- लोकगीतोंके कई प्रकार हैं। इनका एक प्रकार बड़ा ही ओजस्वी और सजीव है। यह इस देश के आदिवासियों का संगीत है। मध्यप्रदेश, दक्कन और छोटा नागपुर में ये फैले हुए हैं। पहाड़ियों के अपने-अपने गीत हैं। वास्तविक लोकगीत देश के गाँवों और देहातोंमें हैं। सभी लोकगीत गाँवों और इलाकों की बोलियों में गाये जाते हैं। चैता, कजरी, बारहमासा, सावन

आदि मिर्जापुर, बनारस आर उत्तर प्रदेश के पूर्वी जिलों में गाये जाते हैं। बाउल और भृतियाली बंगला के लोकगीत हैं। पंजाब में महिया गायी जाती है।

राजस्थानी में ढोलामारू आदि गीत गाते हैं। भोजपुर में बिदेसिया का प्रचार हुआ है। इन गीतों में अधिकतर रसिकप्रियों और प्रियाओं की बात रहती है। इन गीतों में करुणा और बिरह का रस बरसता है।

जन जातियों में भी लोकगीत गाये जाते हैं। एक दूसरे के जवाब के रूप में दल बाँधकर ये गाये जाते हैं। आल्हा एक लोकप्रिय गान है। गाँवों और नगरों में गायिकाएँ होती हैं। स्त्रियाँ ढोलक की मदद से गाती हैं। उनके गाने के साथ नाच का पुट भी होता है।

- इ. अपने आसपास के क्षेत्र में प्रचलित किसी लोकगीत का हिंदी में अनुवाद कीजिए।
उ. (अध्यापक छात्रों से करवाएँ)
- इ. लोकगीतों में मुख्यत जनता की मार्मिक भावनाएँ हैं। अपने शब्दों में इसे सिद्ध कीजिए।
उ.
- लोकगीत विशेष अवसरों पर गाए जाते हैं। उन गीतों का मुख्य विषय गाँव के तीज, त्योहार, जन्म रीति रिवाज आदि है। इसलिए इनमें जनता की मार्मिक भावनाएँ होती है। इन देहाती गीतों की रचना कोरी कल्पना पर नहीं होती इनके विषय दैनिक जीवन (रोजमर्ग) से संबंध रखते हैं। इनके राग भी-साधारणत पीयू, सारंग, दुर्गा, सावन, सोरठा आदि है। लोकगीत गाँवों और क्षेत्रीय बोलियों में गाए जाते हैं इसलिए सजीव जान पड़ते हैं। सभी ऋतुओंमें स्त्रियाँ उल्लासित होकर दल बाँधकर गाती हैं, पर होली, बरसात के कजरी आदि

उनकी अपनी चीज है जो सुनते नहीं बनती। वास्तव में ये गीत जनता के हृदय से जुड़े होते हैं इसलिए ये बड़े आहलादकर हैं।

X. भाषा की बात :

(अ) कोष्ठक में दी गई सूचना पढ़िए और उसके अनुसार कीजिए।

1. साधना, त्योहार, देहात (एक-एक शब्द का वाक्य प्रयोग कीजिए। पर्याय शब्द लिखिए)

उ. वाक्य प्रयोग :

साधना - नृत्य सीखने के लिए साधना करनी पड़ती है।

त्योहार - होली हिन्दुओं का प्रमुख त्योहार है।

देहात - देहात के लोग सीधे-सादे होते हैं।

पर्याय शब्द :

साधना - अभ्यास, रियाज

त्योहार - पर्व, उत्सव

देहात - गाँव, ग्राम

2. सजीव, परदेशी, शास्त्रीय (एक - एक शब्द का विलोम शब्द लिखिए)

विलोम शब्द :

सजीव × निर्जीव

शास्त्रीय × अशास्त्रीय

परदेशी × स्वदेशी

वाक्य प्रयोग :

सजीव - मनुष्य सजीव है और पेड़-पौधे निर्जीव हैं।

परदेशी - हमेशा परदेशी बुरे नहीं होते और न स्वदेशी अच्छे होते हैं।

शास्त्रीय - आजकल शास्त्रीय संगीत को भी अशास्त्रीय बनाया जा रहा है।

3. यह आदिवासी का संगीत है (वचन बदलकर वाक्य फिर से लिखिए)

उ. ये आदिवासियों के संगीत हैं।

आ. सूचना पढ़िए और उसके अनुसार कीजिए।

1. लोकगीत, लोकतंत्र (इस तरह 'लोक शब्द से बने दो शब्द लिखिए)

उ. लोकपाल, लोकसभा

2. गायक, कवि, लेखक (लिंग बदलिए। वाक्य प्रयोग कीजिए)

उ. 1. गायक - गायिका 2. कवि - कवयित्री 3. लेखक - लेखिका

वाक्य प्रयोग - पुलिलंग स्त्री लिंग

गायक गीत गाते हैं गायिका गीत गाती है

कवि कविता लिखते हैं। कवयित्री कविता लिखती है

लेखक लेख लिखते हैं। लेखिका लेख लिखती है।

3. धर्म, मास, दिन, उत्साह (इक प्रत्यय जोड़कर वाक्य प्रयोग कीजिए)

धर्म + इक = धार्मिक - संक्रांति एक धार्मिक त्योहार है

मास + इक = मासिक - हम मासिक पत्रिका पढ़ते हैं।

उत्साह + इक = औत्साहिक - युवकों को औत्साहिक कार्यक्रम में भाग लेना चाहिए।

इ. इन्हे समझिए और अंतर स्पष्ट कीजिए।

1. उपेक्षा - अपेक्षा 2. कृतज्ञ - कृतध्न

3. बहार - बाहर 4. दावत - दवात

1. **उपेक्षा - तिरस्कार** - हमे किसी की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए।

उ. अपेक्षा - आशा - हम हमेशा अच्छी चीजों की अपेक्षा करते हैं।

2. **कृतज्ञ - आभारी** - हम आपके आभारी हैं।

उ. कृतध्न - उपकार....न माननेवाला - हमे कृतध्न नहीं होना चाहिए।

3. **बहार - शोभा** - बागों में बहार आई है।

उ. बाहर - धूप मे घर के बाहर निकलना ठीक नहीं है।

4. **दावत - निमंत्रण** - आज मुझे दावत मे जाना है।

उ. दवात - रस्याही रखने का पात्र - मेरी दवात टूट गई।

5. **पेड़ पर बड़ा पक्षी** है पर उसके छोटे छोटे पर है।

उ. यहाँ 'पर' कारक चिह्न है

'पर' परंतु / लेकिन के अर्थ में

'पर' पंख के अर्थ में

6. **हल चलाने मात्र से ही** किसान की समस्याएँ **हल** नहीं होती।

उ. यहाँ 'हल' खेत जोतने का यंत्र है

'समाधान' के अर्थ में है।

इ. नीचे दिया गया उदाहरण समझिए / उसके अनुसार दिये गए वाक्य बदलिए।

1. **स्त्रियों द्वारा गीत**
-
- ```
graph LR; A[स्त्रियों द्वारा गीत] --> B[गाए जाते हैं]; A --> C[गाये जा रहे हैं]; A --> D[गाये जा रहे होंगे]
```

गायक के द्वारा लोकगीत गाया जाता है।

अध्यापक के द्वारा पाठ पढ़ाया जाता है।

2. लोकगीत गाँव का संगीत है।

उदाहरण : क्या लोकगीत गाँव का संगीत है?

लोकगीत गाँव का संगीत है न।

1. स्त्रियाँ ढोलक की मदद से गाती हैं।
2. लोकगीत के कई प्रकार हैं।

## 6. अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी

### I उन्मुखीकरण प्रश्नोत्तर :

प्र.1. आवाज का पर्याय क्या है?

उ. आवाज का पर्याय ध्वनि, स्वर, बोल है।

प्र.2. किसी प्राणी की अनोखी विशेषता बताइए।

उ. किसी प्राणी की अनोखी विशेषता रूप - रंग, उनकी भाषा है।

प्र.3. इस गद्यांश के लिए उचित शीर्षक दीजिए।

उ. पशु - पक्षियों की भाषा।

### उद्देश्य :

छात्रों को पत्र-लेखन की विविध शैलियों का ज्ञान कराना, उनके लेखन सृजन

के विकास के साथ-साथ उन्हे अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी का महत्व बताना है।

### विधा विशेष:

पत्र गद्य की प्रमुख विधा है। पत्र विधा पाठ में प्रेषक अपने विषय से जुड़ा पत्र

पाठक (पत्र पाने वाला) के नाम लिखता है। इसमें एक मित्र अपने दूसरे मित्र को हिंदी सीखने तथा उससे होने वाले लाभों के बारे में बता रहा है।

## II मौखिक प्रश्नोत्तर :

### प्र.1. भारत देश को स्वतंत्र कराने में हिंदी भाषा का क्या योगदान रहा होगा?

उ. भारत देश को स्वतंत्र कराने में हिन्दी भाषा का महत्वपूर्ण योगदान था। स्वतंत्रता की लड़ाई में देश के लोगों को एकता के सूत्र में बाँधने का काम हिंदी ने किया / क्योंकि संपूर्ण भारत में अधिकतर जनता इस भाषा को जानती थी सभी महान नेताओं ने देश को जागृत करने के लिए इसी भाषा को संपर्क भाषा के रूप में अपनाया था।

### प्र.2. हिन्दी भाषा की क्या विशेषता है?

उ. विश्व की सभी भाषाओं में हिन्दी की अपनी एक अलग विशेषता है। हिन्दी की लिपि देवनागरी है जो वैज्ञानिक लिपि मानी जाती है। इसमें जैसा कहा जाता वैसा लिखा और पढ़ा जाता है। यह भाषा हमारे संस्कृति सभ्यता से जुड़ी हुई है। इस भाषा का साहित्य भी विपुल है। भारत को एकता के सूत्र में बाँधने का कार्य हिन्दी करती है।

### प्र.3. हिन्दी भाषा सीखने के क्या लाभ हैं?

उ. जिनकी मातृभाषा हिन्दी नहीं है उन्हे हिन्दी सीखने से अनेक लाभ है। जैसे हिन्दी सीखने से उन्हे भारत के सभी प्राँतों की जानकारी मिल जाती है। इस से हमे भारत के सभी लोगों के साथ संपर्क करने में आसनी हो जाती है। मिडिया, फ़िल्म, उद्योगआदि के क्षेत्र में हिन्दी की उपयोगिता बढ़ रही है जिससे हमे रोजगार मिलने के अवसर प्राप्त हो सकते हैं। हिन्दी का साहित्य पढ़कर आनंद उठा सकते हैं।

### III. अर्थग्राह्यता प्रतिक्रिया :

अ. प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

प्र.1. “हिंदी विश्वभाषा है।” इस कथन के बारे में अपने विचार व्यक्त कीजिए।

उ. ‘हिन्दी विश्वभाषा’ यह कथन शतप्रतिशत सत्य है। आज हिन्दी न केवल भारत

तक सीमित है बल्कि विश्व के अनेक देशों में इसका प्रचार और प्रसार हो रहा है।

विश्व में चीनी, अंग्रेजी, फ्रेंच के बाद सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा हिन्दी ही है।

विश्व के अनेक विश्वविद्यालयों में हिन्दी का अध्ययन चल रहा है, म्यांमार, सूरीनाम, टुंबेगो, द.आफ्रीका, कुवैत इंग्लैण्ड, जर्मनी, जापान, मॉरिशस आस्ट्रेलिया आदि देशों में हिन्दी की माँग बढ़ रही है। सारा विश्व हिन्दो का महत्व जान रहा है। हर वर्ष 10 जनवरी को विश्व हिन्दी दिवस मना रहे हैं।

प्र.2. भारत में अनेकता में एकता का प्रतीक हिंदी है। कैसे?

उ. भारत देश में अनेक जाति, धर्म के लोग रहते हैं। इनकी भाषा भी अलग-अलग है।

इस विभिन्नता को दूर करके उनमें एकता की भावने जगाते वाली भाषा हिंदी ही है।

हिंदी संपूर्ण राष्ट्र को एकता के सूत्र में बाँधे रखती है। हिन्दी प्रदेश या अहिन्दी प्रदेशोंके लोग रुचि से हिन्दी सीखते हैं। इसलिए हम कह सकते हैं कि भारत में अनेकता में एकता का प्रतीक हिन्दी है।

आ. पाठ के आधार पर निम्न प्रश्नों के उत्तर हाँ या नहीं में दीजिए :

(टेक्स्ट बुक में ही करवाना है)

इ. नीचे दिये गये वाक्य पाठ के आधार पर उचित क्रम में लिखिए :

(टेक्स्ट बुक में ही करवाना है)

ई. नीचे दिया गया विज्ञापन पढ़िए। प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

(बच्चों से कक्षा में करवाना है)

#### IV. अभिव्यक्ति - सृजनात्मकता :

अ. इन प्रश्नों के उत्तर तीन-चार पंक्तियों में लिखिए।

प्र.1. सांस्कृतिक दृष्टि से हिन्दी का क्या महत्व है?

उ.

किसी भी देश के आचार-विचार, रहन-सहन वेशभूषा, खान-पान आदि उस देश की संस्कृति प्रकट करती है। इन में भाषा का महत्व पूर्ण स्थान है। हिन्दी भारत की राष्ट्रभाषा होने से वह हमारी सभ्यता और संस्कृति की गरिमा को बढ़ाती है। संस्कृतिके विकास में इसने अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इसका साहित्य भी भारतीय संस्कृति को उजागर करता है।

प्र.2. हिन्दी देश को जोड़ने वाली कड़ी है। इसे अपने शब्दों में सिद्ध कीजिए।

उ.

भारत बहुभाषिक देश है। यहाँ विभिन्न प्राँतों में भिन्न-विभिन्न भाषा बोलने वाले लोग रहते हैं। भारत के सभी प्राँतों से जुड़ने के लिए एक भाषा की आवश्यकता है जिसे सारे भारतवासी जानते हैं। ऐसी भाषा हिन्दी है। क्योंकि भारत के उत्तर से दक्षिणतक और पूर्व से पश्चिम तक सभी इस भाषा को जानते हैं। इसलिए हम कह सकते हैं कि हिन्दी देश को जोड़ने वाली कड़ी है।

**आ. राष्ट्रीय एकता की दृष्टि से हिन्दी महत्वपूर्ण भाषा है। इस पर अपने विचार व्यक्त कीजिए :**

उ.

राष्ट्रभाषा समस्त देश की जनता की भाषा होती है। देश के सामाजिक, सांस्कृतिक, साहित्यक, सभ्यता आदि के विकास में राष्ट्रभाषा महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह संपूर्ण राष्ट्र को एकता के सूत्र में बाँध कर रखती है। हिन्दी भाषा में यह सभी गुण है। वह भी भारत के लोगों का जोड़ने का कार्य करती है। स्वतंत्रता संग्राम के समय यह प्रत्येक भारतीय की भाषा बनगई थी। आज वर्तमान समय में भी प्रत्येक भारतीय त्रिभाषा सूत्र की शिक्षा नीति के कारण हिन्दी भाषा से परिचित है और इस भाषा के माध्यम से विचारों का आदान प्रदान अच्छी तरह कर सकते हैं। हिन्दी में अनेक भाषाओं के शब्दों का समावेश हुआ है। यह सरल भाषा हैं। इस प्रकार राष्ट्रीय एकता की दृष्टि से यह भारत वासियों के लिए एकता की कड़ी बन चुकी है।

**इ. 'हिन्दी भाषा' पर एक छोटा सा निबंध लिखिए।**

(बच्चों को गृहकार्य के रूप में करना है)

**ई. मनोरंजन की दुनिया में हिन्दी के महत्व पर प्रकाश डालिए।**

उ. वर्तमान में हिन्दी का प्रचार और प्रसार बढ़ रहा है। हिन्दी प्रत्येक क्षेत्र में विकसित

हो रही है। मनोरंजन की दुनिया में हिन्दी का महत्व बढ़ रहा है। हिन्दी की फिल्में,

हिन्दी के गीत, संगीत व साहित्य की भारत में नहीं बल्कि विश्व में इसकी माँग बढ़रही है।

अनुवाद और डबिंग के माध्यम से हिन्दी साहित्य व संगीत का मनोरंजन संसार के

कोने-कोने में पहुँच रहा है। टेलिविजन पर भी हिन्दी दर्शकों की संख्या बढ़रही है।

## V. भाषा की बात :

- A. कोष्ठक में दी गयी सूचना पढ़िए और उसके अनुसार कीजिए।
1. भाषा, समाधान, संकल्प (एक-एक शब्द का वाक्य प्रयोग कर पर्याय शब्द लिखिए)
1. भाषा - वाणी, बोली  
वाक्य : भाषा मनुष्य जीवन का आधार है।
  2. समाधान - हल, निदान  
वाक्य : अध्यापक ने समस्या का समाधान किया।
  3. संकल्प - निश्चय, प्रण  
वाक्य : मैंने मेहनत करने का संकल्प लिया।
2. एकता, स्वदेश, प्राचीन (एक-एक शब्द का विलोम लिखिए उसका वाक्य प्रयोग करे)
1. एकता - अनेकता  
वाक्य : भारत में अनेकता में एकता के दर्शन होते हैं।
  2. स्वदेश - विदेश  
वाक्य : हमें अपने स्वदेश से प्रेम है।
  3. प्राचीन - नवीन (आधुनिक)  
वाक्य : संस्कृत प्राचीन भाषा है।
3. परीक्षा, संस्था, दिशा (एक-एक शब्द का वचन बदलिए और वाक्य प्रयोग कीजिए)
1. परीक्षा - परीक्षाएँ  
वाक्य : मेरी वार्षिक परीक्षाएँ समाप्त हुईं।

2. संस्था - संस्थाएँ

वाक्य : भारत में अनेक समाज सेवी संस्थाएँ हैं।

3. दिशा - दिशाएँ

वाक्य : सूर्य से सारी दिशाएँ प्रकाशित होती हैं।

### आ. सूचना पढ़िए और उसके अनुसार कीजिए।

1. सकुशल, अनुक्रम, अनुचित (उपसर्ग पहचानिए)

1. सकुशल - स

2. अनुक्रम - अनु

3. अनुचित - अन्

2. वार्षिक, खुशी, भारतीय (प्रत्यय पहचानिए)

1. वार्षिक - इक

2. खुशी - ई

3. भारतीय - ईय

3. देश को एकता के सूत्र में बाँधने के लिए एक भाषा की आवश्यकता हुई।

(कारक पहचानिए)

उ. को - कर्म कारक

के - संबंध कारक

में - आधिकरण कारक

के लिए - सम्प्रदान कारक

की - संबंध कारक

### इ. सूचना पढ़िए और उसके अनुसार कीजिए।

1. सलाह, सरकार, संविधान, संस्कृति, समाधान (लिंग की पहचान कीजिए)

उ. 1. सलाह - स्त्रीलिंग

2. सरकार - स्त्रीलिंग

3. संविधान - पुलिंग

4. संस्कृति - स्त्रीलिंग

5. समाधान - पुलिंग

2. जो विश्व के सभी देशों से जुड़ा हो। (एक शब्द में लिखिए)

उ. वैश्विक, अंतर्राष्ट्रीय

3. अद्वितीय (अनेक शब्दों में लिखिए)

उ. जिसके समान कोई दूसरा न हो।

### इ. नीचे दिये गये वाक्य रचना की दृष्टि से समझिए।

1. मुझे पूरा विश्वास है कि तुम हिंदी से अपना भविष्य बनाओगे।

उ. मिश्र वाक्य

2. जो जानकारी दी गयी है उसे समझिए।

उ. मिश्र वाक्य

3. तुमने पूछा कि हिंदी का क्या महत्व है?

उ. मिश्र वाक्य

## 7. भक्ति - पद

### उन्मुखीकरण :

गुरु गोविंद दोऊ खडे, काके लागौ पाय।

बलिहारी गुरु आपने, गोविंद दियो बताय॥

### I. प्रश्नोत्तर :

#### प्र.1. भगवत् भक्ति का ज्ञान कौन देता है?

उ. भगवत् भक्ति का ज्ञान गुरु देता है।

#### प्र.2. गुरु को किससे श्रेष्ठ बताया गया है? क्यों?

उ. गुरु को भगवान् से श्रेष्ठ बताया गया है। क्योंकि भगवत् भक्ति का ज्ञान हमें गुरु ने ही दिया है।

#### प्र.3. 'निराडंबर भक्ति भावना' का क्या महत्व है?

उ. सच्चा भक्त निराडंबर होता है। वह भगवान् की उपासना सच्चे हृदय से करता है। न की ठाठ-बाट से।

### उद्देश्य :-

छात्रों को प्राचीन साहित्य से अवगत कराते हुए उनमें काव्य रचना की विविध शैलियों का ज्ञान कराना है। भारतीय साहित्य व संस्कृति के प्रति रुचि उत्पन्न कर निराडंबर भक्ति मार्ग का महत्व बताना है।

## विधा विशेष :

इसमें एक चौपाई और एक पद है। चौपाई मात्रिक सम छंद है। चौपाई और पद विशेष लय और ताल से गाये जाते हैं। जो बच्चों के रागात्मक मन को छू लेते हैं। चौपाई छंद चार पंक्तियों का होता है, इसकी प्रत्येक पंक्ति में सोलह मात्राएँ होती हैं।

## विषय प्रवेश :

प्राचीन काल से ही भगवन्-स्मरण भगवत्-भक्ति को महत्व दिया गया है। भगवान् के नाम रूपी नाव से ही संसार रूपी सागर से तर सकते हैं। इसकी सही राह का मार्गदर्शन गूरु द्वारा होता है। ऐसी ही भक्ति संबंधी रैदास की चौपाइयाँ और मीराबाई के पद हम इस पाठ के अंतर्गत पढ़ेंगे।

## कवि परिचय :

कवि - रैदास

जीवनकाल - सन् 1482 - सन् 1527

प्रसिद्ध रचना - 'गुरु ग्रंथ साहिब' में इनके पद संकलित हैं। विशेष - ज्ञानमार्ग शाखा के प्रमुख कवियों में से एक।

## कवयित्री - मीराबाई

जीवनकाल - सन् 1498 - सन् 1573

प्रसिद्ध रचना - मीराबाई पदावली

विशेष - कृष्णोपासक कवयित्रियों में श्रेष्ठ। माधुर्य भाव प्रयोग

## शब्दार्थ : रैदास

|          |          |          |         |
|----------|----------|----------|---------|
| 1. प्रभु | = भगवान् | 2. जाकि  | = जिसके |
| 3. बास   | = गंध    | 4. समानी | = समाना |
| 5. घन    | = बादल   | 6. मोरा  | = मोर   |

- |           |   |       |            |   |          |
|-----------|---|-------|------------|---|----------|
| 7. चितवहि | = | देखना | 8. चकोर    | = | एक पक्षी |
| 9. सोनहि  | = | सोना  | 10. स्वामी | = | मालिक    |
| 11. दासा  | = | दास   |            |   |          |

### शब्दार्थ : मीराबाई

- |            |   |                 |             |   |          |
|------------|---|-----------------|-------------|---|----------|
| 1. म्हँ    | = | मैं             | 2. रतन      | = | रत्न     |
| 3. धन      | = | सम्पत्ति        | 4. अमोलक    | = | अनमोल    |
| 5. म्हारे  | = | हमारे           | 6. किरपा    | = | कृपा     |
| 7. पूँजी   | = | धन              | 8. खोवायो   | = | खोना     |
| 9. खरच     | = | खर्च            | 10. खूँहै   | = | कम, घटना |
| 11. लूटै   | = | लूटना           | 12. बढ़न    | = | बढ़ना    |
| 13. सवायो  | = | एक चौथाई        | 14. खेवटिया | = | केवट     |
| 15. भवसागर | = | संसार रूपी सागर | 16. तर      | = | पार करना |
| 17. गिरिधर | = | श्रीकृष्ण       | 18. नागर    | = | चतुर     |
| 19. हरख    | = | हर्ष, खुशी      | 20. जस      | = | यश       |
| 21. पायो   | = | पाना            |             |   |          |

### प्रश्नोत्तर :

#### प्र.1. प्रभु के प्रति रैदास की भक्ति कैसी है?

- उ. रैदास भक्तिकाल के कवि है। रैदास ज्ञानाश्रयी शाखा के निर्गुण भक्तिधारा के कवि हैं। ये ईश्वर को स्वामी और अपनेआप को दास समझकर ईश्वर की भक्ति करते हैं। इस प्रकार प्रभु के प्रति रैदास की भक्ति दास्य भक्ति है।

#### प्र.2. कवि ने अपने आप को मोर क्यों माना होगा?

- उ. घने बादलों को देखकर मोर आनंद विभोर होकर नाचता है। उसे काले बादलों से प्रेम है। उसी प्रकार रैदास भगवान् रूपी बादल को देखकर आनंद विभोर हो जाता है। इसलिए कवि ने अपने आपको मोर माना होगा।

#### प्र.3. संत किसे कहते हैं?

- उ. जो व्यक्ति हमेशा परमार्थ में लगा रहता है, जिसमें सात्त्विक गुण हो, जो ईश्वर भक्त हो उसे संत कहते हैं। वह लोगों को, भक्तों को शिष्यों को भगवान् का मुक्ति पाने का रास्ता बताता है।

#### प्र.4. श्रीकृष्ण के प्रति मीरा की भक्ति कैसी है?

- उ. श्रीकृष्ण के प्रति मीरा की भक्ति प्रेम प्रधान माधुर्य भाव की है। वह माधुर्य भाव से अपने प्रभु श्रीकृष्ण का गुण-गान किया करती थी।

## अर्थग्राह्यता - प्रतिक्रिया :

### अ. प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

#### प्र.1. रैदास व मीरा की भक्ति भावना में क्या अंतर है?

उ. रैदास व मीरा दोनों हिन्दी साहित्य का स्वर्णयुग माने जाने गले भक्तिकाल के प्रमुख कवि हैं। रैदास मीरा के गुरु हैं और मीरा रैदास की शिष्या थी। रैदास निर्गुण भक्ति धारा के ज्ञानाश्रयी शाखा के कवि हैं। उनकी भक्ति भावना निर्गुण दार्श्य या सख्य भाव की है। जबकि मीराबाई की भक्ति-भावना सगुण है। मीरा कृष्ण भक्ति शाखा की कवयित्री है। मीरा की भक्ति माधुर्य भाव की है। वह श्रीकृष्ण को अपना प्रति मानकर उनका गुण-गान किया करती थी।

#### प्र.2. हमारे जीवन में भक्ति भावना का क्या महत्व है? चर्चा कीजिए।

उ. हमारे जीवन में भक्ति भावना का बड़ा महत्वपूर्ण स्थान है। भक्ति से मनुष्य में सात्त्विक गुणों का विकास होता है। भक्ति भावना के कारण व्यक्ति ईश्वर की भक्तिमें लीन रहकर सादगी भरा जीवन बिताता है। भक्ति से हृदय के क्लेश समाप्त हो जाते हैं। भक्ति से शांति और आनंद की प्राप्ति होती है। भक्ति से मनुष्य को जीवनमुक्ति होने का मार्ग मिलता है।

### आ. पंक्तियाँ उचित क्रम में लिखिए।

1. प्रभुजी, तुम पानी हम चंदन।  
प्रभुजी, तुम चंदन हम पानी।
2. मीरा के प्रभु नागर गिरिधर, हरख-हरख पायो जस॥  
मीरा के प्रभु गिरिधर नागर, हरख-हरख जस पायो॥

### इ. नीचे दी गई पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए।

१. सत की नाँव केवटिया सत्गुरु, भवसागर तर जाये

उ. प्रसंग - प्रस्तुत पंक्ति भावित-पद-मीराबाई से दी गयी है। जिसकी कवयित्री मीराबाई है।

**भाव :** मीराबाई सतगुरु ईश्वर की महिमा बताते हुए कहती है कि, ईश्वर ही सत्य है। ईश्वर नाम के सहारे हो हम जीवन रूपी सागर पार कर सकते हैं। ईश्वर भक्ति ही जीवन रूपी भवसागर से मुक्तिदिलप्ते है।

### २. प्रभुजी, तुम चंदन हम पानी, जाकी अंग-अंग

उ. प्रसंग : प्रस्तुत पंक्ति भक्ति-पद रैदास से ली गयी है जिसके कवि रैदास है।

**भाव:** रैदास ईश्वर से कहते हैं कि हे! प्रभु - आप चंदन के समान श्रेष्ठ हैं। आप हरे एक व्यक्ति के अंदर निवास करते हैं। आपको अनुभव किया जा सकता है जिस प्रकार चन्दन के सम्पर्क में आकर पानी भी सुगंधित हो जाता है उसी प्रकार मेरे जैसे तुच्छभक्त आपके निकट आकर आपका गुण-गान कर धन्य हो जाते हैं।

### इ. पद्यांश पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

(झटका गदृद टततदू से करवाए)

**सृजनात्मक - अभिव्यक्ति**

अ. इन प्रश्नों के उत्तर तीन-चार पंक्तियों में लिखिए।

प्र.१. रैदास जी ने ईश्वर की तुलना चंदन, बादल और मोती से की है। आप ईश्वर की तुलना किससे करना चाहेंगे? और क्यों?

उ. हम ईश्वर की तुलना, दानी, स्वामी माँ-बाप, गुरु मित्र से करना चाहेंगे। क्योंकि

ईश्वर दीनों पर दयाकरने वाले हैं। ईश्वर दानी है तो मैं भिखारी हूँ। ईश्वर स्वामी है तो मैं सेवक हूँ। इतना हो नहीं ईश्वर माँ-बाप, गुरु मित्र सब प्रकार से हमारा हित करने वाले हैं।

### प्र.2. मीरा की भक्ति भावना कैसी है? अपने शब्दों में लिखिए।

उ.

मीरा भक्तिकाल की कृष्णोपासक कवियों में प्रसिद्ध कवयित्री है। मीरा बचपन से ही कृष्ण की भक्ति करती थी। मीरा कृष्ण को अपना पति मान कर भक्ति भावना में लीन रहकर भक्ति पद गाया करती थी। उनकी भक्ति माधुर्य भक्ति है। वे कृष्ण से प्रेम करती थी।

### प्र.3. ‘मीरा के पद’ का भाव अपने शब्दों में लिखिए।

उ.

प्रस्तुत पद में मीराबाई गुरु की महिमा का गुणगान किया है। मीराबाई कृष्ण भक्ति शाखा की प्रसिद्ध कवयित्री है। उनकी भक्ति माधुर्यभाव की है। रैदास जी उनके गुरु माने जाते हैं। प्रस्तुत पद में मीराबाई ने गुरु की महिमा का गुणगान किया है मीरा कहती है कि मैंने तो अपने गुरु की कृपासे राम रत्न रूपी धन को पाया है। मेरे गुरु ने मुझे भक्तिरूपी अमूल्य वस्तु दी है। जो मेरे जन्म-जन्म की पूँजी है जिसे मैंने संसार में लुटा दिया है। प्रभु-भक्ति ऐसी पूँजी है जिसे चोर भी नहीं चुरा सकता उसे जितना खर्च करो वह उतना ही बढ़ता जाता है। जीवन रूपी सत्य की नाव के केवट मेरे गुरु हैं जिसके सहारे मैं संसार रूपी भव सागर को पार कर लूँगी मेरे तो प्रभु चतुर गिरिधर गोपाल है जिसका यश मैं झूम झूम कर गा रही हूँ।

### इ. भक्ति भावना से संबंधित छोटी सी कविता का सूजन कीजिए।

उ. छात्र स्वयं करे

### ई. भक्ति और मानवीय मूल्यों के विकास में भक्ति साहित्य किस प्रकार सहायक हो सकता है?

उ.

हमारे जीवन में भक्ति और मानवीय मूल्यों का महत्वपूर्ण स्थान है। भक्ति और मानवीय मूल्य एक दूसरे के पूरक हैं। भक्ति से ही मनुष्य में मानवीय मूल्यों की स्थापना की जा सकती है। भक्ति साहित्य भक्ति और मानवीय मूल्यों की स्थापना करने का प्रमुख माध्यम है। इनकी रचना का प्रमुख उद्देश्य ही लोगों को भक्ति मार्ग पर लाकर समाज में मानवीय मूल्यों की स्थापना करना है। आज के वर्तमान युग में इनका महत्व सर्वोपरि है क्योंकि आधुनिक समाज में मानवीय मूल्यों का ह्रास बड़ी तीव्र गति से हो रहा है। इसलिए भक्ति और मानवीय मूल्यों के विकास में भक्ति साहित्य अनेक प्रकार से सहायक हो सकता है।

#### भाषा की बात :

### अ. सूचना पढ़िए। उसके अनुसार कीजिए।

1. प्रभु, पानी, चंद्र (वाक्य प्रयोग कीजिए) पर्यायवाची शब्द लिखिए।

1. प्रभु - मेरे **प्रभु** दयालु है। (पर्याय शब्द - भगवान् ईश्वर, स्वामी)

2. पानी - पानी जीवन का मूलाधार है। (पर्यायवाची - जल, नीर, वारि)

3. चंद्र - रात में **चंद्र** रोशनी देता है। (पर्यायशब्द - चाँद, चंदा, शशि, सोम)

2. स्वामी, गुरु, दिन (विलोम शब्द लिखिए। वाक्य प्रयोग कीजिए)

1. स्वामी × सेवक /दास

वाक्य : हनुमान श्रीराम के सेवक थे और राम उनके स्वामी थे।

2. गुरु × शिष्य

वाक्य : गुरु कहानी सुनाते हैं तो शिष्य कहानी सुनता है।

3. दिन × रात

वाक्य : हम दिन में जगते हैं और रात में सोते हैं।

3. चदंन, सभी, भख्ती (वर्तनी सही कीजिए)

चदंन - चंदन

सभी - सभी

भख्ती - भक्ति

A. सूचना पढ़िए। उसके अनुसार कीजिए।

1. बन, रतन, किरपा (तत्सम रूप लिखिए)

बन - वन

रतन - रत्न

किरपा - कृपा

2. जग, नाँव, अमोलक (अर्थ लिखिए)

जग - दुनिया

नाँव - नौका

अमोलक - अमूल्य

**इ. वचन बदलकर वाक्य फिर से लिखिए।**

1. **मोती** सागर में मिलता है।

उ. मोती सागर में मिलते हैं।

2. धागे से **माला** बनती है।

उ. धागे से मालाएँ बनती हैं।

3. **मोर** सुन्दर पक्षी है।

उ. मोर सुंदर पक्षी है।

**इ. नीचे दिया गया उदाहरण समझिए। पाठ के अनुसार उचित शब्द लिखिए।**

1. **हे प्रभुजी !तुम**      2. **हे प्रभुजी ! हम**
- 
- चंदन  
घन-बन  
मोती  
स्वामी
- पानी  
मोरा  
धागा  
दासा
2. **छंद :** कविता में प्रयुक्त होने वाले वर्ण, मात्रा, यति आदि के संगठन को छंद कहते हैं। चौपाई छंद एक मात्रिक सम छंद है। जिसमें चार चरण होते हैं। प्रत्येक चरण में सोलह मात्राएँ होती है।

**उदाहरण :** | | S || S || | | S S

प्रभुजी तुम चंदन हम पानी

S S || | | S | | S S

जाकी अँग अँग बास समानी

। । S । । । । । । । S S

प्रभुजी तुम घन-बन हम मोरा

S S । । । । S । । S S

जैसे चितवहि चंद्र चकोरा

SakShieducation.com

## 8. स्वराज्य की नींव

लेखक - विष्णु प्रभाकर

### I. उन्मुखीकरण प्रश्न :

#### प्र.1. शासक को विपत्ति की हालत में कैसे काम लेना चाहिए?

उ. शासक को विपत्ति की हालत में धैर्य और संयम स्फूर्ति से काम लेना चाहिए।

#### प्र.2. आपकी नज़र में आदर्श शासक के लक्षण क्या हो सकते हैं ?

उ. मेरी नज़र में तो आदर्श शासक का लक्षण यह है कि उसमें अधिकार में क्षमा गुण होना चाहिए।

#### प्र.3. सुव्यवस्थित शासन के गुण क्या हो सकते हैं?

##### उ. सुव्यवस्थित शासन के गुण :

1. सबका बराबर ध्यान रखना चाहिए।

2. विपत्ति की हालत में धैर्य और समय स्फूर्ति से काम लेना चाहिए।

3. कानून और नियमों का समान रूप से अनुसरण करना चाहिए।

इसी के साथ अधिकार में क्षमा का गुण भी रखना चाहिए।

### उद्देश्य :

छात्रों को साहित्य में एकांकी विधा से परिचित कराना, एकांकी की भाषा व रचना शैली से अवगत कराना और एकांकी लेखन के लिए प्रोत्साहित करना एवं इसके साथ-साथ छात्रों में देश के लिए समर्पित होने की भावना का विकास करना इसका उद्देश्य है।

## लेखक परिचयः

विष्णु प्रभाकर का जन्म सन् 1912 में हुआ। वे आदर्शप्रिय व्यक्ति थे। इन्हें प्रेमचंद परंपरा का 'आदर्शोन्मुख यथार्थवादी' लेखक कहा जाता है। 'आवारा मसीहा' नामक रचना पर इन्हें 'सोवियत लैंड नेहरु पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। भारत सरकार ने इन्हें 'पदम भूषण' सम्मान से सम्मानित किया है।

## विधा विशेष :

एकांकी साहित्य की वह विधा है, जो नाटक के समान अभिनय से संबंधित हैं। एकांकी का अर्थ है - एक अंक वाला। एकांकी में किसी एक ही समस्या को बताया जाता है। यह एक ऐतिहासिक घटना प्रधान एकांकी है।

## II. शब्दार्थ :

- |                                                   |                                                |
|---------------------------------------------------|------------------------------------------------|
| 1. नींव = बुनियाद, मूलाधार                        | 2. मर्दग्नी = साहसी (पुरुष जैसा साहस रखने वाली |
| 3. तंबू = खेमा, डेरा                              | 4. थपेड = धक्का, ठोकर                          |
| 5. जूझना = लड़ना                                  | 6. नाविक = मल्लाह, केवट                        |
| 7. मशगूल = कार्यरत, काम में लगा हुआ               |                                                |
| 8. तथ्य = सत्य, वास्तविकता                        | 9. मतलब = अर्थ                                 |
| 10. दुत्कार = तिरस्कार                            | 11. कचोट = चुभना                               |
| 12. झंकार = पायल की ध्वनि                         | 13. झनक उठना = झन झनाहट                        |
| 14. कूच = रवानगी                                  | 15. चाटुकार = चापलूसी करनेवाला                 |
| 16. जागीर = राजा की ओर से पुरस्कार में दी गई जमीन |                                                |
| 17. नूपुर = घुँघरु                                | 18. कलंक = निंदा, बदनामी                       |

### III. प्रश्नोत्तर :

#### प्र.1. लक्ष्मीबाई किससे बातें कर रही हैं?

उ. लक्ष्मीबाई अपनी सहेली कर्नल जूही से बातें कर रही हैं।

#### प्र.2. उन्हें किस बात की चिंता सता रही है?

उ. झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई ने प्रतिज्ञा की थी कि मैं अपनी झाँसी नहीं दूँगी। लेकिन धीरे-धीरे झाँसी कालपी, गवालियर उनके हाथो से जा रहे थे अंग्रेजों का शिकंजा मजबूत हो रहा था। उसे कैसे रोके यही चिंता उन्हें सता रही थी और रानी के सेना नायक ऐशो आराम में मशगुल थे।

#### प्र.3. लक्ष्मी बाई तात्या से क्यों नाराज थीं? तात्या ने उन्हें क्या आश्वासन दिया?

उ. तात्या टोपे झाँसी के सेनापति थे। वे वीर एवं रघुनाथराव के स्वामीभक्त सेवक थे। रघुनाथराव जो झाँसी (राज्य) के प्रतिनिधि थे वो विलासिता, ऐशोआराम में डूबे थे। लक्ष्मीबाई तात्या से नाराज थी। स्वराज्य की रक्षा के लिए डट कर अंग्रेजी फौज से लड़ेंगे और स्वतंत्रता की रक्षा करेंगे। यही आश्वासन तात्या ने लक्ष्मीबाई को दिया।

#### प्र.4. लक्ष्मीबाई साहसी नारी थीं? उदाहरण के द्वारा सिद्ध कीजिए।

उ. लक्ष्मीबाई साहसी नारी थीं। झाँसी के नवाब, सेनापति सरदार सब ऐशो आराम में मशगूल थे परंतु रानी अपने राज्य को बचाने की हर एक कोशिश कर रही थीं।

रानी ने महिला सैनिकों को इकट्ठा करके युद्ध की तैयारी की थी। रानी कहती है कि हम सब मिलकर तो स्वराज्य प्राप्त करके रहेंगे या स्वराज्य की नींव का पत्थर बनेंगे। इन कथनों से सिद्ध होता है कि लक्ष्मीबाई साहसी थीं।

## अर्थग्राहयता - प्रतिक्रिया :

### अ. प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

प्र.1. मार्ग में हिमालय के अड़ने, डरावनी लहरों के थपेड़े मारने, नाविकों के सो जाने से क्या अभिप्राय है?

उ. झाँसी रानी लक्ष्मीबाई के अधिकार में थी परन्तु अंग्रेज उसे छीनने के प्रयत्न कर रहे थे। रानी के सामने हिमालय की तरह रुकावटें खड़ी थीं। युद्ध भूमि से आने वाली खबरें डरावनी लहरों के थपेड़े जैसी थीं। झाँसी की रक्षा करना कठिन हो गया। उसकी रक्षा करने का आश्वासन (भरोसा) देने वाले रावसाहेब एवं तात्या टोपे ऐसे नाविक थे जो विलासिता में व्यस्त थे। अर्थात् जिन पर झाँसी की रक्षा की जिम्मेदारी थी वही गैरजिम्मेदार हो गए।

प्र.2. यह एकांकी सुनने के बाद उस समय की किन परिस्थितियों का पता चलता है?

उ. यह एकांकी सुनने के बाद उस समय की परिस्थितियों के बारे में यह पता चलता है कि भारत के विभिन्न राज्यों में राजाओं में एकता नहीं थी। वे विलासिता में डूबे थे। राज्य के प्रति लापरवाह थे। उस समय की गंभीर स्थिति को समझने में वे असफल थे। वे रानी लक्ष्मीबाई जैसी वीरांगनाओं एवं देशभक्तों को सही समय पर सही दिशा में साथ नहीं दे रहे थे।

### आ. पाठ पढ़िए। प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

प्र.1. तात्या कौन थे?

उ. तात्या सरदार थे। वे रावसाहेब को अपने तन-मन के स्वामी मानते थे। सेनापति होने के नाते उनपर बहुत सारी जिम्मेदारियाँ थीं।

### प्र.2. बाबा गंगादास ने रानी लक्ष्मीबाई से क्या कहा था?

- उ. बाबा गंगादास ने रानी लक्ष्मीबाई से कहा था कि “जब तक हमारे समाज में छुआछूत और ऊँच-नीच का भेद नहीं मिट जाता, जब तक हम विलासप्रियता को छोड़कर जनसेवक नहीं बन जाते, तब तक स्वराज्य नहीं मिल सकता। वह मिल है केवल सेवा, तपस्या और बलिदान से।”

### प्र.3. रानी लक्ष्मीबाई ने क्या प्रतिज्ञा की थी?

- उ. रानी लक्ष्मीबाई ने प्रतिज्ञा की थी कि मैं अपनी झाँसी नहीं दूँगी।

### प्र.4. जूही तात्या का पक्ष क्यों लेती है?

- उ. जूही तात्या को अपना स्वामी मानतो है। इसलिए जूही तात्या का पक्ष लेती है।

### इ. पाठ के आधार पर आशय स्पष्ट कीजिए।

#### 1. स्वराज्य प्राप्ति से बढ़कर है स्वराज्य की स्थपना के लिए भूमि तैयार करना, स्वराज्य की नींव का पथर बनना।

- उ. यह वाक्य जूही लक्ष्मीबाई से कहती है। जो कभी बाबा गंगादास ने उन्हें कहा था। स्वराज्य प्राप्त करने में पूरी तरह से समर्थ ना भी हो तो स्वराज्य की लड़ाई में भाग लेकर मर मिट कर अन्य देश भक्तों को स्पूर्ति देने के लिए नींव का पथर तो बन ही सकते हैं। जिससे देशभक्तों में देशभावित की भावना प्रबल होगी। यही इसका आशय है।

## प्र.2. शंकाएँ अविश्वास पैदा करेंगी और उस अविश्वास से उत्पन्न निराशा को दूर करने के लिए पायल की झंकार और भी झलक उठेगी।

उ. यह वाक्य मुंदर, लक्ष्मीबाई और जूही से कहती है। उसके कहने का तात्पर्य यह है कि लक्ष्मीबाई अगर सेनापति, नवाब, सरदार, रावसाहेब इन्हें शंका की नज़र से देखेंगी तो उनमें अविश्वास बढ़ेगा और अविश्वास के बढ़ने से वो निराशा में डूबेंगे तथा निराशा को दूर करने के लिए नृत्य, विलासिता का सहारा लेंगे। अर्थात् निराशा को दूर करने के लिए पायल की झंकार झलक उठेगी। यही इस वाक्य का आशय है।

## ई. गद्यांश पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

गद्यांश ..... टेक्स्ट बुक नं. 48

## IV. प्रश्नोत्तर :

### प्र.1. यहाँ किसके बारे में बताया गया है?

उ. महिलाओं तथा उनके अधिकारों के बारे में बताया गया है।

### प्र.2. अनुच्छेद 15(1) में क्या बताया गया है?

उ. अनुच्छेद 15(1) में यह बताया गया कि राज्य द्वारा कोई भेद-भाव नहीं करना है।

### प्र.3. किस अनुच्छेद के अनुसार महिलाओं को समान कार्य के लिए समान वेतन की बात कही गयी है?

उ. अनुच्छेद 39(घ) में महिलाओं को समान कार्य के लिए समान वेतन की बात कही गयी है।

## V. अभिव्यक्ति - सृजनात्मकता :

### अ. इन प्रश्नों के उत्तर तीन-चार पंक्तियों में लिखिए।

#### प्र.1. एकांकी के आधार पर बताइए कि 'स्वराज्य की नींव' का क्या तात्पर्य है?

उ. स्वराज्य प्राप्त करना उत्तम है। स्वराज्य प्राप्त करने में पूरी तरह समर्थ नहीं है फिर भी कोशिश कर रहे हैं और देशभक्ति में मर मिट रहे हैं। इससे दूसरे वीर देशभक्तों के सामने एक मिसाल कायम हो रही है और देशभक्तों को इससे प्रेरणा, स्फूर्ति मिलेगी और वे भी देश के लिए स्वराज्य के लिए आगे आयेंगे। यही 'स्वराज्यकी नींव' का तात्पर्य है।

#### प्र.2. महारानी लक्ष्मीबाई का कौनसा कथन तुम्हें अच्छा लगा ? क्यों?

उ. "नूपुरों की झंकार के स्थान पर तोपों का गर्जन होने दो।" महारानी लक्ष्मीबाई का यह कथन मुझे अच्छा लगा। क्योंकि वह स्वराज्य-प्राप्ति के युद्ध का समय था। उस समय विलासिता में मशगूल रहने का समय नहीं होता। युद्ध के लिए तत्पर रहना चाहिए। नूपुरों की झंकार ऐशो आराम विलासिता का प्रतीक है और तोपों का गर्जन भीषण युद्ध का प्रतीक है। समय आचुका था जहाँ नूपुरों की जगह तोपों की आवाज सुनाई देनी चाहिए थी।

### आ. वीरांगना लक्ष्मीबाई देशभक्ति की एक अद्भुत मिसाल थीं? स्पष्ट कीजिए।

उ.

लक्ष्मीबाई ने सच्चे अर्थों में देश की स्वतंत्रता की नींव रखी थी। वह झाँसी को स्वतंत्रता तथा स्वराज्य दिलाने के लिए अंग्रेजी सरकार से बड़ी वीरता के साथ युद्धकरती है। नारी सेना को तैयार करती है। वह झाँसी, कालपी और ग्वालियर के लिए अंग्रेजों से लड़ती है।

वह नूपुरों की झंकार के स्थान पर तोपों का गर्जन सुनना चाहती है। सीधे युद्ध भूमि में जाते समय, अंत में कहती हैं कि स्वराज्य प्राप्त करके रहेंगे या स्वराज्य की नींव का पत्थर बनेंगे। वे सचमुच देशभक्ति एवं राष्ट्र प्रेम की एक अद्भुत मिसाल थीं। इनकी वीरता एक पंक्ति में कहे तो इस तरह होगी "खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।"

## इ. 'स्वराज्य की नींव' एकांकी को अपने शब्दों में कहानी के रूप में लिखिए।

- उ. भारत के इतिहास में झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई का नाम और उनका बलिदान हमेशा अजर-अमर रहेंगा। झाँसी राज्य का पालन रानी लक्ष्मीबाई कर रही थी। उस समय परिस्थितियाँ इस तरह थी कि भारत के अनेक राज्यों में अलग अलग राजा राज्य कर रहे थे। दुःख की बात यह थी कि राजाओं में आपस में एकता नहीं थी। अंग्रेज भारत में आकर धीरे-धीरे राजाओं को आपस में लड़ाकर राज्यों पर भी आक्रमणकर राज्यों को अपने अधिकार में ले रहे थे।
- रानी लक्ष्मीबाई इन सब बातों को भली भांति जानती थी। वह चाहती थी कि सब लोग जाग्रत रहें। रानी ने हर कोशिश की। यहाँ तक की महिला सैनिकों की फौज तैयार की। तात्या असावधान थे किंतु बाद में उन्होंने फाज को से प्रशसनीय कार्य किया। रानी नवाब, सरदार आदि के बेखबर रहने से उनके ऐशोआराम और विलासिता में मशगूल रहने से नाराज थी। वह चाहती थी कि नूपुरों की जगह तोपों की आवाज सुनायी दे।
- रानी ने प्रतिज्ञा की थी कि मैं अपनी झाँसी नहीं दूँगी। अकेली ही सही रानी आखिर तक लड़ती रही। लक्ष्मीबाई को लगता था कि अब समय स्वामीभक्ति का नहीं देशभक्ति करने का था। स्वराज्य के लिए रणभूमि में मौत से जूझना है।
- जब रानी को पता चलता है कि रोज अंग्रेज जनरल लड़ने के लिए सिद्ध हो चुका है तो रानी लक्ष्मीबाई भी युद्धभूमि में जाने के लिए तैयार होती है। वह कहती है कि हम सब मिलकर या तो स्वराज्य प्राप्त करके रहेंगे या स्वराज्य की नींव का पथर बनेंगे।
- ## ई. साहस, वीरता, आत्मविश्वास और आत्मनिर्भरता के महत्व पर दो-दो वाक्य लिखिए।
- उ. साहस, वीरता, आत्मविश्वास और आत्मनिर्भरता ये सभी एकदूसरे से जुड़े हैं। मानव जीवन में इनका बड़ा महत्व है।

### **साहस :**

- \* बिना साहस के कठिन कार्य आसान नहीं होता।
- \* साहस होने पर ही सही समय पर निर्णय लिया जाता है।

### **वीरता :**

- \* जहाँ साहस होता है वहाँ वीरता अपनेआप ही होती है।
- \* वीरता के लिए बलिदान भी करना पड़ता है।

### **आत्मविश्वास :**

- \* इन्सान में आत्मविश्वास हो तो वो पहाड़ भी लांघ सकता है।
- \* आत्मविश्वास के साथ किये कार्य सफल होते हैं।

### **आत्मनिर्भरता :**

- \* आत्मविश्वास तभी होता है जब इन्सान में आत्मनिर्भरता होती है।
- \* आत्मनिर्भरता होने पर हम कोई भी काय करने से नहीं डगमगाते।

## **VI भाषा की बात :**

### **अ. सूचना पढ़िए। वाक्य प्रयोग कीजिए।**

**1.** नारी, मित्र, प्रेम (वाक्य प्रयोग कीजिए। पर्याय शब्द लिखिए)

**1.** नारी = औरत, अंगना, रमणी, ललना, वनिता

**वाक्य :** नारी सिर्फ अबला नहीं वह वीरांगना भी है।

**2.** मित्र = दोस्त, सखा, मीत, संगी, सहचर, साथी

**वाक्य :** कष्ट में साथ देने वाला ही सच्चा मित्र है।

**3.** प्रेम = अनुराग, प्रीति, प्यार, स्नेह।

**वाक्य :** मैं अपने देश से बहुत प्रेम करता हूँ।

## 2. असफलता, विश्वास (विलोम शब्द लिखिए / वाक्य प्रयोग कीजिए)

### 1. असफलता × सफलता

**वाक्य :** जीवन में असफलता मिलने पर निराश न हाकर सफलता के लिए प्रयत्न करना चाहिए।

### 2. विश्वास × अविश्वास

**वाक्य :** विश्वास के साथ किया गया कार्य सफल होता है तो अविश्वास से असफलता मिलती है।

## 3. शंका, किला, सूचना (वचन बदलिए / वाक्य प्रयोग कीजिए)

### 1. शंका - शंकाएँ

**वाक्य :** अंधेरे में बहुत सारी शंकाएँ मन में उभरती हैं।

### 2. किला - किल

**वाक्य :** शिवाजी ने अनेक किले हस्तगत किये।

### 3. सूचना - सूचनाएँ

**वाक्य :** प्रश्न पत्र की सूचनाएँ पढ़ कर उत्तर लिखना चाहिए।

### आ. सूचना पढ़िए। उसके अनुसार कीजिए।

#### 1. स्वराज्य, निराशा(उपसर्ग पहचानिए)

उ. स्वराज्य - 'स्व', निराशा - 'निर'

#### 2. वीरता, ऐतिहासिक (प्रत्यय पहचानिए)

उ. वीरता - वीर + 'ता' (प्रत्यय), ऐतिहासिक - इतिहास + 'इक' (प्रत्यय)

## इ. उदाहरण देखिए। उसके अनुसार वाक्य बदलिए।

उदा: राजू पुस्तक पढ़ता है। - राजू से पुस्तक पढ़ी जाती है।

1. लड़का भोजन करता है। - लड़के से भोजन किया जाता है।
  2. **i.** रानी ने आज्ञा दी। - रानी से आज्ञा दी गई। **ii.** रानी के द्वारा आज्ञा दी गई।
  3. लक्ष्मीबाई ने जूही से कहा। - लक्ष्मीबाई के द्वारा जूही को कहा गया।
- ## इ. रेखांकित शब्द के स्थान पर नीचे दिये गये एक-एक शब्द का प्रयोग कर वाक्य बनाइए।

कक्षा में एक **लड़का** आया।

सब **लड़के** कक्षा में पहुँच चुके थे।

**लड़कों** में अनुशासन बना था।

1. लड़की
2. छात्र
3. छात्रा
4. बालक
5. बालिका

### 1. लड़की

1. कक्षा में एक **लड़की** आयी।
2. सब **लड़कियाँ** कक्षा में पहुँच चुकी थी।
3. **लड़कियों** में अनुशासन बना था।

### 2. छात्र

1. कक्षा में एक **छात्र** आया।
2. सब **छात्र** कक्षा में पहुँच चुके थे।
3. **छात्रों** में अनुशासन बना था।

### 3. छात्रा

1. कक्षा में एक **छात्रा** आयी।
2. सब **छात्राएँ** कक्षा में पहुँच चुकी थीं।
3. **छात्राओं** में अनुशासन बना था।

### 4. बालक

1. कक्षा में एक **बालक** आया।
2. सब **बालक** कक्षा में पहुँच चुके थे।
3. **बालकों** में अनुशासन बना था।

### 5. बालिका

1. कक्षा में एक बालिका आयी।
2. सब बालिकाएँ कक्षा में पहुँच चुकी थीं।
3. बालिकाओं में अनुशासन बना था।

\*\*\*\*\*

## 9. दक्षिणी गंगा गोदावरी

कवि - काका कालेलकर

### I. उन्मुखीकरण प्रश्न :

प्र.1. यहाँ पर किसके बारे में बताया गया है?

उ. प्रस्तुत कविता में नदियों के बारे में बताया गया है।

प्र.2. दक्षिण भारत की कुछ नदियों के नाम बताइए।

उ. कृष्णा, गोदावरी, तुंगभद्रा, पेन्ना, कावेरी, पंपा आदि दक्षिण भरत की प्रमुख नदियाँ हैं।

प्र.3. गोदावरी नदी के बारे में आप क्या जानते हैं?

उ. गोदावरी दक्षिण मध्य भारत की नदी है। यह भारत की दूसरी लंबी नदी है। इसकी लंबाई लगभग 1465 कि.मी. है। इसका उद्गम स्थान महाराष्ट्र के नासिक जिले के त्रैयंबक के पास स्थित है। इसे दक्षिणी गंगा नाम से भी पुकारते हैं।

### II. लेखक परिचय :

काका कालेलकर का पूरा नाम दत्तात्रेय बालकृष्ण कालेलकर है। उनका जन्म दिसंबर 1885 ई.को महाराष्ट्र के सतारा जिले में हुआ और मृत्यु 1991 में हुई। इन्होंने आजीवन गांधीवादी विचारधारा का पालन किया। इन्होंने हिंदुस्तानी प्रचार सभावर्धा के माध्यम से हिंदी की खूब सेवा की। इन्होंने कहा था - राष्ट्रभाषा प्रचार हमारा एक राष्ट्रीय

कार्यक्रम है। इनकी प्रमुख रचनाएँ स्मरण यात्रा, धर्मोदय, लोकमाता, हिमालयनों प्रकाश आदि है। वे राज्य सभा के सदस्य भी रह चुके थे।

### III. शब्दार्थ :

|                |                               |             |                          |
|----------------|-------------------------------|-------------|--------------------------|
| 1. अधिष्ठात्री | = माता (देवी)                 | 2. तट       | = किनारा                 |
| 3. वर्णन       | = बखान                        | 4. छटा      | = शोभा                   |
| 5. नहर         | = नदी या जलाशय से निकाल गया   | 6. कतार     | = क्रम                   |
| 7. उधेड़-बुन   | = उलझन                        | 8. शान-शौकत | = ठाट-बाट                |
| 9. नजर         | = दृष्टि                      | 10. साँवला  | = श्यामवर्ण              |
| 11. मटमैला     | = मिट्टी जैसा मैला (गंदा)     | 12. झाँई    | = छाया                   |
| 13. स्निग्ध    | = प्रकाश                      | 14. धौल     | = सफेद                   |
| 15. घाट        | = नाव से उत्तरने का स्थान     | 16. भँवर    | = जल कुंभ                |
| 17. स्वाँग     | = दूसरों की तरह अभिनय<br>करना | 18. टापु    | = द्वीप                  |
| 20. ऊँडेलना    | = डालना                       | 19. धवल     | = सफेद                   |
| 22. कुदरत      | = ईश्वरी शक्ति (प्रकृति)      | 21. संभ्रम  | = क्षुब्धि (उत्साह उमंग) |
| 23. काँस       | = एक-प्रकार की घास            |             |                          |

#### IV. प्रश्नोत्तर :

##### प्र.1. सूर्योदय के समय प्रकृति का वातावरण कैसा दिखाई देता है?

उ. सूर्योदय के समय प्राकृतिक सौंदर्य देखने लायक होता है। प्रकृति में विविध छटावाली हरियाली दिखाई पड़ती है। सूर्योदय के समय रंग बिरंगे बादलों वाला आसमान नहाने के लिए उत्तरता हुआ दिखाई पड़ता है। सवेरे ठंडी-ठंडी बहने वाली हवा मन को पुलकित करती है।

##### प्र.2. लेखक ने ऐसा क्यों कहा होगा कि राजमहेंद्री के आगे गोदावरी की शान शौकत निराली है?

उ. पश्चिम की तरफ पहाड़ों की श्रेणियाँ हैं। पहाड़ों पर घिरे हुए बादलों से सूरज की धूप कही नामो निशान तक नहीं था। बादलों का रंग साँवला होने के कारण गोदावरीकी झाँई और गहरी हो रही थी। पानी के ऊपर का दश्य पानी में प्रतिबिंबित हो रहा था। इससे सुंदरता बढ़ रही थी। पहाड़ों पर छाए बादल ऋषि मुणियों जैसे लग रहे थे। इसलिए लेखक ने कहा होगा कि राजमहेंद्री के आगे गोदावरी की शान शौकत निराली है।

##### प्र.3. लेखक ने भैंवरों को बच्चों की उपमा क्यों दी होगी?

उ. बच्चे अपनी माता की गोद में मनमाना नाचते, खेलते, उछलते और कूदते हैं पड़ती और थोड़ी उसी बहती धारा में भैंवरे अपनी माता गोदावरी की गोद में कुछ देर दिखती ही देर में भयानक तूफान का स्वाँग रचाती और एक ही पल में खिल खिलाकर हँसती है।

#### प्र.4. गोदावरी नदी के टापुओं की क्या विशेषताएँ हो सकती हैं?

- उ. गोदावरी के टापू प्रसिद्ध हैं। कई तो पुराने धर्म की तरह जहाँ के तहाँ स्थिर रूप होकर जमे हुए हैं और कई एक कवि की प्रतिभा की तरह क्षण-क्षण भर में स्थल की नवीनता उत्पन्न करते और नया-नया रूप ग्रहण करते हैं।

#### प्र.5. लेखक ने रेल के पहियों की आवाज को 'संक्रामक' कहा है। 'संक्रामक' से लेखक का क्या आशय होगा?

- उ. संक्रामक का अर्थ होता है, जो स्पर्श या संसर्ग से फैलता है। रेल जब पुल पर चलती है तब पहियों की आवाज बहुत बढ़ती है। उससे अगर हम नफरत न करते हुए पसंद करे तो रेल के पहियों का ताल भी आकर्षक लगता है। जिसका नाद संक्रामक रोग की तरह दूर-दूर तक फैलता जाता है। इसलिए लेखक ने रेल के पहियों की आवाज को 'संक्रामक' कहा।

#### प्र.6. गोदावरी को धीर-गंभीर माता की संज्ञा क्यों दी गयी होगी?

- उ. कोई भी सरिता सरित्पति से मिलते समय त्वरित, उत्तेजित और उत्सुक होती है। लेकिन गोदावरी माता की चाल तो ऐसी नहीं है। वह तो दृढ़ शांत मन से, मंद गति से उदात्त रूप में अपने सरित्पति से मिलती है। इसलिए गोदावरी को धीर-गंभीर माता की संज्ञा दी गई होगी।

### V. अर्थग्राह्यता - प्रतिक्रिया

#### अ. प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

##### प्र.1. लेखक को गोदावरी का जल कैसा लगा होगा?

- उ. लेखक को गोदावरी का जल अत्यंत पवित्र लगा है क्यों कि लोग गांगा जल के आधे कलश गोदावरी में उँड़ेलते और फिर गोदावरी के जल से कलश भर कर ले जाते हैं। इसके जल का से

वन राम-लक्ष्मण और सीता से लेकर बूढ़े जटायु बड़े-बड़ेतत्व ज्ञानी, साधु-संत ने भी किया है। गोदा वरी चारों वर्णों की माता और अधिष्ठात्री देवी मानी जाती है इसलिए लेखक को गोदावरी का जल अत्यंत पवित्र लगा। इसके जल में अमोघ शक्ति है आर पानी की एक बूँद का सेवन भी व्यर्थ नहीं जाता।

### प्र.2. लेखक की जगह तुम होते, तो गोदावरी नदी का वर्णन कैसे करते? बताइए।

उ. गोदावरी एक पवित्र और सुंदर नदी है। यह एक जीव नदी है। इसे दक्षिण गंगा भी कहते हैं। इसका जन्मस्थान महाराष्ट्र के नासिक जिले के त्रैयंबक के पास माना जाता है। यह एक विशाल नदी है। लेखक को गोदावरी का जल अत्यंत पवित्र लगा क्यों कि इसके जल में अमोघ शक्ति हैं। इसके तट पर अनेक शूरवीर, तत्वज्ञानी, साधुसंत, राजनीतिज्ञ भी पैदा हुए हैं। गोदावरी नदी अन्नपूर्णा है। क्यों कि इसके द्वाराकई लाखों एकड़ की भूमि सिंचाई की जाती है।

### आ. पाठ के आधार पर निम्न प्रश्नों के उत्तर हाँ या नहीं में दीजिए।

1. लेखक को कोवुरु स्टेशन पार करने के बाद गोदावरी मैया के दर्शन हुए। (हाँ)
2. गोदावरी की शान-शौकत कुछ निराली है। (हाँ)
3. उपासक गंगा जल के आधे कलश को गोदावरी में उँडेलते हैं। (हाँ)
4. राजमहेंद्री और ध्वलेश्वर का सुखी जन-समाज दुखित था। (नहीं)

### इ. गद्यांश पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

..... टेक्स्ट बुक पेज नं. 54 .....

**प्र.1. विनोबाजी के जीवन का प्रमुख कार्य क्या था?**

उ. भूदान आंदोलन विनोबाजी का प्रमुख कार्य था।

**प्र.2. बनारस की सभा में गाँधीजी ने क्या कहा?**

उ. बनारस की सभा में गाँधीजी ने कहा था, “जब तक देश परतंत्र है, तब तक देश गरीब है, ठाट-बाट से रहना पाप है। जब तक देश की जनता दुखी है, आराम से रहना अपराध है।

**प्र.3. रेखांकित शब्द का वचन बदलकर वाक्य प्रयोग कीजिए।**

उ. सेवा - सेवाएँ

वाक्य : मदरतेरिसा की सेवाएँ स्मरणीय है।

**4. इस गद्यांश के लिए उचित शीर्षक दीजिए।**

उ. इस गद्यांश का उचित शीर्षक “आचार्य विनोबा भावे के सुविचार”।

**ई. इस अवतरण के मुख्य शब्द पहचानकर लिखिए।**

..... टेक्स्ट बुक पेज नं. 55 .....

पुल, उधेड़-बुन, भागमती, विशालपाट, दर्शन, गर्व शानशौकत, निराली।

**VI अभिव्यक्ति - सृजनात्मकता**

**अ. इन प्रश्नों के उत्तर तीन-चार पंक्तियों में लिखिए।**

**प्र.1. किसी यात्रा का वर्णन करते हुए अपने अनुभवों को प्रस्तुत कीजिए।**

उ.

यात्राओं का जीवन में बड़ा महत्व है। मैं अपने मित्रों के साथ दिल्ली की यात्रा की। हम दिल्ली में एक होटल में ठहरे। आराम किया अगले दिन हमने दिल्ली के प्रसिद्धस्थानों

को देखा। सबसे पहले हम दक्षिण दिल्ली में स्थित पृथ्वीराज चौहान के स्यमका कुतुबमीनार देखा। कुतुबमीनार भारतीय भवन निर्माण कला का अनुपम नमूना है।

इसके बाद निजामुद्दीन के पास हुमायूं का मकबरा देखा। बाद में लोटसटेपुल, जंतर-मंतर, अक्षरधाम आदि स्थान देखे। यह भ्रमण हमारे लिए मनोरंजक और ज्ञानवर्धक सिध्द हुआ। ये सब देखने से भारत के अतीत वैभव तथा उसकी प्रगति का ज्ञान हुआ।

## **प्र.2. आंध्र को अन्नपूर्णा एवं भारत का धान्यागार कहाने में नदियों का योगदान व्यक्त कीजिए।**

उ. आंध्र प्रदेश में कृष्णा, तुंगभद्रा, पेन्ना, मंजिरा वंशधारा आदि नदियाँ बहती हैं। इन नदियों पर कई बाँध बनाये गये हैं। इन से लाखों एकड़ भूमि की सिंचाई होती है और हजारों मेगावाट बिजली का उत्पादन भी होता ह। करोड़ों लोगों को पेयजल मिलता है। इसलिए आंध्रप्रदेश को अन्नपूर्णा एवं भारत का धान्यागार कहते हैं।

### **आ. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर आठ-दस वाक्यों में लिखिए।**

#### **प्र.1. चेन्नई से राजमहेन्द्री जाते समय लेखक की भावनाएँ कैसी थीं?**

उ. चेन्नई से राजमहेन्द्री जाते समय वहाँ के प्रकृति सौन्दर्य को देख कर लेखक के हृदय में अनेक भावनाएँ थीं। बेजवाड़े से आगे सूर्योदय का दृश्य, वर्षा ऋतु के चलते चारों तरफ हरियाली पैली थी। नहर के किनारे से गुजरती रेल पटरी पर आगे बढ़ती रेल से अनोखा दृश्य दिख रहा था, जगह-जगह छोटे तालाब उनमें खिले कमल दल और बगुलों का समूह साथ ही ठंडी हवा का स्वर्ण इस सुबह को अभिनंदन करने के लिए मचल रहा था। राजमहेन्द्री के आगे गोदावरी की शान, शोभा कुछ निराली लगी। पश्चिमी ओर की पहाड़ियाँ उस पर छाए श्वेत धुले जैसे बादल ऋषिमुनियों जैसे लगे। गोदावरी के टापू और वहाँ

स्थित मन्दिरों के घंटानाद हृदयनाद की पूर्व स्मृति करा रहे थी। पूर्व की ओर गोदावरी का पाट कुछ अधिक चौड़ा था। उसके सुदूर पर वन श्रोकी शोभा निराली थी। उन्होंने गोदावरी के तट पर अत्यन्त सुख की अनुभूति करते हुए कहा कि गोदावरी के जल में अमोघ शक्ति है उसके एक बूँद जल का पान भी व्यर्थ नहीं जाता। ऐसी पावन यह दक्षिण की गंगा गोदावरी है।

#### प्र.2. लेखक ने गोदावरी को माता की संज्ञा क्यों दी होगी?

- उ. गोदावरी सचमुच माता के समान है। क्यों कि वह हमारी आवश्यकताएँ पूरी कर रही है। राम-लक्ष्मण और सीता से लेकर बूढ़े जटायु तक सबको अपना स्तन्य-पान कराया है। इसके तट पर शूश्वीर भी पैदा हुए हैं और बड़े-बड़े तत्व ज्ञानी भी, साधु-संतभी जन्मे, धुरंधर राजनीतिज्ञ भी और ईश्वर भक्त भी। चारों वर्णों की वह माता है। हमारे पूर्वजों की गोदावरी अधिष्ठात्री देवी है। इसके जल में अमोघ शक्ति है और पानी की एक बूँद का सेवन भी व्यर्थ नहीं जाता।

## इ. अपने द्वारा की गयी किसी यात्रा का वर्णन करते हुए मित्र के नाम पत्र लिखिए।

हैदराबाद,

दिनांक : 27-10-2014

प्रिय मित्र,

मैं यहाँ कुशल हूँ। आशा करता हूँ कि तुम भी वहाँ कुशल हो। पिछले सप्ताह हमारी कक्षा के छात्र विज्ञान यात्रा पर नागार्जुन सागर गये थे। हमारे साथ दो अध्यापक भी आये। पहले हम रेल से रवाना हुए। वहाँ पहुँचने के बाद एक होटल में ठहरे। दूसरे दिन नागार्जुन सागर बाँध देखने निकल पड़े।

नागार्जुन सागर बाँध देश में सबसे बड़ा बाँध है। आचार्य नागार्जुन के नाम पर यह बाँध का नाम रखा गया। प्राचीन काल में यहाँ आचार्य नागार्जुन विद्यापीठ बनाकर विद्यार्थियों को विज्ञान की शिक्षा दी थी। यह बाँध कृष्णनदी पर बनाया गया। पंडित, जवाहरलाल नेहरू ने इसकी नींव डाली। इस बाँध के दोनों तरफ दो नहरें हैं। एक है जवहर नहर, दूसरा लालबहादूर नहर। इस के जल से लगभग ३१ लाख एकड़ भूमि की सिंचाई होती है।

हमारी यात्रा सफल और विज्ञानदायक रही है। तम अपने द्वारा की गयी किसी यात्रा का वर्णन अगले पत्र में लिखो। तुम्हारे माता-पिता को मेरा प्रणाम और छोटे भाई को प्यारा। तुम्हारे पत्र की प्रतीक्षा में,

तुम्हारा मित्र,

अ.ब.क।

पता :

नाम : क.ख.ग,

घ.न : 14-85,

भवानी नगर, वरंगल।

## ई. इस यात्रा-वृत्तांत में लेखक का कौनसा अनुभव आपको अच्छा लगा? क्यों?

उ. इस यात्रा वृत्तांत में लेखक के अनुभव अच्छे लगे। उनमें से एक अनुभव मुझे

बहुत अच्छा लगा जो निम्नांकित है -

पश्चिम की तरफ नजर फैलाई तो दूर-दूर तक पहाड़ियों की श्रेणियाँ

नजर आई। आसमान में बादल घिरे रहने से सूरज की धूप का कही नामोनिशान

तक न था। बादलों का रंग साँवला होने के कारण गोदावरी के धूलि-धूसरित मटमैलजल की झाँई और भी गहरी हो रही थी। ऊपर की और नीचे की झाँई के कारण इस सारे दृश्य पर वैदिक प्रभाव की शीतल और स्निग्ध सुंदरता छाई हुई थी। और पहाड़िपर कुछ उतरे हुए (धौले-धौले) बादल तो बिलकुल ऋषि मुनियों जैसे लगते थे। यहाँ प्रकृति सौंदर्य का वर्णन अनोखा है। लेखक की कल्पना शक्ति अद्वितीय है। यही आध्यात्मिक अनुभव मेरे दिल को छू लिया।

## VII. भाषा की बात :

### A. सूचना पढ़िए। वाक्य प्रयोग कीजिए।

1. बरसात, सरिता, पहाड़, मनुष्य (वाक्य प्रयोग कीजिए। पर्याय शब्द लिखिए।)

बरसात : वर्षा, बारिश, पावस

(बरसात के मौसम में चारों ओर हरियाली छा जाती है।)

सरिता : नदी, निर्झरणी, तटिनी

(पहाड़ों से सरिता निकलकर आगे बढ़ती है और अंत में सागर में विलीन हो जाती है।)

पहाड़ : पर्वत, गिरि, शैल

पहाड़ों से कई नदियाँ निकलती हैं।

मनुष्य : मानव, नर, इन्सान, आदमी, व्यक्ति

(मनुष्य जिज्ञासु है।)

2. विजय, प्रसिद्ध, दुर्लभ, पुराना (विलोम शब्द लिखिए। वाक्य प्रयोग कीजिए।)

विजय × पराजय

हर पराजय विजय का मार्ग दिखाती है।

प्रसिद्ध × अप्रसिद्ध

मनुष्य अच्छे व्यवहार से प्रसिद्ध और बुरे व्यवहार से अप्रसिद्ध होते हैं।

दुर्लभ × सुलभ

जंगल का रास्ता दुर्लभ है। इसलिए गाँव पँहुचना सुलभ न हो सका।

पुराना × नया

पुराना घर मरम्मत से नया हो गया।

3. नहर, तितली, कविता, लहर (वचन बदलिए। वाक्य प्रयोग कीजिए।)

नहर - नहरें

नागार्जुन सागर से दो नहरे निकली हैं।

तितली - तितलियाँ

तितलियाँ फूलों पर मंडरा रही हैं।

कविता - कविताएँ

पंत ने प्रकृतिसे सम्बन्धित अनेक कविताएँ लिखी हैं।

लहर - लहरें

तूफान के समय समुद्र में ऊँची लहरे उठती हैं।

## आ. सूचना - पढ़िए। उसके अनुसार कीजिए।

1. सूर्योदय, उन्माद, पवित्र, अत्यंत (संधि विच्छेद कीजिए।)

सूर्योदय - सूर्य + उदय - गुण संधि (स्वर संधि)

उन्माद - उत् + माद - व्यंजन संधि

पवित्र - पौ + इत्र - अयादि संधि (स्वर संधि)

अत्यंत - अति + अंत - यण संधि (स्वर संधि)

2. साधु - संत, चरणचिह्न, गंगाजल (समास बताइए)

साधु-संत - साधु और संत - द्वंद्व समास

चरणचिह्न - चरणो के चिह्न - तत्पुरुष समास

गंगाजल - गंगा का जल - तत्पुरुष समास

## इ. इन्हें समझिए।

1. नदी के पानी म उन्माद था, उसमे लहरें न थीं।

के - संबंध कारक

में - अधिकरण कारक

उसमे - सर्वनाम (नदी के पानी के लिए)

2. गोदावरी के प्रवाह केसाथ होड़ करते हुए भी उसे संकोच न होता था।

के - संबंध कारक

केसाथ - संबंध बोधक

उसे - सर्वनाम

ई. नीचे दिये गये क्रिया शब्द समझिए और अकर्मक व सकर्मक क्रियाएँ पहचानिए।

सोना, पढ़ना, पीना, हँसना, कहना, उठना, दौड़ना, खाना, चलना, लिखना

| अकर्मक | सकर्मक |
|--------|--------|
| सोना   | पढ़ना  |
| हँसना  | पीना   |
| उठना   | कहना   |
| दौड़ना | खाना   |
| चलना   | लिखना  |

\*\*\*\*\*

## अपने स्कूल को एक उपहार (उपवाचक)

- ऋतु भूषण

### प्र.1. राजु को उसका पुराना स्कूल कैसा लगता था?

- उ. राजु को उसका पुराना स्कूल बहुत अच्छा लगता था। राजु की टांगे बहुत पलती और दुबल थीं। अतः वह ज्यादा देर तक खड़ा नहीं रह पाता था पर उसके पुराने स्कूल में कभी किसीने उसकी कमजोरी की ओर ध्यान नहीं दिया। वह एक मेधावी छात्र था। वह हमेशा कक्षा में प्रथम आता था। हर विषय में सबसे आगे रहता था। पुराने स्कूल में उसके बहुत सारे मित्र थे और सभी अध्यापक उसे बहुत पसंद करते थे। अपने पुराने स्कूल के प्रति राजु का विचार था कि यदि स्वर्ग में भी स्कूल हो तो, वे भी उसके पुराने स्कूल से ज्यादा अच्छे तो नहीं हो सकते।

### प्र.2. राजु के प्रति नये स्कूल के साथियों का व्यवहार कैसा था?

- उ. राजु के प्रति नये स्कूल के साथियों का व्यवहार ठीक नहीं था। वह नए स्कूल में प्रवेश करने लगा तो सभी लोग ने उसकी टांगों की ओर संकेत करके हँसते हुए उसका मजाक भी उड़ाया। जब पहला पीरियड शुरू हुआ तो अध्यापक ने उसे कक्षा में सब से पीछे बिठा दिया। जब राजु से उसका परिचय पूछा गया तो उसने बताया कि वह एक गाँव के स्कूल से आया है। इस पर छात्रों को हँसी आयी। हर दिन उसके लिए ऐसा ही रहा। उसका कोई मित्र भी नहीं बन पाया था। वह खेलने भी नहीं जाता था। नए स्कूल के साथी जान गए थे कि राजु एक गवार लड़का है और उसे अपने गाँव के स्कूल का बड़ा 'घमंड' है।

### प्र.3. राजु ने अपने स्कूल को किस तरह उपहार समर्पित किया?

उ. राजु ने अपनी स्थिति से निबटने के लिए बड़ी चतुराई से एक योजना बनाई।

कक्षा में अध्यापक कोई प्रश्न पूछे तो अपना हाथ उठाना बंद कर दिया। वार्षिक परीक्षामें अच्छे अंक पाने के लिए अधिक परिश्रम करने का निश्चय किया। वह साबित करना चाहता था कि गाँव का स्कूल कोई मूर्खों का स्वर्ग नहीं था। सब लड़कोंने सोचा कि राजु फेल होगा। राजु ने घर में खूब पढ़ाई की ओर वार्षिक परीक्षाओं में बहुत अच्छा लिखा। जब परीक्षा फल आया तब वह कक्षा में प्रथम आया था। प्रथम आने पर राजु बहुत खुश हुआ। अब उसे लगा कि उसने अपने पुराने स्कूल को सुंदर और समुचित उपहार समर्पित किया।

## 10. नीति दोहे

### I. रहीम (कवि परिचय) :-

रहीम का पूरा नाम अबदुर्रहीम खान खाना है। वे अकबर के दरबार में नौरल्लों में से एक थे /उनका जन्म 1556 और मृत्यु 1626 ई. मानी जाती है। संस्कृत, अरबी, फारसी के विद्वान थे। प्रसिद्ध रचनाएँ रहीम सतसई, बरवै नायिका, भेद, श्रृंगार सोरठा आदि हैं।

**बिहारी (कवि परिचय):** रीति काल के प्रसिद्ध कवि माने जाते हैं। इनका जन्म 1595 और मृत्यु 1663 मानी जाती है। इनके दोहे नीति प्रक होते हैं। बिहारी सतसई इनकी प्रसिद्ध रचना है। इन्होने नीति के दोहो द्वारा सागर को गागर में भर ने का प्रयत्न किया है।

### II. उन्मुखीकरण प्रश्नोत्तर :

**प्र.1. कवि ने बिना फल वाले वृक्षों के विषय में क्या कहा है?**

उ. कवि ने कहा है कि बिना फल वाले वृक्ष व्यर्थ ही अपनी अकड़ (ऐंठ) दिखाते हैं। वे अकड़े हुए खड़े रहते हैं।

**प्र.2. फलदार वृक्ष की विशेषता बताइए?**

उ. फलदार वृक्ष झुक जाते हैं। विनम्र हो जाते हैं।

**प्र.3. बुलबुल और कौए में अन्तर स्पष्ट कीजिए।**

उ. बुलबुल की आवाज मीठी मधुर होती है। कौए की आवाज कर्कश होती है। कौए की आवाज कानों को बुरी लगती है।

### III. उध्देश्य :

विद्यार्थियों को काव्य रचना एवं दोहा छंद से परिचित कराना, सृजन (लिखने) की प्रेरणा देना और नैतिक दोहों का जीवन में क्या महत्व है यह बता कर नीतिपूर्ण उपदेश देते हुए नैतिक मूल्यों का विकास करना ही मुख्य उध्देश्य है।

### IV. विद्या विशेष :

दोहा काव्य शास्त्र का एक अंग है। ये मात्रिक छंद है। दोह के पहले एवं तीसरे चरमे 13-13 मात्राएँ तथा दूसरे और चौथे चरण में 11-11 मात्राएँ होती है। यहाँ पर रहीम एवं बिहारी कवि के नीति परक एवं उपदेशात्मक दोहे दिए गए हैं।

- दोहा :**
1. कहि रहीम संपति सगे बनत बहुत बहु रीति।
  2. विपत्ति कसौटी जे कसै तेझ साँचे मीत।

### V. रहीम के दोहों के शब्दार्थ :

- |                                |                                             |
|--------------------------------|---------------------------------------------|
| 1. 1. कहि रहीम = रहीम कहते हैं | 2. संपत्ति = धन, संपदा                      |
| 3. सगे = निकट का सम्बन्ध       | 4. बनत = बनते हैं                           |
| 5. बहुत = बहुत (अधिक)          | 6. बहुरीति= अनेक ढंग से<br>(अनेक प्रकार से) |
| 7. विपत्ति = संकट में          | 8. कसौटी= जाँच (परखना)                      |
| 9. जे कसै = कसना (घिसना)       | 10. तेझ = वही                               |
| 11. साँचे = सच्चे              | 12. मीत = मित्र (बन्धु)                     |

## VI. रहीम का प्रथम दोहा (सार-भावार्थ)

रहीम कहते हैं कि जब कोई व्यक्ति धनवान बन जाता है, सुखी होता है तो सुखमें उसके कई सम्बन्धी, सगे, मित्र बन जाते हैं परन्तु विपत्ति में सभी हमारा साथ छोड़ देते हैं। रहीम कहते हैं कि जो व्यक्ति विपत्ति में दुःख में हमारा साथ देता है वही हमारा सगा और सच्चा मित्र हैं। विपत्ति के समय ही सच्चे मित्र की पहचान होती है।

## VII. दूसरा दोहा शब्दार्थ एवं भाव :

रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून।

पानी गए न ऊबरै मोती, मानुष चून॥

### शब्दार्थ :

1. रहिमन = रहीम

2. पानी = जल, इज्जत (मान), काँति

(चमक) तीन अर्थ में प्रयोग हुआ है

3. बिन = बिना

4. सून = व्यर्थ

5. ऊबरै = उद्धार (महत्व)

6. मोटी = मुक्ता

7. मानुष = मनुष्य

8. चून = चूना

**भावार्थ :** प्रस्तुत दोहे में रहीम ने पानी शब्द के लिए जल, इज्जत एवं चमक तीन

अर्थों में प्रयोग करते हुए कहते हैं कि पानी के बिना मोती, मनुष्य और चूना ये तीनों

व्यर्थ है। स्पष्ट करते हुए कहते हैं कि इज्जत के बिना मनुष्य, चमक के बिना माती

और जल के बिना चूना निरुपयोगी एवं व्यर्थ हैं। इसलिए इनकी रक्षा और महत्व पर ध्यान देना चाहिए।

## VIII. बिहारी का प्रथम दोहा एवं शब्दार्थ, भाव :

1. कनक कनक तै सौं गुनी, मादकता अधिकाइ।

उहि खाए बौराए जग, इहिं पाए बौराइ॥

### शब्दार्थ :

- |                                     |                             |
|-------------------------------------|-----------------------------|
| 1. कनक = धतुरा एवं स्वर्ण (सोना)    | 2. तै = से                  |
| 3. सौगुनी = सौं गुणा                | 4. मादकता = नशा             |
| 5. अधिकाई= अधिक होता है।            | 6. उहि खाए = उसे खाकर       |
| 7. बौराए = पागल होता                | 8. जग = संसार               |
| 9. इहि पाए = इसे पाकर (स्वर्ण पाकर) | 10. बौराइ= पागल हो जाता है। |

### भावार्थ :

इस दोहे में बिहारी लाल कनक शब्द के दो अर्थ बताते हैं एक कनक शब्द का अर्थ धतुरा और दूसरे कनक शब्द का अर्थ स्वर्ण (सोना) है। धतुरे की अपेक्षा स्वर्ण का नशा सौंगुणा अधिक होता है क्यों कि धतुरा खाने के कुछ देर बाद नशा चढ़ता है और मनुष्य पागल की तरह व्यवहार करता है परन्तु सोना (स्वर्ण) धन संपत्ति के पा. लेने मात्र से ही मनुष्यपागल हो जाता है।

2. नर की ऊरु नल नीर की, गति एकै कर जोइ

जैतो नीचौ हवै चलै, तैतै ऊँचौ होई।

### शब्दार्थ :

- |         |                |          |              |
|---------|----------------|----------|--------------|
| 1. नर   | = मनुष्य, आदमी | 2. अरु   | = और         |
| 3. नल   | = नल (टोंटी)   | 4. नीर   | = जल, पानी   |
| 5. एकै  | = एक           | 6. नीचौ  | = नीचे       |
| 7. जेतौ | = जैसे         | 8. ते तौ | = वैसे, तैसे |
| 9. ऊँचौ | = ऊँचे         | 10. होइ  | = होता है    |
| 11. चलै | = चलना         |          |              |

### भावार्थ :

इस दोहे में बिहारी कहते हैं कि नर तथा नल के पानी की गति एक ही है। कवि कहते हैं कि नर (मनुष्य) जितना विनीत (नम्र, विन्यशील) होता है उन्हें उतना मान सम्मान मिलता है। उतना श्रेष्ठ और ऊँचा बनता है। उसी प्रकार नल का पानी जितनानीचे बहता चलता है उस उतना ऊपर उठाया जाता है। इस लिए नर को नल नीर जैसा होना चाहिए।

### IX. प्रश्नोत्तर :

- प्र.1. रहीम के अनुसार सच्चे मित्र की पहचान कब होती है।  
उ. रहीम के अनुसार सच्चे मित्र की पहचान विपत्ति के समय होती है।
- प्र.2. साँचे शब्द का अर्थ क्या है?  
उ. साँचे शब्द का अर्थ है सच्चा

### प्र.3. पानी गये न ऊबरै, मोती, मानुष, चून-पंकित का भाव बताइए।

उ. इस दोहे में रहीम ने पानी शब्द के तीन अर्थ बताये हैं। जो जल, इज्जत, चमक से सम्बन्धित है। इज्जत के बिना मनुष्य, चमक के बिना मोती और जल के बिना चूना व्यर्थ होता है। पानी के बिना इन तीनों का कोई महत्व नहीं है।

### प्र.4. किसके मिलने पर मनुष्य पागल हो जाता है?

उ. स्वर्ण के मिलने पर मनुष्य पागल हो जाता अर्थात् संपत्ति मिलने से एक प्रकार के आभिमान का नशा चढ़ता है।

### प्र.5. बिहारी ने नर की तुलना किससे की है?

उ. बिहारी ने नर की तुलना नल-नीर (नल के जल) से की है।

### प्र.6. बिहारी के अनुसार व्यक्ति को कैसा होना चाहिए।

उ. बिहारी के अनुसार व्यक्ति को विनम्र और विनयशील होना चाहिए।

## X. अर्थग्राह्यता प्रतिक्रिया प्रश्न

### अ. प्रश्नों के उत्तर दीजिए ।

#### प्र.1. नीति वचनों का हमारे जीवन पर क्या प्रभाव होता है?

उ. नीति वचनों के कारण नैतिक गुणों का विकास होता है। अच्छे-बुरे की पहचान होती है। सही गलत का भेद पता चलता है। हमारे जीवन, आचार-विचार में परिवर्तन आता है। नीति वचनों के अनुकरण द्वारा सामाजिक बुराइयों को भी संमार्ग पर लाया जा सकता है।

**प्र.2. वस्तु विनियोग की दृष्टि से एक के स्थान पर उससे अधिक वस्तुएँ खरीदना ठीक नहीं है? क्यों?**

उ.

एक से अधिक वस्तुओं का खरीदना उचित नहीं है क्योंकि उपभोक्ता (खरीद ने वालों) की आर्थिक स्थिति के आधार पर सीमित मात्राओं में वस्तुओं का निर्माण होता है। अधिक वस्तु खरीदने से खरीदने वाला पैसा व्यर्थ करता है साथ ही आवश्यक उपभोक्ताओं को वह वस्तुएँ नहीं मिलती हैं, वस्तुओं की कमी होने पर निर्माता उनके दाम बढ़ा सकते हैं। महंगाई बढ़ेगी। उपभोक्ताओं में उस वस्तु को पाने की होड़ लगेगी जिसके कारण बाजार में उतार चढ़ाव बढ़ेगा।

#### **आ. पाठ पढ़िए। अभ्यास कार्य कीजिए।**

**प्र.1. पाठ से 'ध्वनि साम्य' वाले शब्द चुनकर लिखिए। जैसे रीत-भीत आदि।**

उ. ध्वनिसाम्य वाले शब्द जैसे सून-चून, जेतै-तेतै, जोइ-होइ खाए-पाए आदि।

**प्र.2. रहीम के दोहे में 'पानी' शब्द का प्रयोग कितनी बार हुआ है। उसके अलग-अलग अर्थ क्या हैं?**

उ. रहीम के दोहे में 'पानी' शब्द का तीन बार प्रयोग हुआ है। एक पानी का अर्थ इज्जत मनुष्य के लिए, दूसरे पानी का अर्थ चमक, मोती के लिए और तीसरी बार पानी का जल केवर्थ में चूने के लिए हुआ है। इन तीनों भिन्न अर्थों के साथ तीनों ही वस्तुएँ अर्थ हीन या व्यर्थ होंगी।

### इ. भाव स्पष्ट कीजिए

**प्र.1. रहिमन पानी राखिए बिन पानी सब सूना। पानी गये न ऊरे, मोती मानुष चूना।**

उ. (उत्तर रहीम के दूसरे दोहे का भाव)

**प्र.2. कनक कनक तै सौ गुनी, मादकता अधिकाइ**

उहि खाए बौराइ जग, इहिं पाए बौराइ।

(बिहारी के प्रथम दोहे का भाव)

### XI. अभिव्यक्ति - सृजनात्मकता

**अ. इन प्रश्नों के उत्तर तीन-चार पंक्तियों में लिखिए।**

**प्र.1. रहीम ने जल के महत्व के बारे में क्या बताया है?**

उ. रहीम ने अपने दोहे में 'पानी' शब्द का जल के अर्थ में महत्व बताते हुए कहा है कि जल के बिना चूना व्यर्थ है। जल में भीग कर हो चूना दीवारों पर लगाने योग्य बनता है। बिना जल के चूने का पत्थर व्यर्थ ही रहता है।

**प्र.2. बिहारी ने सोन (स्वर्ण) की तुलना धतुरे से क्यों की होगी?**

उ. बिहारी ने सोने की तुलना धतुरे से इसलिए की होगी क्योंकि धतुरा एक ऐसा पौधा है जिस के फल एवं पत्तों में नशा होता है। उसे खाने से नशा चढ़ता है। उसी प्रकार स्वर्ण, धन सम्पति में घमण्ड का नशा होता है। संपत्ति, स्वर्ण को देख लेने, पा लेने मात्र से ही व्यक्ति में अभिमान का नशा चढ़ जाता है जबकि धतुरे के खाने पर नशा चढ़ता है। इसलिए स्वर्ण के नशे को धतुरे से सौ गुणा अधिक मादक बताया गया है।

#### **आ. किन्हीं दो दोहों का भाव अपने शब्दों में लिखिए।**

सारांश में सभी दोहों के भाव हैं। किन्हीं दो को विद्यार्थी पढ़ कर लिख सकते हैं)

#### **इ. पाठ में दिए गए दोहों के आधार पर कुछ सूक्ष्मियाँ लिखिए।**

1. विपत्ति अपने पराये की पहचान करवाती है।
2. विपत्ति में साथ देने वाला सच्चा साथी है।
3. धन, ज्ञान, मान पाकर विनम्र होना चाहिए।
4. विनम्रता श्रेष्ठता की पहचान है।
5. स्वर्ण अभिमान का प्रतीक है।
6. इज्जत एवं मान के बिना मनुष्य का जीवन व्यर्थ है।
7. पैसे का नशा सिर चढ़कर बोलता है।
8. विनय से मित्र बनते हैं घमण्ड से शत्रु
9. विपत्ति मित्रता की कसौटी है।
10. पानी जीवन है।

#### **ई. पाठ में दिए गए दोहों में आपको कौनसा दोहा बहुत अच्छा लगा क्यों?**

- उ. पाठ में दिए गए दोहों में मुझे रहीम का यह दोहा “कहि रहीम संपत्ति, बनत बहुत बहु रीत” अच्छा लगा क्यों कि इस दोहे से सच्चे मित्र को पहचानने की नीति मिलती है।

## XII. भाषा की बात :

### A. अर्थ के अनुसार बेमेल शब्द पहचानिए।

1. नीर, पीर, जल, पानी - पीर
2. मीत, रीत, मित्र, दोस्त - रीत
3. जग, संसार, विश्व मग - मग

### A. यमक अलंकार समझिए

1. **यमक** : यमक का अर्थ दो होता है। किसी शब्द की पुनरावृति भिन्न-भिन्न अर्थों में होती है तो उसे यमक अलंकार कहते हैं।

**उदाहरण :** कनक कनक तै सौ गुनी, मादकता अधिकाइ।

उहि, खाए बौराइ जग, इहि पाए बौराइ।

2. **दोहा छंद समझिए**

दोहा मात्रिक छंद है। इसके पहले तीसरे चरण में तेरह मात्राएँ, दूसरे चौथे चरण में ग्यारह मात्राएँ होती हैं।

| ||| S S S | S

रहिमन पानी राखिए - 13

|| S S || S |

बिन पानी सब सून। - 11

S S | S | S | S

पानी गये न ऊबरै, - 13

S S S | | S |

मोती मानुस चूने ॥ - 11

इ.1. यमक अलंकार का एक उदाहरण दीजिए।

वह तीन बेर खाती थी वह तीन बेर खाती थी।

2. दोहा छंद का एक उदाहरण दीजिए।

S | ||| S | || S S | | | S | S |

दीन सबन को लखत है। दीन लख न कोय ॥

S | S | S | | | S S | | S || S |

जो रहीम दीनहि लखै , दीन बन्धु सम होय

3. नीचे दिए गये शब्दों में प्रत्यय पहचान कर वाक्य प्रयोग कीजिए।

1. लौकिक - लोक + इक

लौकिक सुखों में पड़कर मनुष्य आलसी बन जाता है।

2. (लौकिक सुख नश्वर है।)

नैतिक - नीति + इक

मनुष्य के लिए नैतिकता जरूरी है।

3. पौराणिक - पुराण + इक

यह एक पौराणिक कहानी है।

## 11. जल ही जीवन है (कहानी)

कवि - श्री प्रकाश

### I उन्मुखीकरण से जुड़े प्रश्न :

1. यह विज्ञापन किसके बारे में है?
- उ. यह विज्ञापन पेड़ और मानवी जीवन के बारे में है।
2. यह विज्ञापन किस समाचार - पत्र का है?
- उ. यह विज्ञापन दैनिक भास्कर समाचार-पत्र का है।
3. इससे क्या संदेश मिलता है?
- उ. इससे यह संदेश मिलता है कि “एक पेड़ एक जिंदगी है।” हर एक व्यक्ति को एक-एक पेड़ लगाकर उसका संरक्षण करना चाहिए।

### II. पाठ का उद्देश्य :

1. जल हमारे जीवन का एक प्रमुख आधार है। पानी का सही उपयोग करके आने वाली पीढ़ियों के लिए बचा कर रखना चाहिए। इस विषय को लेकर पानी का महत्व व उपयोग और पानी संबंधी जानकारी दी जा रही है।

### III. विधा विशेष :

1. ‘जल ही जीवन है’ यह एक कहानी पाठ है। इस कहानी में वे सभी तत्व हैं जो एक आदर्श कहानी में होने चाहिए। यह एक काल्पनिक कहानी है। भविष्य में घटनेवाली

समस्या को काल्पनिक ढंग से उजागर कर बड़े रोचक ढंग से कहानी में जल का महत्व बताया है।

#### IV. विषय - प्रवेश :

2. दुनिया की सभी भाषाओं में जल के अलग-अलग नाम हैं। किंतु सबकी प्यास एक है। जल के बिना जीवन की कल्पना करना असंभव है। जल में जीवन बसता है और जीवन में जल का महत्व। प्रस्तुत पाठ में इसी विषय को उजागर करने का प्रयास किया गया है।

#### V. लेखक परिचय :

लेखक का नाम : श्री प्रकाश  
 हिन्दी साहित्य में स्थान : हिन्दी के जाने-माने लेखक हैं।  
 विशेष विधा : निबंध  
 रचनाओं के विषय : विज्ञान संबंधी ढेर सारे निबंध लिखे हैं  
 निबंधों की विशेषता यह है कि, विचारों को उत्तेजना, चालना दैते हैं। प्रस्तुत कहानी “संचार माध्यमों के लिए विज्ञान” नामक पुस्तक से ली गई है।

#### VI. शब्दार्थ :

|             |                          |                |                |
|-------------|--------------------------|----------------|----------------|
| निर्भर      | = आधारित                 | मस्तिष्क       | = सिर          |
| सर्वेक्षण   | = पैमाइश, जांच           | हल करना        | = सुलझाना      |
| जासूस       | = गुप्तचर                | आविष्कार       | = खोज          |
| भूवैज्ञानिक | = भूगर्भ शास्त्रज्ञ      | प्रतीक्षा करना | = इंतजार करना  |
| प्रकाश वर्ष | = कंति वर्ष              | जहरीला         | = विषैला       |
| नियंत्रण    | = वश में रखना, काबू करना | पर्यावरण       | = भूमि को घेरा |
| ओझल हो जाना | = गायब हो जाना           |                | हुआ वातावरण    |

## VII. प्रश्नोत्तर :

### 1. सर्वेक्षण में क्या बताया गया?

उ. सर्वेक्षण में यह बताया गया कि पृथ्वी पर निरंतर पानी की कमी होती जा रही है।

### 2. प्रो. दीपेश के होश क्यों उड़ गये?

उ. पानी की समस्या पर चर्चा के बाद सब चले गये और प्रो. दीपेश आकाश की ओर देखकर कुछ सोच रहे थे कि अचानक एक तारा धरती की तरफ आता हुआ दिखाई दिया किंतु वो पुनः आकाश की ओर मुड़ गया। वो कोई तारा नहीं बल्कि यान था। पर, पृथ्वी पर ऐसे यान का अभी आविष्कार नहीं हुआ था। वह यान किसी अन्य ग्रह से आया होगा यही समझकर प्रो. दीपेश के होश उड़ गये।

### 3. जासूसी यान से क्या तात्पर्य है?

उ. जासूसी यान से यह तात्पर्य है कि, किसी खास कारण जानते या लक्ष्य के लिए गुप्तता से किये जानेवाले कार्य के वाहन को जासूसी यान कहते हैं। अन्य गृह का जासूसी यान तो पृथ्वी पर जासूसी कर सकता है। वह पृथ्वी पर हमला कर सकता है, बुद्धिजीवियों का अपहरण कर सकता है, खनिज संपत्ति की, जलकी चोरी भी कर सकता है।

### 4. मानवाकृति अंतरिक्षयात्री कहाँ से आये थे?

उ. मानवाकृति अंतरिक्षयात्री पृथ्वी ग्रह के निकट और एक प्रकाशवर्ष दूर के ग्रह से अंतरिक्ष-यान से आए थे।

### 5. वे पृथ्वी पर क्यों आये थे?

उ. वे पृथ्वी पर एक मिशन के तहत आए थे। उनके ग्रह का जल विषाणुओं से जहरीला हो गया था। वहाँ महामारी फैल गई थी, लोग मरने लगे थे। लोगों को बचाने के लिए उनके ग्रह के निकट पृथ्वी ग्रह से जल को ल जाने के लिए वे पृथ्वी पर आए थे।

## 6. उनकी प्रार्थना क्या थी?

- उ. उनकी प्रार्थना थी कि पृथ्वीवासी अपने जलाशयों को साफ और सुरक्षित रखें ताकि उनको भी अंतरिक्ष ग्रहवासियों की तरह जलचोर न बनना पड़े।

## VIII. अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया :

### A. प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

#### 1. हमारे जीवन में जल का क्या महत्व है?

- उ. हमारे जीवन में जल का बड़ा महत्व है। जल के बिना हम जीवित नहीं रह सकते। खाने, पीने, नहाने, धोने, खेतीबारी करने, बिजली के उत्पादन करने आदि के लिए जल आवश्यक है। इसलिए जल को जीवन कहा है।

#### 2. धरती पर हर हिस्से में जल है, किंतु स्वच्छ जल की मात्रा बहुत कम है। ऐसी स्थिति में जल का सदुपयोग कैसे करेंगे?

- उ. धरती पर जल तो है किंतु स्वच्छ पेयजल की मात्रा कम है ऐसी स्थिति में हम ये उपाय कर सकते हैं।

1. वर्षा के पानी को जमा करना चाहिए।

2. नदी - नालियों में ये पानी व्यर्थही समुद्र में न बहाकर उसे बाँधों में इकट्ठा करना चाहिए।

3. खेती तथा बिजली उत्पादन में वर्षा के पानी का उपयोग करना चाहिए।

4. बिंदु - सिंचाई से खेती कर पानी का सही मात्रा में उपयोग करना चाहिए।

5. आवश्यकतानुसार ही जल का सदुपयोग करना चाहिए।

6. पानी का महत्व पाठ्यक्रम में बताकर इसका प्रचार और प्रसार करेंगे।

7. जल व्यर्थ करनेवालों पर कड़ी नज़र रखेंगे।

## आ. पाठ पढ़िए। अभ्यास कार्य कीजिए।

1. हमारे घर पहुँचने वाले जल का उपयोग हम किसके लिए कर रहे हैं?
- उ. हमारे घर में पहुँचने वाले जल का उपयोग रसोई पकाने, खाने, पीने, नहाने, धोने, शौचालय जाने तथा साफ सफाई के लिए कर रहे हैं।
2. जल की समस्या भविष्य में क्या आपदाएँ ला सकती हैं?
- उ. जल की समस्या भविष्य में भयंकर आपदाएँ ला सकती हैं। जो इस प्रकार होंगी।
  1. पीने के पानी यानी पेयजल की कमी होगी।
  2. खेती बारी को पानी न मिला तो अनाज की पैदावार सही मात्रा में नहीं होगी, जिससे खादयान्न की कमी हो सकती है।
  3. कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था वाले देशों की आर्थिक स्थिति बिगड़ जायेंगी।
  4. पानी के लिए लोगों के बीच, राज्यों के बीच, राष्ट्रों के बीच लड़ाई - झगड़े हो जाएँगे।
  5. जीव - जन्तु, पशु-पक्षी मरने लगेंगे।
  6. दूषित जल के उपयोग से बीमारियाँ फैलेंगी।
  7. जगह - जगह गंदगी होगी।
  8. प्राणी धरती पर न के बराबर होंगे।
  9. धरती की सुंदरता नष्ट हो जाएगी।
  10. जल की खोज में लोग भटकने लगेंगे, पानी को भूगर्भ से ऊपर लाने के लिए कूपनलिकाओं का उपयोग कर भूगर्भ को छन्नी करेंगे। जिससे भूगर्भ को हानि पहुँचकर भयंकर समस्याएँ उत्पन्न होंगी।

### 3. जल की समस्या का समाधान क्या है?

- उ. जल की समस्या को सुलझाने के ये उपाय हो सकते हैं।
1. बढ़ती जनसंख्या पर नियंत्रण पाना चाहिए।
  2. पर्यावरण प्रदूषण पर नियंत्रण पाने से वर्षा नियमित तथा सही मात्रा में होगी।  
अतिवृष्टि या अनावृष्टि का सामना नहीं करना पड़ेगा।
  3. वर्षा का जल इकट्ठा करना चाहिए।
  4. बिंदु-सिंचन से खेती करनी चाहिए।
  5. धरती पर तालाब, बाँध, नहरों का निर्माण करना चाहिए जिसमें वर्षा का पानी भरा रहे तो वो रिसकर जमीन में जायेगा और भूगर्भ में पानी का भंडार रहने से जरूरत के समय हम उसका उपयोग कुएँ या कूपनालिकाओं से कर सकते हैं।  
कुएँ और कूपनालिकाओं को भूमि के आंतरिक (भीतरी) रूप से पानी का स्रोत मिल जायेगा। धरती गुल्लक के समान हैं। भूगर्भ जल बढ़ाने की कोशिश करनी चाहिए। पानी का उपयोग आवश्यकतानुसार सतर्कता से करना चाहिए।
  6. आवश्यकता से अधिक जल का उपयोग कर जल को नष्ट नहीं करना चाहिए।
  7. जलशुधि यंत्र की सहायता से पानी को शुद्ध करना चाहिए।
  8. वर्षा के पानी को व्यर्थ सागर में बहने से रोकना चाहिए।

### इ. निम्न लिखित पंक्तियों की व्याख्या कीजिए।

1. इस प्रकार पृथ्वी का चक्कर लगाने का क्या मतलब हो सकता है?
- उ. यह वाक्य “जल ही जीवन है” नामक पाठ का है इसके लेखक श्री प्रकाश जी है।  
प्रो. दीपेश ने पहले दिन शाम के समय जब यान को दखा तब उन्होंने सोचा कि

अगले दिन भी उसी समय यान वहाँ से गुजरेंगा। प्रो. दीपेश और प्रो. विकास उस यान की प्रतीक्षा कर रहे थे और उनका इंतजार व्यर्थ नहीं गया। दुबारा वह यान उसी रास्ते से गुजरा, लेकिन वापस अंतरिक्ष में न जाते हुए वो बाग में ही उत्तर गया। तब दोनों आश्चर्यचकित होकर उसे देखते, हुए सोचते हैं कि यह यान यहाँ क्यों उत्तर इस प्रकार पृथ्वी का चक्कर लगाने का क्या मतलब हो सकता है? उनके मन में बहुत सारे संदेह और प्रश्न उभरते हैं।

## 2. हम लोग यहाँ एक मिशन के तहत आए हैं।

उ. यह वाक्य “जल ही जीवन है” नामक कहानी पाठ से लिया गया है। कहानीकार श्री प्रकाश जी है। प्रो. दीपेश और प्रो. विकास आकाश से उतरे अंतरिक्ष यान तथा अंतरिक्ष यात्री को देखकर आश्चर्यचकित हो गए तब अंतरिक्ष यान से उतरे मानवाकृति ने यह कहा की, “हम लोग इस ग्रह से एक प्रकाशवर्ष दूर के एक ग्रह के वासी हैं। हम लोग एक मिशन के तहत आए हैं।” वह मिशन पृथ्वी के जलाशय के पानी को अपने ग्रह ले जाना था।

## 3. आप अपने जलाशयों को साफ़ और सुरक्षित रखें ताकि आपको भी हमारी तरह जलचोर न बनना पड़े।

यह वाक्य “जल ही जीवन है।” पाठ से लिया गया है। कहानीकार श्री प्रकाश जी है। अंतरिक्ष ग्रह के राजा पृथ्वी-ग्रहवासियों के अनुमति के बिना जलनिधिचुराने के लिए माफी माँगते हैं। वे वापस जाते वक्त एक वस्तु छोड़ देते हैं। उसपर लिखा था कि आप अपने जलाशयों को साफ़ और सुरक्षित रखें ताकि आपको भी हमारी तरह जलचोर बनना पड़े। इसका अर्थ है कि पृथ्वी की जल राशियाँ दूसरे ग्रहवासियों के काम आती हैं।

यदि यहाँ की जलराशियाँ विषैले बने तो पृथ्वी वासियों को भी दूसरे ग्रहों की ओर दौड़ना पड़ेगा और यह कष्टदायक होगा। इसलिए जल को सुरक्षित रख और सतर्क रहें।

### इ. विज्ञापन पढ़कर कोई चार प्रश्न बनाइए।

प्रश्न :

1. यह विज्ञापन किस मंत्रालय की ओर से जारी किया गया है?
2. इस विज्ञापन में किस कार्यक्रम के बारे में बताया गया है?
3. यह कार्यक्रम कितने क्षेत्रों के क्रियाशीलता पर लक्षित हैं?
4. इस कार्यक्रम से कितने करोड़ किशोरों को लाभ होगा?

### IX. अभिव्यक्ति - सृजनात्मकता :

अ. इन प्रश्नों के उत्तर तीन-चार पंक्तियों में लिखिए।

1. “जल ही जीवन है” शीर्षक से आपका क्या अभिप्राय है?
- उ. ‘जल ही जीवन है’ अर्थात् पानी ही जिंदगी है, पानी ही सब कुछ है, पानी के बिना जिंदा नहीं रह सकते। जल का एक पर्यायवाची शब्द है - ‘जीवन’ और एक शब्द है ‘अमृत’।

जल, जन और जग का गहरा नाता हैं। हर एक प्राणी वनस्पति के लिए जल आवश्यक है। जल के बिना जीवन की कल्पना नहीं हो सकती इसीलिए जल मे जीवन जुड़ा है यहीं ‘जल ही जीवन है’ शीर्षक से मरा अभिप्राय है।

2. जल स्रोत के रख रखाव के बारे में आप क्या सुझाव देना चाहेंगे?

उ. जल स्रोत के रख रखाव के बारे में मैं ये सूचनाएँ / सुझाव देना चाहता हूँ।

1. जल स्रोत को दूषित होने से बचाना चाहिए।

2. शहरों की गंदगी तथा कल-कारखानों के कचरे को नदियों में गिराने से रोकना होगा।

3. कुएँ के जल को दूषित होने से बचाने के लिए उनको ढ़कने की व्यवस्था करनी होगी।

4. पेयजल की नदियों में कपड़े धोने या जानवरों को नहलाने पर प्रतिबंध (रोक) लगाना होगा।

5. जल प्रदूषण को हटाने के लिए सरकार जो कदम उठाती हैं उसमें सरकार के साथ हमें सहयोग करना चाहिए।

**आ.** आज दुनिया के सभी देशों में जल की समस्या बनी हुई है। इसके समाधान में हम सब की क्या जिम्मेदारी है?

उ. आज दुनिया के सभी देशों में जल की समस्या बनी हुई है। इसके समाधान में हम सबको यह जिम्मेदारी उठानी चाहिए। समस्या को सुलझाने के लिए जागरूक रहना चाहिए। सरकार को भी इसके तहत कुछ कदम उठाने चाहिए।

1. वर्षा के पानी को व्यर्थ ना बहने दे, उसे इकट्ठा करना चाहिए।

2. नदियों पर बाँध बनायें।

3. भूगर्भ में पानी की मात्रा बनी रहें। इसके लिए कोशिश करनी चाहिए कि, पानी तालाबों नदियों तथा नहरों में जमा हो। इसके लिए तालाबों, नदियों तथा नहरों के लिए जमीन रहें उसपर इमारतें न बनी हो।

4. खारे पानी को शुद्ध करने का प्रबन्ध करना चाहिए।
5. जल-विवादों को चर्चाओं द्वारा हल करना चाहिए।
6. संयुक्त राष्ट्र संघ के द्वारा जल संधो की स्थापना करके जल को बॉटने की कोशिश करें। जल प्रदूषण से बचे रहने के कार्यक्रम को अमल में लाना चाहिए।
7. जनता को भी जल समस्या के समाधान में सरकार को सहयोग देना चाहिए।
  - इ. “जल ही जीवन है।” इस विषय पर एक पोस्टर बनाइए।
  - इं. आपके गाँव में जल संरक्षण कैसे किया जा रहा है? इसके बारे में बताते हुए कुछ सुझाव दीजिए।
  - उ. हमारे गाँव में जल संरक्षण की विधि कुछ इस तरह है।
    1. हमारे गाँव में जो तालाब है उनमें पशुओं के प्रवेश पर (मनाही) रोक लगाई गई है।
    2. घर घर में नल का प्रबंध किया है।
    3. कचरे को, जहरीले पदार्थों को जलाशयों में डालने पर रोक लगा दी है।
    4. कुएँ के जल को दूषित होने से बचाने के लिए उनपर ढकने की व्यवस्था की गयी है।
    5. जल शुद्धि की प्रक्रियों का प्रयोग कर जल को शुद्ध रखा जा रहा है।

### **सुझाव :**

1. समय-समय पर तालाबों की सफाई करनी चाहिए।
2. जल संरक्षण समिति की स्थापना करनी चाहिए।
3. समिति के तहत जल संरक्षण संबंधी विषयों पर निर्णय तथा सूचनाएँ देनी चाहिए।

## X. भाषा की बात :

अ. सूचना पढ़िए। उसके अनुसार कीजिए।

1. 'जल' शब्द से कई शब्द बने हैं।

जैसे: जलचरा। इसी तरह के तीन उदाहरण दीजिए।

1. जलज    2. जलद    3. जलराशि

2. पाठ में आये विदेशज शब्द चुनकर लिखिए। जैसे : मिशन।

1. यान    2. प्रो.    3. लान    4. गुजरना।

आ. नीचे दिये गये वाक्य पढ़िए। कोष्ठक में दी गयी सूचना के अनुसार वाक्य बदलिए।

1. यह तो कोई यान है। (भूत काल में बदलिए)

उ. यह तो कोई यान था।

2. मेरे कई साथी उस संपूर्ण नीले ग्रह पर फैले थे। (भविष्य काल बदलिए)

उ. मेरे कई साथी इस संपूर्ण नीले ग्रह पर फैलेंगे।

3. पानी के अभाव में हमारे लोग मर रहे थे। (वर्तमान काल में बदलिए)

उ. पानी के अभाव में हमारे लोग मर रहे हैं।

4. हम लोग अपना मिशन चुपचाप पूरा करना चाहते थे। (भविष्य काल में बदलिए)
- उ. हम लोग अपना मिशन चुपचाप पूरा करना चाहेंगे।

इ. नीचे दिया गया उदाहरण पढ़िए। उसके अनुसार एक वाक्य बनाइए।

उदाहरण : पृथ्वी पर मानव ने काफ़ी प्रगति कर ली थी। पृथ्वी पर किसने काफ़ी प्रगति कर ली थी?

- उ. अभी तक ऐसे यान का आविष्कार नहीं हुआ है। अभी तक किसका आविष्कार नहीं हुआ है?

ई. अर्थ के आधार पर वाक्य पहचानिए।

1. ओह! यह तो कोई यान है।  
उ. विस्मयादि बोधक)
2. यह यान कहाँ से आया?  
उ. प्रश्नवाचक
3. दोनों ने एक साथ उस अंतरिक्ष यात्री से पूछा।  
उ. निदान वाचक
4. यहाँ का जल शुद्ध होगा।  
उ. संदेहवाचक
5. हमारे यहाँ जल होता तो हम पृथ्वी पर न आते।  
उ. संकेतवाचक

6. हमें शुद्ध जल चाहिए।  
उ. आज्ञावाचक
  
7. आप भी कभी हमारे यहाँ आइए।  
उ. इच्छावाचक
  
8. नदी-नालों में कचरा बहाना मना है।  
उ. निषेधवाचक

## 12. धरती के सवाल अंतरिक्ष के जवाब (साक्षात्कार)

### I उन्मुखीकरण से जुड़े प्रश्न :

प्र.1. हवाई जहाज का आविष्कार किसने किया?

उ. हवाई जहाज का आविष्कार विलबर राइट व ओरोविन राइट भाइयों ने किया।

प्र.2. उड़ते हवाई जहाज को देखकर आपको क्या लगता है? क्यों?

उ. उड़ते हुए हवाई जहाज को देखकर हमे भी, आसमान में उड़ने, सैर करने का मन करता है। क्योंकि मछली के जैसा तैरना हो तो हम पानी में तैर सकते हैं किंतु पंछी की तरह उड़ना हो तो बिना हवाई जहाज के संभव नहीं है।

प्र.3. पशु-पक्षी और मानव गुणों में क्या अंतर है?

उ. पशु-पक्षियों को मानव की तुलना में कुछ विशिष्ट प्रकृतिक गुण प्राप्त हुए हैं।

उ. मानव के पास बुद्धि है, अपनी भावनाएँ व्यक्त करने के लिए भाषा है, अपनी सोच है यह सब पशु-पक्षियों के पास नहीं है किंतु उनके पास भूकंप को जानने की शक्ति है, घ्राण-शक्ति (सूँधने की शक्ति) है और पक्षियों के पास हवा में उड़ने की ताकत है। ये उनके विशिष्ट प्राकृतिक गुण हैं। हम मानवों के पास ये गुण नहीं हैं। यही पशु-पक्षी और मानव में अंतर है।

### उद्देश्य :

देश की सुरक्षा का कार्य अत्यंत महान कार्य है। इसके लिए अनेक प्रकार के नवीन तथा वैज्ञानिक उपकरण अपना विशेष दायित्व निभाते हैं। उन्हीं में कृत्रिम उपग्रह, रॉकेट, मिजाइल

तथा रासायनिक वायु आदि का आविष्कार हुआ है। इस पाठ के द्वारा छात्रों में देश की सुरक्षा की भावना जागृत कराना और उपकरणों का आविष्कार करनेवाले वैज्ञानिकों की जानकारी देना ही इस पाठ का मुख्य उद्देश्य है।

### विधा विशेष :

प्रत्यक्ष रूप से प्रश्नोत्तर द्वारा की जाने वाली प्रक्रिया ही साक्षात्कार है। इस पाठ में साक्षात्कार विधा का परिचय दिया गया है। जिसमें भारत के पूर्व राष्ट्रपति मिजाइल मैन मान्य अब्दुल कलाम जी का साक्षात्कार, जो कुछ छात्रों ने लिया था और टेसी थॉमस, मिजाइल वुमन दवारा इंडिया टुडे साप्ताहिक पत्रिका को दिया गया साक्षात्कार- यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

### विषय - प्रवेश :

“आज हमारे यहाँ जब भी अंतरिक्ष विज्ञान और मिजाइल की बात की जाती है, तो सभी के मस्तिष्क में एक ही नाम गूँजता है - ‘ए.पी.जे. अब्दुल कलाम’। सच्चे अर्थों में वे देश के ही नहीं, बल्कि पूरी दुनिया के आदर्श हैं। उन्होंने दुनिया के मानचित्र में भारत को जो स्थान दिलाया है, उसके लिए भारतवासी उनके ऋणी हैं। मैं गर्व के साथ कहना चाहती हूँ कि वे मेरे गुरु हैं।” इतने सुंदर विचार रखने वाली भारत की प्रथम ‘मिसाइल वुमन’ शिष्या टेसी थॉमस और उनके गुरु ए.पी.जे अब्दुल कलाम केबारे में जानने के लिए आगे पढ़े.

### लेखक परिचय :

#### साक्षात्कार - एक

1. साक्षात्कार देनेवाला : अब्दुल कलाम

2. साक्षात्कार कर्ता (लेनेवाला) : कुछ छात्र

#### साक्षात्कार - दो

- टेसी थॉमस

- इंडिया टुडे साप्ताहिक पत्रिका

(कलाम जी, राष्ट्रपति (प्रसिद्ध भारतीय साप्ताहिक कार्यकाल के दौरान, पत्रिका)

उस समय के कुछ छात्र)

## कठिन शब्द और अर्थ :

|               |                            |                       |                          |
|---------------|----------------------------|-----------------------|--------------------------|
| 1. वैज्ञानिक  | = शास्त्रज्ञ               | 2. साक्षात्कार        | = मुलाकात                |
| 3. योगदान     | = सहयोग                    | 4. कारगर              | = असरदार                 |
| 5. कानूनन     | = शासन के अनुसार           | 6. नशाखोरी            | = मादक द्रव्य            |
| 7. मुहिम      | = कठिन काम                 | 8. उन्मूलन            | = निर्मूलन               |
| 9. अनुसंधान   | = खोज                      | 10. निर्देशक          | = आदेश देनेवाला          |
| 11. बयान करना | = वर्णन करना               | 12. साक्षात्कार कर्ता | = मुलाकत लेनेवाला        |
| 13. समालापी   | = प्रक्षेपणास्त्र, त्रिपणी | 14. मिसाइल            | = प्रक्षेपणात्र, क्षिपणी |
| 15. अभियान    | = खास कार्यक्रम            | 16. भ्रष्टाचार        | = लाचखोरी आचरणहीनता      |

## प्रश्नोत्तर :

- प्र.1.** निरक्षरों को साक्षर बनाने के लिए सरकार द्वारा क्या-क्या कदम उठाये जा रहे हैं?
- उ. भारतीय संसद ने संविधान संशोधन अधिनियम 2002 के माध्यम से ६ से १४ वर्ष के बच्चों के लिए शिक्षा पाने के अधिकार को मौलिकअधिकार के रूप में घोषितकर दिया गया है। ६ से १४ वर्षीय बच्चों को निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा दी जा रही है। पाठशालाएँ बच्चों की पहुँच के अंदर हो इसी कोशिश की जा रही है। पाठशालाओं में सुविधाएँ बढ़ाई जा रही हैं। प्रवेश-परीक्षा नहीं होती है। मौलिक या मानसिक रूप से सजा देना निषेधहै। इस के अलावा, मुफ्त रूप से पुस्तकें व वर्दी दी जा रही हैं। दोपहर को मुफ्त से भोजन दिया जा रहा है। छात्र वृत्ति भी दी जा रही है।
- प्र.2.** एक छात्र में कौन-कौन से महत्वपूर्ण गुण होने चाहिए?
- उ. एक छात्र के लिए सबसे महत्वपूर्ण है- उसकी अपने प्रति ईमानदारी और दूसरों के प्रति आदर का गुण ये गुण छात्र को निस्संदेह आदर्श नागरिक बनायेंगे।

**प्र.3. एक छात्र के रूप में विकसित भारत क स्वप्न को साकार करने के लिए हमें क्या-क्या करना चाहिए?**

- उ. 1. एक छात्र होने के नाते, आप जिस कक्षा में भी पढ़ते हो, उसमें आगे बढ़ने के लिए खूब परिश्रम करें।
2. अपने जीवन में पहले एक लक्ष्य बनायें। फिर उसे प्राप्त करने के लिए आवश्यक ज्ञान और अनुभव प्राप्त करें।
3. निरंतर प्रयत्नशील रहते हुए सबसे बढ़िया काम करने की ओर बढ़ते रहें।
4. नैतिक मूल्यों को ग्रहण करें। हमेशा परिश्रमी बनने का प्रयास करना चाहिए।
5. छुट्टी के दिनों में छात्र गरीब और सुविधाओं से वंचित बच्चों को पढ़ाने का काम करें और इसे अपने जीवन में एक उद्देश्य के रूप में लें।
6. छात्र अधिक से अधिक पौधे लगायें। इससे पर्यावरण को संतुलित बने रहने में सहायता मिलेगी। हमारे ये कार्य न केवल हमको, बल्कि हमारे राष्ट्र को भी विकास और समृद्धि के पथ पर ले जायेंगे।

**प्र.4. भारत को भ्रष्टाचार से मुक्त कराने में छात्रों का क्या योगदान हो सकता है?**

उ. भारत को भ्रष्टाचार से मुक्त कराने में छात्रों का बड़ा योगदान हो सकता है। यह आंदोलन अपने घर और विद्यालय से ही आरंभ करना होगा। भ्रष्टाचार उन्मूलन में माता, पिता और प्राथमिक विद्यालय के शिक्षक बहुत बड़े सहायक सिद्ध हो सकते हैं। यदि ये तीनों, बच्चों को ईमानदारी और सच्चाई का पाठ पढ़ते हैं तो इसके बाद जीवन में शायद ही कोई उनको हिला पाएगा। अतः हर घर में इस तरह का आंदोलन होना चाहिए। सार्वजनिक जीवन में भ्रष्टाचार मिटाने के लिए हमें संकल्प लेना चाहिए तथा सदैव ईमानदार एवं भ्रष्टाचार मुक्त जीवन का निर्वाह कर दूसरों के लिए आदर्शवान बने रहें।

### प्र.5. बच्चों के लिए टेसी थॉमस का संदेश क्या है?

उ.बच्चे जो भी पढ़े ध्यान से पढ़े, मेहनत करें और लक्ष्य प्राप्त करने तक रुके नहीं। जो उन्हें पसंद हैं, उसमें अपना जी-जान लगा दें। कमर कसकर तैयारी करें। सफलता अवश्य उनके कदम चूमे गी। यही बच्चों के लिए टेसी थॉमस का संदेश है।

### प्र.6. टेसी यॉमस को 'अग्नि-पुत्री' का उपनाम क्यों दिया गया होगा?

उ.

रक्षा अनुसंधान और विज्ञान को पुरुषों का क्षेत्र माना जाता है। मगर टेसी ने अपनी मेहनत, लगन और दृढ़ निश्चय से पुरुष वर्चस्व वाले क्षेत्र में सफलता के नए शिखर तय किए हैं। वे रक्षा अनुसंधान और विकास संगठन (डी.आर.डी.ओ.) के अग्नि कार्यक्रम की निदेशिका बनीं। उन्हे मिसाइल प्रॉजेक्ट की पहली महिला प्रमुख बनने का गौरव प्राप्त हुआ। अग्नि मिजाइल अभियान भी सफल हुआ। इसीलिए उनको भारत की 'प्रथम मिजाइल वुमन' और 'अग्नि पुत्री' उपनाम दिए गए होंगे।

## अर्थग्राह्यता - प्रतिक्रिया।

### अ. प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

#### प्र.1. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम जैसे कुछ और महापुरुषों के नाम बताइए।

उ. डॉ. सर सी.वी.रामन, जगदीश चंद्रबोस, एल्ला प्रगड़ा सुब्बाराव, सतीष धवन आदि।

#### प्र.2. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम और टेसी थॉमस में आपको सबसे अच्छी बात कौन सी लगी और क्यों?

उ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने अपनी प्रतिभा, परिश्रम और लगन से यह सिद्ध कर दिखाया कि मनुष्य के लिए विश्व में कुछ भी असंभव नहीं है। मन में अगर चाह हो तो उसे राह अपने आप मिल जाती है। यह बातें अच्छी लगी। टेसी थॉमस के जीवन की मेहनत, लगन और

दृढ़ निश्चय आदि बातें बहुत अच्छी लगीं। क्योंकि उन्होंने इन्हीं के द्वारा पुरुष वर्चस्ववाले क्षेत्र में सफलता प्राप्त कर एक महत्वपूर्ण पहचान बनाई है।

### **आ. पाठ पढ़िए। अभ्यास कार्य कीजिए।**

**प्र.1. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम का साक्षात्कार किसने लिया?**

उ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम जब राष्ट्रपति के पद पर थे तब कुछ छात्रों ने उनका साक्षात्कार लिया।

**प्र.2. टेसी थॉमस का साक्षात्कार किसने लिया?**

उ. टेसी थॉमस का साक्षात्कार ‘‘इंडिया टुडे’’ साप्ताहिक पत्रिका ने लिया।

**प्र.3. ए.पी.जे अब्दुल कलाम ने बाल मज़दूरी को समाप्त करने के लिए क्या उपाय बताये**

उ. बच्चे अभिभावकों को नशाखोरी से मुक्ति दिलाने के लिए मुहिम चलायें। प्रौढ़ शिक्षा के माध्यम से शिक्षित करने की व्यवस्था भी करें। तभी अभिभावक बच्चों को मज़दूरी करने से दूर रख सकते हैं। इसी के साथ और भी तीन उपाय हैं -

1. बच्चा स्वयं अपनी पढ़ाई जारी रखने में रुचि दिखायें।
2. माता-पिता को शिक्षित करके और
3. बच्चों से काम लेने वाले मालिकों में आत्म-नियंत्रण की प्रवृत्ति का विकास करे, ताकि वे उन बच्चों को अपने बच्चे जैसा ही समझें।

**प्र.4. टेसी थॉमस की स्कूली पढ़ाई कहाँ हुई? उन्हें किन विषयों में रुचि थी?**

उ. टेसी थॉमस की शिक्षा उनकी दीक्षा केरल स्थित अलपुङ्गा में हुई। उन्हें गणित और विज्ञान के विषय में रुचि थी।

### इ. निम्नलिखित पंक्तियों की व्याख्या कीजिए।

1. सार्वजनिक जीवन में भ्रष्टाचार उन्मूलन के लिए व्यापक आंदोलन की आवश्यकता है।
- उ. यह वाक्य ए.पी.जे अब्दुल कलाम जी द्वारा कहा गया है। वो कहते हैं कि “भ्रष्टाचार” के उन्मूलन के लिए व्यापक आंदोलन की आवश्यकता है। यह आंदोलन अपने घर और विद्यालय से ही आरंभ करना होगा। भ्रष्टाचार उन्मूलन में केवल तीन ही तरहके लोग सहायक सिद्ध हो सकते हैं। वे हैं - माता, पिता और प्राथमिक विद्यालय के शिक्षक यदि तीनों बच्चों को ईमानदारी और सच्याई का पाठ पढ़ाते हैं तो इसके बाद जीवन में ही कोई उन्हें हिला पायेगा। हर घर में इस तरह के आंदोलनकी आवश्यकताहै।”

### प्र.2. सच्चे अर्थों में वे देश के ही नहीं बल्कि पूरी दुनिया के आदर्श हैं।

- उ. यह वाक्य टेसी थॉमस ने उनके गुरु ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के लिए कहा है। इसी के साथ वे बताती हैं कि सच्चे अर्थों में वे देश के हो नहीं, बल्कि पूरी दुनिया के आदर्श हैं। उन्होंने दुनिया के मानचित्र में भारत को जो स्थान दिलाया है, उसके लिएभारतवासी उनके ऋणी हैं। उन्होंने ही टेसी थॉमस को प्रेरणा ‘अग्नि पंख’ दिये हैं। वेमहान थे, महान हैं और महान रहेंगे।

### ई. गद्यांश पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए। (टेक्स्ट बुक पेज नं. 72)

#### प्र.1. विज्ञान कैसा विषय है?

- उ. विज्ञान ऐसा विषय है जो किताबों में कम और समझ में ज्यादा बसता है।

## प्र.2. विज्ञान के कुछ उदाहरण दीजिए।

उ. क्रूतुओं का बदलना, बीज से नन्हे पौधे का निकलना, पानी पर कागज की नावों का तैरना, पक्षियों का उड़ना, तितलियों के द्वारा फूलों का मकरंद पीना, गुब्बारों का हवा से फूलना आदि विज्ञान के कुछ उदाहरण हैं।

## प्र.3. जानने की इच्छा न हो तो क्या होगा?

उ. जानने की इच्छा न हो तो वो किताबें पढ़कर भी कुछ नहीं सीख सकता।

### अभिव्यक्ति - सृजनात्मकता :

#### अ. इन प्रश्नों के उत्तर तीन-चार पंक्तियों में लिखिए।

##### प्र.1. कलाम के विचार में ''आदर्श छात्र'' के गुण क्या हैं?

उ. कलाम के विचार में ''आदर्श छात्र'' के गुण ये हैं। जैसे :

1. अपने प्रति ईमानदारी और दूसरों के प्रति आदर का गुण आदर्श छात्र का

मुख्य गुण है।

2. लक्ष्य सिद्धि के लिए निरंतर प्रयत्नशील होना।

3. नैतिक मूल्यों को ग्रहण करना।

4. खूब परिश्रम करना।

5. निरंतर प्रयत्नशील रहते हुए सबसे बढ़िया काम करना।

6. छुट्टी के दिनों में गरीब बच्चों को पढ़ाना।

7. लक्ष्य बनाकर उसे प्राप्त करने के लिए आवश्यक ज्ञान और अनुभव प्राप्त करें।

8. अधिक से अधिक पेड़ पौधे लगायें।

## प्र.2. टेसी थॉमस के जीवन से हमें क्या संदेश मिलता है?

- उ. हम जो भी पढ़े ध्यान से पढ़े, मेहनत करें, लक्ष्य प्राप्त करने तक रुके नहीं।

हमें जो पसंद है उसमें अपना जी-जान लगादें। कमर कसकर तैयारी करें। लड़कियाँ को नहीं सोचना चाहिए कि वे लड़कों से कम हैं। ज्ञान-विज्ञान, प्रौद्योगिकी (टेक्नॉलजी) आदि क्षेत्र स्त्री-पुरुष के लिए समान हैं। टेसी थॉमस के जीवन से हमें यही संदेश मिलता है।

- आ. इन प्रश्नों के उत्तर आठ-दस पंक्तियों में लिखिए।

## प्र.1. अच्छे नागरिक बनने के लिए कौन-से गुण होने चाहिए?

- उ. अच्छे नागरिक बनने के लिए निम्न लिखित गुण होने चाहिए। जैसे :

1. सामाजिक समस्याओं के प्रति जागरूक होना चाहिए।
2. साक्षरता को बढ़ाना चाहिए। सभी लोग कम से कम पाँच महिलाओं को शिक्षित कराना चाहिए।
3. सार्वजनिक जीवन में भ्रष्टाचार उन्मूलन के लिए नागरिकों को आगे कदम बढ़ाना चाहिए।
4. हर नागरिक को सच्चाई तथा ईमानदारी से रहना चाहिए।
5. दूसरों के प्रति आदर भावक गुण को अपनाना चाहिए।
6. खूब पुरिश्रमी होना चाहिए।
7. अपने जीवन में पहले एक लक्ष्य को बनाना चाहिए। उसे प्राप्त करने की ओर कदम बढ़ाना चाहिए।
8. नैतिक मूल्यों को ग्रहण करना चाहिए।
9. अधिक से अधिक पौधे लगाना चाहिए।

## प्र.2. टेसी थॉमस अब्दुल कलाम को अपना आदर्श मानती हैं। क्यों?

उ. टेसी थॉमस अब्दुल कलाम को अपना आदर्श मानती हैं। जब भी अंतरिक्ष विज्ञान और मिसाइल की बात की जातो है, तो सभी के मस्तिष्क में एक ही नाम गूँजता है - 'ए.पी.जे. अब्दुल कलाम'। सच्चे अर्थों में वे देश के ही नहीं, बल्कि पूरी दुनिया के आदर्श हैं। उन्होंने दुनिया के मानचित्र में भारत को जो स्थान दिलाया है, उसके लिए भारतवासी उनके ऋणी हैं। टेसी थॉमस को गर्व है कि अब्दुल कलाम जी उनके गुरु हैं। वे महान हैं। वे महान रहेंगे। टेसी थॉमस ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के नेतृत्व में कामकर चुकी है और उनका मानना है कि उनकी नेतृत्व क्षमता बेमिसाल है। इसलिए टेसी थॉमस अब्दुल कलाम को अपना आदर्श मान कर गर्व अनुभव करती हैं।

## इ. किसी एक साक्षात्कार को उचित शीर्षक देते हुए निबंध के रूप में लिखिए।

### अग्नि - पुत्री - टेसी थॉमस

टेसी थॉमस का जन्म केरल स्थित अलप्पुझा में हुआ। उनकी शिक्षा-दीक्षा भी यहीं हुई। उन को बचपन से ही कुछ अलग करने की चाह थी। वे अंतरिक्ष के सपने देखती थीं। इसलिए गणित और विज्ञान को उन्होंने अपने तन-मन में बसा लिया। इसमें उनके अध्यापकों का बहुत बड़ा योगदान रहा। टेसी जी ने दूपनी मेहनत, लगन और दृढ़-निश्चय से पुरुष - वर्चस्व वाले रक्षा अनुसंधान और विकास संगठन(डी.आर.डी.ओ.) में, सन् 1985 में एक युग - वैज्ञानिक के रूप में चुनी गई। देश भर के दस युवा - वैज्ञानिकों में एक थी।

प्रमुख वैज्ञानिक एवं मिसाइल मैन 'ए.पी.जे. अब्दुल कलाम असामान्य नेतृत्व में टेसी जी काम कर चुकी है। अग्नि-५ कार्यक्रम की निदेशिका बनी। उन्होंनेदेश के किसी क्षिपणी - परियोजना (मिसाइल प्रोजेक्ट) की पहली महिला प्रमुख बनने का गौरव प्राप्त किया।

उनको भारत की 'प्रथम मिजाइल' वुमन' और 'अग्नि-पुत्री' कहते हैं। ऐसे कहने पर उनको बेहद खुशी होती है।

वे ए.पी.जे अब्दुल कलाम को अपना आदर्श मानती हैं और ऐसे मानने में गर्व भी करती हैं। वे गर्व के साथ कहती हैं कि कलाम जी मेरे गुरु हैं। उन्होंने मुझे प्रेरणा के 'अग्नि पंख' दिए हैं। 'अग्नि मिसाइल' के अभियान से जुड़कर जो आनंद प्राप्त हुआ है, वे सदा याद रहेंगे।

वे बच्चों को सुझाव देती हैं कि बच्चे जो भी पढ़े, ध्यान से पढ़े, मेहनत करें और लक्ष्य प्राप्त करने तक रुके नहीं। जो उन्हें पसंद हैं उनमें अपना जी-जान लगादें। कमर कसकर तैयारी करें। सफलता अवश्य उनके कदम चूमेगी। वे भारतीय संस्कृति और सादगी की प्रति मूर्ति हैं। बच्चों को, खासकर लड़कियों को उस महान महिला को आदर्श बनाना चाहिए।

### इ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के विचार आदर्श योग्य हैं।

इन विचारों को अमल में लाने के लिए आप क्या करेंगे?

उ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के आदर्श विचार अनुकरणीय हैं। इन विचारों को अमल में लाने के लिए मैं ये करूँगा :

1. मैं कम से कम पाँच निरक्षर महिलाओं को शिक्षित करूँगा।
2. वर्तमान समस्याओं में बढ़ती जन संख्या से उत्पन्न होने वाली समस्याओं को बताकर उसे (कम) नियंत्रित करने की कोशिश करूँगा।
3. बाल मजदूरी को दूर करने का प्रयत्न करूँगा।
4. छुटियों में प्रौढ़ व्यक्तियों भी शिक्षित करना चाहूँगा।
5. भ्रष्टाचार से दूर रहूँगा और दूसरों को भी भ्रष्ट नहीं होने दूँगा।

6. एक छात्र होने के नाते में खूब परिश्रम कर पढ़ूँगा और लक्ष्य की ओर बढ़ूँगा।

समय-समय पर पौधे लगाकर पर्यावरण को बचाने की कोशिश करूँगा।

इस प्रकार मैं अब्दुल कलाम जी के विचारों को अमल में लाने के लिए भरसक कोशिश करूँगा।

### **भाषा की बात :**

अ. कोष्ठक में दी गयी सूचना पढ़िए और उसके अनुसार कीजिए।

1. प्रतिभा, परिश्रम, छात्र, शिक्षा (एक-एक शब्द का वाक्य प्रयोग कीजिए। पर्याय शब्द लिखिए) वाक्य प्रयोग:

- |    |         |   |                                                  |
|----|---------|---|--------------------------------------------------|
| क. | प्रतिभा | - | हर व्यक्ति में कोई न कोई <u>प्रतिभा</u> होती है। |
| ख. | परिश्रम | - | <u>परिश्रम</u> का फल मीठा होता है।               |
| ग. | छात्र   | - | राम एक अच्छा <u>छात्र</u> है।                    |
| घ. | शिक्षा  | - | जीवन में <u>शिक्षा</u> का बड़ा महत्व है।         |

### **पर्याय शब्द :**

- |    |         |   |                                          |
|----|---------|---|------------------------------------------|
| क. | प्रतिभा | - | कौशल, नैपुण्य, निपुणता                   |
| ख. | परिश्रम | - | मेहनत, श्रम                              |
| ग. | छात्र   | - | विद्यार्थी, चेला, शिष्य, अभ्यासी, अद्यता |
| घ. | शिक्षा  | - | विद्या, पढ़ाई, तालिम                     |

2. संभव, ज्ञान, बढ़िया, साकार (विलोम शब्द लिखिए। वाक्य प्रयोग कीजिए)

उ. विलोम शब्दः

- क. संभव            ×    असंभव
- ख. ज्ञान            ×    अज्ञान
- ग. बढ़िया            ×    घटिया
- घ. साकार            ×    निराकार

**वाक्य प्रयोग :**

- क. असंभव कार्य परिश्रम से संभव होते हैं।
- ख. ज्ञान से अज्ञान मिटता है।
- ग. दुकान में बढ़िया तथा घटिया हर तरह का माल था।
- घ. किसी के लिए भगवान साकार है तो किसी के लिए निराकार।

3. छात्रा, छुट्टी, पौधा, बात (वचन बदलिए। वाक्य प्रयोग कीजिए)

- उ. वचन
- क. छात्रा - छात्राएँ
- ख. छुट्टी - छुट्टियाँ
- ग. पौधा - पौधे
- घ. बात - बातें

**वाक्य प्रयोग :**

- क. छात्रा - मैं दसवीं कक्षा की छात्रा हूँ।
- ख. छुट्टी - मैं कल छुट्टी पर था।

- ग. पौधा - गरमी से पौधा सूख गया।  
घ. बात - उन्होंने सच्ची बात कही थी।

### आ. सूचना पढ़िए । उसके अनुसार कीजिए।

1. निर्धन, संकल्प (संधि विच्छेद कीजिए)  
उ. निर्धन = नि: + धन (विसर्ग संधि)  
संकल्प = सम् + कल्प (व्यंजन संधि)
2. सुबह - शाम, युवाशक्ति (समास पहचानिए)  
उ. समास पद - विग्रह - समास का नाम  
सुबह - शाम - सुबह और शाम (द्वंद्व समास)  
युवाशक्ति - युवा की शक्ति (तत्पुरुष समास)

### इ. रेखांकित शब्दों पर ध्यान दीजिए और इन्हें समझिए।

1. राष्ट्रपति कार्यकाल के दौरान कुछ बालकों ने उनका साक्षात्कार लिया था।  
दोनों वाक्यों में रेखांकित शब्द 'शब्द-भेद' के अंतर्गत आते हैं -
  1. कार्यकाल - संज्ञा, पुलिंग
  - कुछ - विशेषण, अनिश्चय वाचक सर्वनाम?
  - उनका - पुरुष वाचक सर्वनाम
2. निरंतर - क्रिया विशेषण  
बढ़िया - विशेषण  
की ओर - सम्बन्ध वाचक

## ई. रेखांकित शब्दों के स्थान पर कोष्ठक में दिये गये शब्दों का प्रयोग कर वाक्य बनाइए।

एक छात्र होने के नाते आप जिस कक्षा में भी पढ़ते हों, उसमें आगे बढ़ने के लिए खूब परिश्रम करें।

(नागरिक-देश, खिलाड़ी-खेल, कलाकार-कला, अध्यापक-विषय, परीक्षार्थी-परीक्षा)

- उ.1. एक नागरिक होने के नाते आप जिस देश में भी रहत हों, उसमें आगे बढ़ने के लिए खूब परिश्रम करें।
2. एक खिलाड़ी होने के नाते आप जिस खेल में भी खेलत हों, उसमें आगे बढ़ने के लिए खूब परिश्रम करें।
3. एक कलाकार होने के नाते आप जिस कला में भी प्रवीण हों, उसमें आगे बढ़ने के लिए खूब परिश्रम करें।
4. एक अध्यापक होने के नाते आप जिस विषय में भी सक्षम हों, उसमें आगे बढ़ने के लिए खूब परिश्रम करें।
5. एक परीक्षार्थी होने के नाते आप जिस परीक्षा में भी बैठते हों, उसमें आगे बढ़ने के लिए खूब परिश्रम करें।

## उपवाचक - 1. शांति की राह में

प्रश्नोत्तर : -

### 1. शांति की परिभाषा क्या हो सकती है? अपने शब्दों में बताइए?

उ. मन को नियंत्रित कर उसे बुराई के रास्ते पर चलने से रोकना ही वास्तविक 'शांति' है। मानसिक सुख की प्राप्ति ही शांति है। यदि हमारे पास दुनिया का सारा वैभव और सुख साधन उपलब्ध है परंतु शांति नहीं है तो वैसे सुख साधन व्यर्थ है। यदि शान्ति एवं संतोष है तो हमारे दुःख पीड़ा, लालच एवं स्वार्थ का अपने आप ही अंत हो जाता है।

### 2. नेल्सन मंडेला के जीवन से हमें क्या संदेश मिलता है?

उ. न्याय समानता और सम्मान के लिए किए जाने वाले संघर्ष के प्रतीक नेल्सन मंडेला का व्यक्तित्व हमारे लिए प्रेरणास्पद है उनका बलिदान इतना जबरदस्त था कि वे जगह-जगह मानवीय प्रगति के लिए लोगों को जो भी वे कर सके करने की प्रेरणा देते थे। हमारी दुनिया को अक्सर जो असहायता और निराशा घेर लेती उसके बिल्कुल विपरित उनके जीवन की कहानी है। इस प्रकार उनके जीवन से अन्याय, रंगभेद के विरुद्ध आवाज उठाने, संघर्ष से लड़ने, अहिंसा, शांति, सेवाभाव भाईचारे का संदेश मिलता है।

### 3. मदर तेरेसा ने अपने जीवन में क्या सिद्ध कर दिखाया ?

उ.

मदर तेरेसा एक ऐसा नाम है, जो शांति, करुणा, प्रेम और वात्सल्य का पर्याय कहलाता है। मदर तेरेसा का सपना था कि अनाथों, गरीबों, और रोगियों की सेवा करना। उसके लिए उन्होंने

मिशनरीज आँफ चारिटि और 'निर्मल हृदय' नामक संस्थाओं की स्थपना की। उन्होंने अपना सारा जीवन गरीब, अनाथ और बीमार लोगोंकी सेवा करते हुए बिताया। उन्हेंने सिद्ध कर दिखाया कि दुखियों की सहायता से बड़ाकोई धर्म नहीं है। मानव सेवा करने के कोई अपना- पराया देश नहीं है। अनथो, गरीबो, रोगियों की सेवा ही सही अर्थ में जीवन की सार्थकता है।

#### **प्र.4. प्रार्थना करने वाले होठों से कही अच्छे सहायता करने वाले हाथ है।**

उ.मानव सेवा ही माधव सेवा है। दीन-दुःखियों की सेवा ही भगवान की सेवा और आराधना होती है। ईश्वर ने हमें दूसरों की सहायता करने के लिए जन्म दिया है। हमें ईश्वर ने बनाया है। अतः उनकी संतान (मानव) की सेवा करना हम सबका कर्तव्य है। इसलिए भगवान का यश गानेवाले, मंत्र पढ़नेवाले होठों से गरीब, दीन-दुखियों की सेवा करने वाले हाथ ही अच्छे हैं। पवित्र है। धार्मिक स्थानों में प्रार्थना करने से बेहतर है कि हम समाज से बाहर निकलकर दुखियों की सेवा करें।

\*\*\*\*\*

## अपने स्कूल को एक उपहार (उपवाचक)

- ऋतु भूषण

### प्र.1. राजु को उसका पुराना स्कूल कैसा लगता था?

- उ. राजु को उसका पुराना स्कूल बहुत अच्छा लगता था। राजु की टांगे बहुत पलती और दुबल थीं। अतः वह ज्यादा देर तक खड़ा नहीं रह पाता था पर उसके पुराने स्कूल में कभी किसीने उसकी कमजोरी की ओर ध्यान नहीं दिया। वह एक मेधावी छात्र था। वह हमेशा कक्षा में प्रथम आता था। हर विषय में सबसे आगे रहता था। पुराने स्कूल में उसके बहुत सारे मित्र थे और सभी अध्यापक उसे बहुत पसंद करते थे। अपने पुराने स्कूल के प्रति राजु का विचार था कि यदि स्वर्ग में भी स्कूल हो तो, वे भी उसके पुराने स्कूल से ज्यादा अच्छे तो नहीं हो सकते।

### प्र.2. राजु के प्रति नये स्कूल के साथियों का व्यवहार कैसा था?

- उ. राजु के प्रति नये स्कूल के साथियों का व्यवहार ठीक नहीं था। वह नए स्कूल में प्रवेश करने लगा तो सभी लोग ने उसकी टांगों की ओर संकेत करके हँसते हुए उसका मजाक भी उड़ाया। जब पहला पीरियड शुरू हुआ तो अध्यापक ने उसे कक्षा में सब से पीछे बिठा दिया। जब राजु से उसका परिचय पूछा गया तो उसने बताया कि वह एक गाँव के स्कूल से आया है। इस पर छात्रों को हँसी आयी। हर दिन उसके लिए ऐसा ही रहा। उसका कोई मित्र भी नहीं बन पाया था। वह खेलने भी नहीं जाता था। नए स्कूल के साथी जान गए थे कि राजु एक गवार लड़का है और उसे अपने गाँव के स्कूल का बड़ा 'घमंड' है।

### प्र.3. राजु ने अपने स्कूल को किस तरह उपहार समर्पित किया?

उ. राजु ने अपनी स्थिति से निबटने के लिए बड़ी चतुराई से एक योजना बनाई।

कक्षा में अध्यापक कोई प्रश्न पूछे तो अपना हाथ उठाना बंद कर दिया। वार्षिक परीक्षामें अच्छे अंक पाने के लिए अधिक परिश्रम करने का निश्चय किया। वह साबित करना चाहता था कि गाँव का स्कूल कोई मूर्खों का स्वर्ग नहीं था। सब लड़कोंने सोचा कि राजु फेल होगा। राजु ने घर में खूब पढ़ाई की ओर वार्षिक परीक्षाओं में बहुत अच्छा लिखा। जब परीक्षा फल आया तब वह कक्षा में प्रथम आया था। प्रथम आने पर राजु बहुत खुश हुआ। अब उसे लगा कि उसने अपने पुराने स्कूल को सुंदर और समुचित उपहार समर्पित किया।